राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र प्रभात

जो लिखेगा, वही टिकेगा

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करें........
9511151254

@swatantraprabhatmedia | @swatantramedia | RNI.No. UPHIN/2019/79073 (epaper.swatantraprabhat.com) | @SwatantraPrabhatonline | news@swatantraprabhat.com

लखनऊ से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

लखनऊ, गुरुवार , 08 जनवरी 2026
वर्ष 07,अंक 99, पृष्ट 12,मूल्यः 03 रुपया
www.swatantraprabhat.com

गाजियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

ग्राम पंचायत गुरेरा में दबंगों ने बंजर भूमि और चक मार्ग पर किया कब्जा....03

शासन की मंशा के विरुद्ध संचालित के मौदहा कस्बा में अवैध आटो स्टैंड, स्थानीय प्रशासन बना मूक दर्शक...12

गिरफ्तार नहीं होंगी नेहा सिंह राठौर, PM मोदी से जुड़े पोस्ट मामले में सुप्रीम कोर्ट से मिली बड़ी राहत

● सुप्रीम कोर्ट नेलोक गायिका नेहा सिंह राठौर को पहलगाम आतंकी हमले पर सोशल मीडिया पोस्ट के सिलसिले में उनके खिलाफ दायर एक मामले में गिरफ्तारी से अंतरिम सुरक्षा प्रदान की.कोर्ट ने उन्हें जांच अधिकारी के सामने पेश होने और सहयोग करने का निर्देश दिया है

लोकप्रिय लोक गायिका नेहा सिंह राठौर को सुप्रीम कोर्ट से बड़ी राहत मिली है. कोर्ट ने बुधवार (7 जनवरी) को नेहा की गिरफ्तारी पर रोक लगा दी है. यह आदेश उस एफआईआर के संबंध में आया है, जिसमें उन पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और पहलगाम आतंकी हमले को लेकर विवादित पोस्ट करने का आरोप है.

न्यायमूर्ति जे.के. महेश्वरी और अतुल एस. चंदुकर की बेंच ने उत्तर प्रदेश सरकार और मामले की शिकायतकर्ता को नोटिस जारी किया गया है और कहा कि नेहा राठौर के खिलाफ कोई दंडात्मक कार्रवाई नहीं की जाएगी. इसके साथ ही कोर्ट ने राठौर को जांच अधिकारी के सामने पेश होने और जांच में सहयोग करने का निर्देश दिया.

जांच अधिकारी के सामने पेश होना जरूरी

कोर्ट ने कहा कि राठौर को 19 जनवरी को जांच अधिकारी (IO) के समक्ष उपस्थित होना अनिवार्य है, और गैर-हाजिरी को गंभीरता से देखा जाएगा. राठौर के वकील ने कोर्ट में बताया कि उनकी मुवक्किल 3 जनवरी को पहले ही जांच अधिकारी (IO) के सामने उपस्थित हो चुकी हैं, जबकि राज्य पक्ष ने सहयोग न करने का आरोप लगाया

सोशल मीडिया पर की थी पोस्ट

एफआईआर के अनुसार, 22 अप्रैल 2025 को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के बाद, जिसमें 26 पर्यटक मारे गए थे, नेहा सिंह राठौर ने अपने सोशल मीडिया पर एंटी-इंडिया पोस्ट प्रकाशित की. अभियोजन पक्ष का कहना है कि उस समय सरकार पाकिस्तान के खिलाफ कार्रवाई कर रही थी और राठौर की पोस्ट से राष्ट्रीय अखंडता पर विपरीत प्रभाव और धर्म/जाति आधारित अपराध भड़काने की कोशिश हुई.

हाई कोर्ट ने अग्रिम जमानत याचिका खारिज की

इससे पहले इलाहाबाद हाई कोर्ट ने नेहा राठौर की अग्रिम जमानत याचिका को खारिज कर दिया था. कोर्ट ने कहा था कि उनके सोशल मीडिया पोस्ट प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ थे और पीएम के नाम का अपमानजनक तरीके से उपयोग किया गया.

सुप्रीम कोर्ट ने क्या कहा

सुप्रीम कोर्ट ने यह भी स्पष्ट किया कि संविधान का अनुच्छेद 19 अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता देता है, लेकिन यह सार्वजनिक व्यवस्था, शील या नैतिकता के लिए उचित प्रतिबंधों के अधीन है. अब मामला सुप्रीम कोर्ट में लंबित है और राठौर की अंतरिम सुरक्षा आदेश के तहत गिरफ्तारी से बची हुई है, जबकि जांच अधिकारी के समक्ष उनकी उपस्थिति अनिवार्य रहेगी.

लखनऊ में दर्ज हुआ था केस

राठौर के खिलाफ प्राथमिकी 27 अप्रैल को लखनऊ के हजरतगंज पुलिस थाने में दर्ज की गई थी और जांच जारी है. प्राथमिकी में राठौर पर एक विशेष धार्मिक समुदाय को निशाना बनाने और देश की एकता को खतरे में डालने का आरोप लगाया गया था. उन्होंने अप्रैल में अभय प्रताप सिंह द्वारा दर्ज कराई गई प्राथमिकी को चुनौती दी. सिंह ने राठौर पर धार्मिक आधार पर एक समुदाय को दूसरे समुदाय के खिलाफ भड़काने का बार-बार प्रयास करने का आरोप लगाया. वहीं राठौर ने उन पर लगे आरोपों को गलत बताया था

जब सुप्रीम कोर्ट में सिब्बल ने कहा- मुझे कुत्ते नहीं काटते हैं, जज बोले- आप खुशकिस्मत हैं लेकिन...

सीनियर एडवोकेट कपिल सिब्बल ने आवारा कुत्तों के मामलों पर कोर्ट में कहा कि एक जिम्मेदार समाज की तरह प्रतिक्रिया देनी चाहिए. उन्होंने कुत्तों की आबादी नियंत्रित करने के लिए CSVR (कैप्चर, स्टेरिलाइज़, वैक्सीनेट, रिलीज़) मॉडल का समर्थन किया, जो यूपी जैसे राज्यों में सफल रहा है. सिब्बल ने कुत्तों को हटाने के बजाय उनके व्यवहार को समझने पर जोर दिया

जानवरों के अधिकारों से जुड़े मामले में याचिकाकर्ता की ओर से पेश हुए सीनियर एडवोकेट कपिल सिब्बल ने सुप्रीम कोर्ट कोर्ट में कहा, इस मामले से जुड़े मुद्दों पर प्रतिक्रिया एक जिम्मेदार समाज की तरह होनी चाहिए. हम यहां कुत्ते प्रेमी के तौर पर हैं. अगर एक बाघ आदमखोर है तो हम सभी बाघों को नहीं मार देते. हमें यह पक्का करना होगा कि स्टेरिलाइज़ेशन हो, आबादी कम होनी चाहिए. इसके लिए एक प्रोसेस है. इसे छ्र्स्ड्ढक्र मॉडल कहा जाता है जिसे पूरी दुनिया में माना गया है।

कपिल सिब्बल ने कहा, इसे कैप्चर, स्टेरिलाइज़, वैक्सीनेट, रिलीज़ कहा जाता है. इसने यूपी जैसे राज्यों में कुत्तों की आबादी को लगभग शून्य कर दिया है. अगर हमारे पास एक ही शेल्टर में ऐसे कुत्ते हैं जिन्हें रेबीज है और जिन्हें रेबीज नहीं है तो उन सभी को रेबीज हो जाएगा. मंदिरों जैसी जगहों पर जाने पर उन्हें कभी किसी कुत्ते ने नहीं काटा।

आप खुशकिस्मत हैं पर लोगों को काटा जा रहा है

इस पर कोर्ट ने कहा, आप खुशकिस्मत हैं. लोगों को काटा जा रहा है, बच्चों को काटा जा रहा है. इसके जवाब में सिब्बल ने कहा, हमें जानवरों के साथ रहना होगा. अगर हम उनकी जगह पर कब्ज़ा करेंगे तो वे काटेंगे. सिब्बल की दलीलों के दौरान कोर्ट ने कहा, बस एक ही चीज बाकी है कि कुत्तों को भी काउंसलिंग दी जाए, ताकि जब उन्हें वापस छोड़ा जाए तो वे काटें नहीं।

सिब्बल ने कहा कि वह समझ गए कि कोर्ट की टिप्पणी मज़ाक में थी. फिर कोर्ट ने कहा कि सड़कों पर जानवरों की मौजूदगी से दुर्घटनाएं हो रही हैं. जब वे सड़क पर दौड़ते हैं तो यह एक समस्या है. ऐसी सड़कें जहां गाड़ियां चलती हैं. यह सिर्फ़ काटने की बात नहीं है. जब सिब्बल ने कहा कि कुत्ते सड़कों पर नहीं हैं और वे कंपाउंड में हैं तो कोर्ट ने कहा, क्या आप गंभीर हैं? आपकी जानकारी पुरानी लग रही है. रोकथाम हमेशा इलाज से बेहतर होती है. सड़कों को कुत्तों से साफ़ और खाली करना होगा. वे शायद न काटें लेकिन फिर भी दुर्घटनाओं का कारण बनते हैं।

कुत्तों को उनकी जगह से हटाना समाधान नहीं

सिब्बल ने यह भी तर्क दिया कि कुत्तों को उनकी मौजूदा जगहों से हटाना समस्या का समाधान नहीं है. उन्होंने कहा, लोग कुत्तों को उसी जगह खाना खिलाते हैं जहां वे हैं. वे शेल्टर होम नहीं जाएंगे. हटाने से काम नहीं चलेगा. हालांकि, कोर्ट ने टिप्पणी की कि कई एनजीओ शेल्टर में जाकर खाना खिला सकते हैं. सिब्बल ने इस टिप्पणी पर तीखी प्रतिक्रिया दी. उन्होंने कहा, अगर लॉर्डशिप के पास पहले से ही समाधान हैं तो मुझे बहस करने की ज़रूरत नहीं है. कोर्ट ने जवाब दिया, हम आपको मजबूर नहीं कर रहे हैं. इसके बाद सिब्बल ने कहा कि वह सिर्फ़ साइंटिफिक मटेरियल रिकॉर्ड पर रख रहे हैं. अपनी दलीलें जारी रखते हुए सिब्बल ने कहा कि इंस्टीट्यूशनल इलाकों से कुत्तों को गैर-वैज्ञानिक तरीके से हटाने से ज़मीन पर और ज़्यादा समस्याएं पैदा होंगी।

यह मैं नहीं कह रहा हूं, यह एक प्लान है

उन्होंने कहा, कुत्ते बहुत ज़्यादा टेरिटोरियल होते हैं. टेरिटोरियल खाली जगह जल्द ही फिर से भर जाएगी. यह मैं नहीं कह रहा हूं, यह अनुभव पर आधारित एक प्लान है. मूल रूप से हमारे बच्चों और लोगों को सुरक्षित रखना है लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि इससे खतरा बढ़ जाएगा. सिब्बल ने यह भी कहा कि इंदौर जैसे इलाकों में कोर्ट के आदेशों के बाद कुत्तों के काटने की घटनाएं बढ़ गई हैं. उन्होंने कुत्तों को खाना खिलाने के आर्थिक बोझ पर भी ज़ोर दिया।

संक्षिप्त ख़बरें

थुलवासा में नहर पटरी पर संदिग्ध परिस्थितियों में युवक का शव मिलने से हड़कंप

महराजगंज/कोतवाली। क्षेत्र के थुलवांसा गांव स्थित नहर पटरी पर मंगलवार देर शाम उस समय हड़कंप मच गया, जब एक युवक का शव संदिग्ध परिस्थितियों में मिला। स्थानीय लोगों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को सीएचसी पहुंचाया जहां चिकित्सकों ने उसकी मौत की पुष्टि कर दी। घटना की जानकारी होते ही इलाके में सनसनी फैल गई। देर रात ग्राम प्रधान पहाड़पुर किशुन यादव व थुलवासा चौकी इंचार्ज राहुल मिश्रा ने शव की पहचान डेड़उवा मजरे पहाड़पुर निवासी जितेंद्र कुमार द्विवेदी 27 वर्ष पुत्र अयोध्या प्रसाद द्विवेदी के रूप में की है। परिजनों के मुताबिक मंगलवार दोपहर को घर से थुलवासा बाजार जाने को कहकर जितेन्द्र मोटरसाइकिल से घर से निकला था। देर शाम तक घर नही पहुंचा तो परिजनों ने खोजबीन शुरू कर दी थी। कोतवाल जगदीश यादव ने बताया कि मृतक के शरीर पर कहीं भी चोट के निशान नही पाए गए हैं। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद ही मौत के कारणों का पता चल सकेगा। रिपोर्ट के आधार पर कार्यवाही की जाएगी।

मारुति वैन से टकराकर नाले में पलटी पिकअप, बड़ा हादसा टला

गोपीगंज। कोतवाली क्षेत्र के राष्ट्रीय राजमार्ग पर पिलर नंबर-44, बाबा बड़े शिव मार्ग मोड़ के पास मंगलवार को बड़ा हादसा होते-होते टल गया। धान लादकर मंडी जा रही बोलेरो पिकअप अनियंत्रित होकर सड़क किनारे खड़ी मारुति वैन से टकराई और गहरे नाले में पलट गई। हादसे में पिकअप सवार चालक रघुनाथ यादव, सच्चिदानंद उपाध्याय और उनकी 8 वर्षीय पोती सुरक्षित बच निकले। टक्कर के बाद धान सड़क व नाले में बिखर गया। घटना की सूचना पुलिस को दे दी गई है।

बारा पॉवर प्लांट में मजदूर की मौत पर कंपनी प्रबंधन पर लापरवाही बरतने का आरोप

प्रयागराज। शंकरगढ़ थाना क्षेत्र स्थित पावर जनरेशन कंपनी लिमिटेड में एक मजदूर की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। इस घटना के बाद मृतक के परिजनों ने कंपनी प्रबंधन की कार्यप्रणाली और मजदूरों की सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल उठाए हैं।

मृतक की पहचान कपारी गांव निवासी (44वर्ष)अर्जुन पाठक पुत्र स्वर्गीय दूधनाथ पाठक के रूप में हुई है। अर्जुन पाठक पावर प्लांट में राजगीर के पद पर कार्यरत थे। परिजनों और सहकर्मियों के अनुसार, वह रोज की तरह ड्यूटी पर थे, जब काम के दौरान अचानक उनके सीने में तेज दर्द उठा,और वे मौके पर ही गिर पड़े। सहकर्मियों ने तत्काल कंपनी अधिकारियों को इसकी सूचना दी।

परिजनों का आरोप है कि अर्जुन पाठक की गंभीर हालत के बावजूद उन्हें समय रहते किसी नजदीकी अस्पताल में भर्ती नहीं कराया गया और न ही परिवार को तुरंत सूचित किया गया। परिजनों का कहना है कि यदि तत्काल प्राथमिक उपचार और उचित चिकित्सकीय व्यवस्था मिलती, तो शायद उनकी जान बचाई जा सकती थी। गंभीर स्थिति में मजदूर को सीधे प्रयागराज स्थित स्वरूप रानी नेहरू अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

अर्जुन पाठक अपने पीछे पत्नी रिंकी, दो बेटे और दो बेटियों का भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं। परिवार के सदस्यों ने आरोप लगाया है कि कंपनी प्रबंधन की लापरवाही और संवेदनहीनता के कारण उनके घर का एकमात्र कमाने वाला सदस्य चला गया। परिजनों ने मामले की निष्पक्ष जांच और दोषियों पर सख्त कार्रवाई की मांग की है।चौकी प्रभारी प्रभाकर सिंह ने बताया कि

घटना की सूचना कंपनी प्रबंधन द्वारा पुलिस को तुरंत नहीं दी गई थी। बाद में जानकारी मिली कि मजदूर को सीने में दर्द हुआ था,और उसे इलाज के लिए प्रयागराज ले जाया गया,जहां उसकी मौत हो गई। उन्होंने यह भी बताया कि पुलिस द्वारा आवश्यक विधिक कार्रवाई स्वरूप रानी नेहरू अस्पताल में की जा रही है।

गोवंशीय पशुओं की देखभाल में लापरवाही न बरते

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सिद्धार्थनगर। गोवंशीय पशुओं को ठंडक से बचाव के लिए चारों तरफ से पन्नी लगाएं तथा हर पशु को काऊकोट अवश्य पहनाएं।उक्त बातें वुधवार को जोगिया विकास क्षेत्र के ग्राम खेतवल मिश्र के गोआश्रय केंद्र पर पहुंचे बीडीओ रामानंद वर्मा ने कहा। उन्होंने कहा कि उच्चाधिकारियों के शिकायत को संज्ञान में लेते हुए मौके पर सचिव व पशुचिकित्साधिकारी साथ गोआश्रय केंद्र का औचक निरीक्षण किया गया।निरीक्षण में पशुओं को हरा चारा के साथ पौष्टिक आहार खिलाते तथा अलाव जलते पाया गया।सभी गोवंश पशु पूरी तरह से स्वस्थ पाए गये। उन्होंने ग्राम प्रधान व केरयटेकरों को निर्देश देते हुए कहा कि बर्फीली हवाओं के हाड़ कंपा देने वाले ठंडक से बचाव का हर संभव प्रयास करें, उन्होंने कहा कि लापरवाही मिलने पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। कहा

कि मौके पर केयर टेकर द्वारा पशुओं को हरा चारा के साथ पोष्टिक आहार खिलाते पाया गया।मौके पर पर्याप्त मात्रा में भूसा व पौष्टिक आहार दिखाई पड़ा। बीडीओ ने रजिस्टर की गहनता से जांच की। पशु चिकित्सा अधिकारी प्रदीप कुमार ने कहा कि पशुओं के स्वास्थ्य की नियमित जांच कर दवाएं दी जाती है। निरीक्षण के दौरान 70 गोवंश स्वस्थ पाए गये।इस दौरान सचिव मुस्तफा, प्रधान हरखू, केयरटेकर कन्हैया बंशराज, पल्टू, लालमोहर मौजूद रहें।

प्रभारी मंत्री ए.के. शर्मा का भदोही आगमन कल

कोर कमेटी व जिला समन्वय समिति की बैठक, विकसित भारत योजना पर प्रेस वार्ता

भदोही। जनपद प्रभारी मंत्री एवं नगर विकास/ऊर्जा मंत्री ए.के. शर्मा 9 जनवरी को जनपद भदोही के भ्रमण पर रहेंगे। जारी प्रोटोकॉल के अनुसार मंत्री का आगमन कलेक्ट्रेट भवन में होगा। दोपहर 12 बजे मंत्री की अध्यक्षता में कोर कमेटी की बैठक आयोजित की जाएगी। इसके बाद 12:45 बजे विकसित भारत-जी राम जी योजना (गारंटी फॉर रोजगार एंड आजीविका मिशन) को लेकर प्रेस कॉन्फ्रेंस होगी। 01:15 बजे मंत्री जिला समन्वय समिति की बैठक में शामिल होंगे। बैठक के उपरांत राजकीय अतिथि गृह, ज्ञानपुर में आगमन के बाद 14:30 से 16:00 बजे तक समय आरक्षित रहेगा। इसके पश्चात प्रभारी मंत्री अन्य जनपद के लिए प्रस्थान करेंगे।

लखनऊ के एरा मेडिकल कॉलेज पर बड़ा एक्शन, महिला के पेट में छोड़ा सर्जिकल औजार; 15 डॉक्टरों पर FIR

● लखनऊ में एरा मेडिकल कॉलेज के 15 डॉक्टरों के खिलाफ FIR दर्ज की गई है. आरोप है कि एक महिला के ऑपरेशन के दौरान डॉक्टरों ने उसके पेट में सर्जिकल औजार छोड़ दिया था. ढाई साल तक महिला दर्द से कराहती रही

राजधानी लखनऊ के प्रतिष्ठित एरा मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल (ठाकुरगंज क्षेत्र) में डॉक्टरों की गंभीर लापरवाही का सनसनीखेज मामला सामने आया है. एक महिला मरीज की सर्जरी के दौरान डॉक्टरों ने पेट में सर्जिकल औजार (मेडिकल इंस्ट्रुमेंट) छोड़ दिया, जिसके कारण ढाई साल तक महिला को असहनीय दर्द सहना पड़ा और संक्रमण फैल गया. कोर्ट के सख्त आदेश पर ठाकुरगंज पुलिस ने अस्पताल के 15 डॉक्टरों के खिलाफ धोखाधड़ी और जानलेवा लापरवाही के आरोप में मुकदमा दर्ज कर लिया है. पुलिस ने जांच शुरू कर दी है और आगे की कार्रवाई जारी है।

पेट में सर्जिकल औजार छोड़ दिया

पीड़िता रूप सिंह (एल्डिको सिटी निवासी) ने शिकायत में बताया कि फरवरी 2023 में पेट दर्द की समस्या के बाद वे एरा हॉस्पिटल में भर्ती हुई. सर्जरी के दौरान डॉक्टरों ने लापरवाही बरतते हुए उनके पेट में सर्जिकल औजार छोड़ दिया और टांके लगा दिए. इसके बाद महिला को लगातार दर्द होता रहा, लेकिन अस्पताल प्रशासन इसे नजरअंदाज कर पेनकिलर देकर इलाज चलाता रहा और लाखों रुपए वसूले।

अल्ट्रासाउंड देख दंग रह गई महिला

आरोप है कि अगस्त 2025 में दर्द असहनीय होने पर एरा हॉस्पिटल में अल्ट्रासाउंड कराया गया, जिसमें औजार साफ दिख रहा था, लेकिन डॉक्टरों ने इसे छिपाकर झूठी रिपोर्ट बनाई और एपेंडिसाइटिस बताकर दोबारा ऑपरेशन की सलाह दी. पीड़िता ने दूसरे अस्पताल में जांच कराई, जहां 20 अगस्त 2025 को सर्जरी कर औजार निकाला गया।

ठाकुरगंज थाने में 15 डॉक्टरों के खिलाफ FIR दर्ज

इस लापरवाही से महिला की हालत इतनी बिगड़ गई कि उसे आईसीयू में भर्ती करना पड़ा. मामला कोर्ट पहुंचा, जहां सबूतों के आधार पर अदालत ने ठाकुरगंज थाने को स्नढ्ढक्र दर्ज करने का आदेश दिया. पुलिस ने एरा मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल के 15 डॉक्टरों पर संबंधित धाराओं के तहत केस दर्ज कर लिया है. 13 डॉक्टरों और अस्पताल के 2 मालिकों का भी जिक्र है, लेकिन मुख्य आरोप 15 डॉक्टरों पर है।

तेज रफ्तार कार की टक्कर से 8 वर्षीय बालिका की मौत

सिद्धार्थनगर: जिले के गोल्हौरा थाना क्षेत्र के उसकी गांव निवासी वेद प्रकाश की आठ वर्षीय पुत्री अनुराधा की बुधवार को सड़क हादसे में दर्दनाक मौत हो गई। बताया जाता है कि अनुराधा बुधवार दिन में करीब 10 बजे अपने परिजनों के साथ एकडेगवा चौराहे पर गई थी। इसी दौरान इटवा की ओर से आ रही तेज रफ्तार व अनियंत्रित कार ने उसे जोरदार ठोकर मार दी।

हादसे में गंभीर रूप से घायल बच्ची को परिजन तत्काल बांसी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र ले गए, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मृतका अनुराधा उसकी प्राथमिक विद्यालय में कक्षा तीन की छात्रा थी।

सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस ने अज्ञात कार चालक के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। हादसे के बाद चालक वाहन सहित फरार बताया जा रहा है, जिसकी तलाश की जा रही है। इस मामले में थानाध्यक्ष रामदेव का कहना है कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है और विधिक कार्रवाई की जा रही है।

संक्षिप्त खबरें

रिश्वत लेते रंगे हाथों पकड़े गए यूपी ग्रामीण बैंक मैनेजर नवीन सिंह कुलदीप व कर्मचारी अनिल कुमार! CBI ने किया गिरफ्तार

बस्ती। बस्ती जिले मे सरकारी योजनाओं को लूटने वालों पर CBI की सख्त कार्रवाई! मंगलवार को केंद्रीय जांच ब्यूरो (CBI) ने बस्ती जिले में यूपी ग्रामीण बैंक की मखौड़ाधाम शाखा में रिश्वत लेते हुए बैंक मैनेजर नवीन सिंह कुलदीप और कर्मचारी अनिल कुमार को रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया। यह मामला मुख्यमंत्री उद्यमी योजना के तहत ऋण की दूसरी किस्त जारी करने के एवज में 15 हजार रुपये घूस मांगने का है।पीड़ित दुकानदार सचिन मौर्या निवासी पांवड़ गांव दुकान बेरता चौराहा ने CBI के SP से शिकायत की थी। सचिन ने व्यापार विस्तार के लिए बैंक से 5 लाख रुपये का ऋण लिया था। पहली किस्त के रूप में उन्हें 2 लाख 72 हजार रुपये प्राप्त हो चुके थे, लेकिन शेष राशि की दूसरी किस्त जारी करने के लिए मैनेजर नवीन सिंह कुलदीप ने उनसे 15 हजार रुपये की रिश्वत मांगी। मैनेजर ने कहा कि यह रकम कर्मचारी अनिल कुमार को देनी होगी। जब सचिन ने पैसे देने से इनकार किया तो उनकी किस्त अटका दी गई।

शिकायत पर CBI ने त्वरित कार्रवाई करते हुए ट्रैप लगाया। टीम ने बस्ती में बैंक शाखा पर छापा मारा और जैसे ही घूस की रकम का लेन-देन हुआ, दोनों आरोपियों को मौके से धर दबोचा। दोनों को गिरफ्तार कर आगे की जांच शुरू कर दी गई है।

बलरामपुर में डंपर की टक्कर से युवक की मौत:अनियंत्रित वाहन दो बार टकराया, महिला समेत दो घायल

बलरामपुर-जनपद के विकासखंड रेहरा बाजार में आज दिनांक 7 जनवरी दिन बुधवार को दिन में 1:30 बजे मनकापुर-उतरौला मार्ग पर एक डंपर ने दो अलग-अलग स्थानों पर टक्कर मार दी। इन हादसों में एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि एक महिला सहित दो अन्य लोग घायल हो गए। पहली टक्कर में बख्शरपुरवा गुमड़ी घाट निवासी रक्षाराम की जान चली गई। वह अपने मौसिया अमरनाथ (50) के साथ शादी देखने जा रहे थे और सुबह करीब 11 बजे घर से निकले थे। अमरनाथ को गंभीर चोटें आईं, जिसके बाद उन्हें रेहरा सीएचसी से प्राथमिक उपचार के बाद जिला बलरामपुर अस्पताल रेफर कर दिया गया।

डंपर ने दूसरी जगह एक रिक्शे को टक्कर मारी, जिसमें सवार शोभावती (35) घायल हो गई। शोभावती कुड़ासन में दवा लेने जा रही थीं। उन्हें भी चोटें आई हैं। सूचना मिलने पर पुलिस प्रशासन ने त्वरित कार्रवाई करते हुए डंपर और उसके चालक को दतौली घाट पर पकड़ लिया। मृतक रक्षाराम के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। थाना प्रभारी दुर्गीया सिंह चौहान ने बताया की पुलिस मामले की जांच कर रही है।

खेमपुर में मानक के विपरीत हो रहा सड़क निर्माण कार्य, ग्रामीणों ने किया जमकर प्रदर्शन

प्रदर्शनकारियों ने किया गुणवत्ता परक सड़क निर्माण कराये जाने की मांग

कोन / सोनभद्र - विकास खण्ड कोन अंतर्गत खेमपुर में मिली जानकारी के अनुसार पी डब्लू डी से लगभग 500 मीटर खेमपुर से चतरखड़िया मार्ग सड़क का निर्माण कार्य चल रहा है जिसमें जमकर मानक की अनदेखी की जा रही है। प्रदर्शनकारियों ने संबंधित के खिलाफ नारेबाजे करते हुए कहा कि बिना साफ सफाई कराये मानक के विपरीत निर्माण कार्य कराया जा रहा है जो जाँच का विषय है। स्थानीय लोगों की मांग किया है सड़क का निर्माण कार्य मानक के अनुरूप गुणवत्तापरक किया जाय जिससे सड़क क्षतिग्रस्त न हो और सरकारी धन की बर्बादी न हो। प्रदर्शन में मुख्य रूप से जिला पंचायत सदस्य आनंद सिंह, पूर्व जिला पंचायत सदस्य विमलेश यादव, शशि शेखर, राजू सिंह, अजय सिंह, विपिन सिंह समेत दर्जनों लोग शामिल रहे।

छेड़खानी मामले में एक सप्ताह तक पीड़िता को दौड़ने के बाद खबरों का संज्ञान लेकर हरैया पुलिस ने दर्ज किया मुकदमा

●सोशल मीडिया के खबरों का थानाध्यक्ष हरैया ने लिया संज्ञान छेड़खानी मामले में मुकदमा दर्ज कर जांच पड़ताल में जुटी हरैया छेड़खानी मामले में मुकदमा दर्ज कर पीड़िता का कराया गया मेडिकल - थानाध्यक्ष

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बस्ती। सोशल मीडिया पर वायरल खबरों का संज्ञान लेकर हरैया पुलिस ने छेड़खानी मामले की जांचकर आनन फानन में पीड़िता की तहरीर पर उचित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है और पीड़िता का मेडिकल भी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र हरैया से कराया है और हरैया पुलिस जांच पड़ताल में जुट गई। सूत्रों के अनुसार हरैया थाना क्षेत्र के अन्तर्गत ग्राम पंचायत पड़री मिश्र के राजस्व गांव मरहरी निवासी देवा पुत्र मुन्नीलाल के ऊपर गांव की एक लड़की ने छेड़खानी करने का आरोप लगाई थी कि गांव के देवा पुत्र मुन्नीलाल ने दिनांक - 14-12-2025 शाम को घर में अकेला पाकर जबरन मुझसे छेड़खानी करने लगा था और जब हमने छेड़खानी करने का विरोध किया था तो लड़के ने लात घूसे से मारा पीटा था जिसकी सूचना पीड़िता ने हरैया पुलिस को दिनांक - 15-12-2025 को दिया था। हरैया पुलिस ने कहा कि पहले छेड़खानी मामले की जांच होगी उसके बाद कार्यवाही होगा। एक सप्ताह बीतने के बाद पीड़िता ने सी ओ हरैया स्वर्णिमा सिंह को मामले को अवगत कराया गया था लेकिन सी ओ ने भी जांच कर कार्यवाही करने का आश्वासन दिया था फिर भी पीड़िता को न्याय नहीं मिली। पीड़िता मजबूर होकर जिलाधिकारी कृत्तिका ज्योत्सना से भी शिकायत की थी तब जिलाधिकारी ने सी ओ हरैया को छेड़खानी मामले को गंभीरता से लेते हुए विधिक कार्यवाही करने का निर्देश दिया था लेकिन 22 दिन बीतने के बाद भी कोई कार्यवाही नहीं हुई थी। आरोपी के खिलाफ कोई कार्रवाई न लेने से छेड़खानी करने वाले आरोपी देवा का मनोबल बढ़ रहा था और पीड़िता के जान का खतरा बना हुआ था। इस सम्बन्ध में थानाध्यक्ष हरैया ने बताया कि छेड़खानी मामले की जानकारी नहीं थी हल्का सिपाही द्वारा मामले को दबा दिया गया था सोशल मीडिया पर छेड़खानी की खबर वायरल होते ही मामले का संज्ञान लेकर पीड़िता की तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर लिया गया है और पीड़िता का मेडिकल भी कराया जा चुका है। मामले में नियमानुसार कार्रवाई की जा रही है।

महाराजा अग्रसेन पार्क के सौंदर्यीकरण की मांग उठायी

सजातीय बंधुओं ने नपाध्यक्ष को भेजा पत्र

ललितपुर। सुपर मार्केट स्थित अग्रसेन पार्क के सौंदर्यीकरण एवं टीनशैड निर्माण किये जाने की मांग को लेकर अग्रवाल समाज के लोगों ने एक पत्र नगर पालिका परिषद अध्यक्ष को भेजा है। पत्र में बताया कि नगर पालिका परिषद द्वारा सुपर मार्केट में अग्रसेन पार्क निर्माण कराया गया था, जिसमें अग्रवाल समाज के प्रवर्तक महाराज अग्रसेन जी महाराज की प्रतिमा स्थापित है। महाराजा अग्रसेन समाज के सभी वर्गों के लिए यह एक प्रेरणास्रोत है। बताया कि विगत कई वर्षों से पार्क में रंगाई-पुताई का कार्य भी नहीं कराया गया है। उक्त पार्क में रंगाई-पुताई, सौंदर्यीकरण एवं एक टीनशेड की अत्यन्त आवश्यकता है। इस पर उन्होंने इन कार्यों को कराये जाने की मांग उठायी है। पत्र देते समय संरक्षक कैलाश अग्रवाल, राजीव अग्रवाल एड., संजय अग्रवाल के अलावा रमन अग्रवाल, राजेन्द्र कुमार अग्रवाल, पुष्पित अग्रवाल, अर्पित अग्रवाल, जितेन्द्र अग्रवाल आदि के हस्ताक्षर अंकित बताये गये हैं।

बस्ती के ऊंजी पिपरी गांव में विवाहिता का शव फंदे से लटका मिला, पोस्टमार्टम रिपोर्ट का इंतजार

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बस्ती। जिले के दुबौलिया थाना क्षेत्र अंतर्गत ऊंजी पिपरी गांव में संदिग्ध परिस्थितियों में एक विवाहिता का शव कमरे के अंदर फंदे से लटका मिला। परिजनों ने उसे नीचे उतारकर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कलवारी पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। इसके बाद पुलिस ने पंचायतनामा भरकर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के वास्तविक कारणों का पता चल सकेगा। मृतका की पहचान दीक्षा सिंह (25) पत्नी गौरव सिंह के रूप में हुई है। पति के अनुसार सोमवार की शाम भोजन करने के बाद वह घर से कुछ दूरी पर स्थित मुर्गी फार्म पर सोने चले गए थे। घर पर उस समय मां, बहन और पत्नी मौजूद थीं। रात करीब साढ़े दस बजे छोटी बहन रिया ने फोन कर बताया कि दीक्षा का फोन बज रहा है लेकिन वह उठा नहीं रही है। इस पर वह तुरंत घर पहुंचे और दरवाजा खोलने का प्रयास किया। दरवाजा अंदर से बंद था, जिसके बाद उन्होंने कमरे में लगे एसी की खिड़की से झांककर देखा तो दीक्षा पंखे से लटकी हुई दिखाई दी। इसके बाद दरवाजा तोड़कर अंदर गए और उसे नीचे उतारा।

सूचना मिलने पर यूपी 112 पीआरवी और दुबौलिया पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया। मृतका के भाई सागर सिंह, निवासी बरई पारा थाना बखिरा जनपद संतकबीरनगर को भी घटना की जानकारी दी गई। परिजनों के अनुसार दीक्षा का विवाह वर्ष 2022 में हुआ था। उसके दो बच्चे हुए थे, लेकिन दोनों की कुछ दिनों बाद मृत्यु हो गई थी। मामले में थानाध्यक्ष दुबौलिया सुनील गौड़ का कहना है कि फिलहाल तहरीर नहीं मिली है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट और आगे की जांच के आधार पर ही आगे की कार्रवाई की जाएगी।

सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से विधायक सुरेश पासी ने की शिष्टाचार भेंट

●विकास कार्यो को लेकर की चर्चा, विधायक सुरेश पासी के नेतृत्व में विधानसभा जगदीशपुर विकास के पथ पर निरंतर अग्रसर

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

जगदीशपुर अमेठी। प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से विधानसभा क्षेत्र 184 जगदीशपुर के विधायक सुरेश पासी ने लखनऊ में शिष्टाचार भेंट की। इस अवसर पर क्षेत्र के सर्वांगीण विकास, आधारभूत सुविधाओं के विस्तार, जनकल्याणकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन तथा स्थानीय आवश्यकताओं से जुड़े कई महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तृत और सकारात्मक चर्चा हुई।भेंट के दौरान विधायक सुरेश पासी ने मुख्यमंत्री को जगदीशपुर विधानसभा क्षेत्र में चल रहे विकास कार्यों की प्रगति से अवगत कराया तथा आगामी योजनाओं की रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने सड़क, बिजली, पेयजल, स्वास्थ्य, शिक्षा, सिंचाई, ग्रामीण आवास, युवाओं के लिए रोजगार सृजन और किसानों के हित से जुड़े मुद्दों को प्रमुखता से रखा। इसके साथ ही नगर एवं ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे के सुदृढ़ीकरण की आवश्यकता पर भी चर्चा की गई। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने क्षेत्रीय विकास से जुड़े प्रस्तावों को गंभीरता से सुना और राज्य सरकार की जनहितकारी नीतियों के माध्यम से जगदीशपुर के विकास को नई गति देने का भरोसा दिलाया। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार का लक्ष्य अंतिम पंक्ति के व्यक्ति तक योजनाओं का लाभ पहुंचाना है और जनप्रतिनिधियों के सहयोग से यह लक्ष्य और प्रभावी रूप से साकार हो रहा है।

विधायक सुरेश पासी ने मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनके मार्गदर्शन और सहयोग से जगदीशपुर विधानसभा क्षेत्र विकास के पथ पर निरंतर अग्रसर है। उन्होंने विश्वास जताया कि आने वाले समय में क्षेत्र में? और? भी तेज़ी से विकास कार्य पूरे होंगे, जिससे आमजन को बेहतर सुविधाएं मिलेंगी और जीवन स्तर में सुधार होगा।इस शिष्टाचार भेंट को जगदीशपुर के विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। क्षेत्रवासियों में इस मुलाकात को लेकर उत्साह है और उन्हें उम्मीद है कि मुख्यमंत्री के नेतृत्व एवं विधायक सुरेश पासी के सतत प्रयासों से जगदीशपुर नई ऊंचाइयों को छुएगा। बताते चलें

योगी सरकार में विकास, जनहित और जीरो टॉलरेंस की मिसाल बनता नजर आ रहा है उत्तर प्रदेश,उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में प्रदेश सरकार ने विकास, जनहित और जीरो टॉलरेंस की नीति को धरातल पर उतारते हुए सुशासन की एक नई पहचान स्थापित की है। बीते वर्षों में योगी सरकार ने स्पष्ट कर दिया है कि कानून व्यवस्था, भ्रष्टाचार और अपराध के प्रति कोई समझौता नहीं किया जाएगा, वहीं आम जनता के हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाएगी।कानून व्यवस्था के मोर्चे पर योगी सरकार ने ऐतिहासिक कदम उठाए हैं। अपराधियों और माफियाओं के खिलाफ सख्त कार्रवाई से प्रदेश में भयमुक्त वातावरण बना है। जीरो टॉलरेंस नीति के तहत अपराध पर त्वरित कार्रवाई, अवैध कब्जों पर बुलडोजर की कार्यवाही और पुलिस-प्रशासन की जवाबदेही ने जनता का भरोसा मजबूत किया है।विकास के क्षेत्र में भी योगी सरकार ने नए आयाम स्थापित किए हैं। एक्सप्रेस-वे, हाईवे, पुल-पुलिया, एयरपोर्ट, मेडिकल कॉलेज और औद्योगिक कॉरिडोर जैसे बड़े प्रोजेक्ट्स ने उत्तर प्रदेश को प्रगति के पथ पर अग्रसर किया है। गांवों से लेकर शहरों तक सड़क, बिजली, पानी, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं का व्यापक विस्तार हुआ है।जनहितकारी योजनाओं के माध्यम से गरीब, किसान, युवा और महिलाओं को सीधा लाभ मिला है। प्रधानमंत्री आवास योजना, उज्ज्वला योजना, आयुष्मान भारत, मुफ्त राशन वितरण और छात्रवृत्ति योजनाओं ने समाज के अंतिम व्यक्ति तक राहत पहुंचाई है।योगी सरकार की कार्यशैली ने यह साबित किया है कि सुशासन, सुरक्षा और विकास साथ-साथ चल सकते हैं। आज उत्तर प्रदेश निवेश, रोजगार और कानून व्यवस्था के मामले में देश के अग्रणी राज्यों में शामिल हो रहा है, जो योगी सरकार की दूरदर्शी सोच और मजबूत नेतृत्व का परिणाम है।

नहर की सफाई के विवाद में सरयू नहर खंड के एसडीओ ने तथ्यों सहित आरोपों को बताया भ्रामक

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हरदी, बस्ती। जनपद बस्ती में सरयू नहर परियोजना के अंतर्गत बभनान रजवाहा नहर की सफाई को लेकर सोशल मीडिया और स्थानीय स्तर पर चल रहा विवाद थमने का नाम नहीं ले रहा है। कुछ रिपोर्ट्स और सोशल मीडिया पोस्ट में आरोप लगाए गए हैं कि नहर की सफाई के नाम पर बजट आवंटित किया गया, लेकिन बिना सफाई कराए ही पानी छोड़ दिया गया और बजट का दुरुपयोग हुआ। इन रिपोर्ट्स में मुख्य नहर के घास-फूस और सिल्ट से भरे फोटो भी साझा किए गए हैं। इस मामले ने तब तूल पकड़ा जब संबंधित खबर प्रकाशित होने के बाद एक स्थानीय पत्रकार और सरयू खंड के एसडीओ के बीच तीखी बहस हुई। दोनों पक्षों ने कप्तानगंज थाने में एक-दूसरे के खिलाफ शिकायत की। पत्रकार की शिकायत पर एसडीओ और एक अन्य व्यक्ति के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया, जबकि एसडीओ की शिकायत पर अभी कार्रवाई लंबित बताई जा रही है। सरयू नहर खंड के एसडीओ शिव गोपाल शुक्ला ने सभी आरोपों को सिरे से खारिज करते हुए अपना पक्ष रखा है। उन्होंने कहा कि विभाग ने बभनान रजवाहा नहर से निकलने वाली चार छोटी माइनरों (उप-नहरों) की सफाई के लिए टेंडर जारी किया था और कार्य भी पूरा कराया गया है। एसडीओ ने विस्तार से बताया की एकटेकवा माइनर, किमी 0.000 से 4.600 तक सिल्ट सफाई एवं स्कैपिंग का कार्य पूर्ण हो गया है। वहीं चेतरा माइनर का भी किमी 0.000 से 8.000 तक कार्य कराया गया, जिसमें 7.700 किमी तक सफाई कार्य पूरा कर लिया गया है। दूसरी तरफ परसपुर माइनर का भी किमी 0.000 से 4.000 तक कार्य पूर्ण रूप से संपन्न हो गया है। और गनेशपुर माइनर किमी 0.000 से 6.425 तक टेंडर जारी, जिसमें मूल 7.5 किमी में से 6.4 किमी का कार्य पूरा हो गया है। एसडीओ ने स्पष्ट किया कि ये कार्य पारदर्शी तरीके से कराए गए हैं और इससे क्षेत्र के किसानों को सिंचाई सुविधा में लाभ होगा। उन्होंने जोर देकर कहा कि सोशल मीडिया पर वायरल फोटो मुख्य बभनान रजवाहा नहर के हैं, जिसकी सफाई के लिए विभाग ने कोई टेंडर या बजट आवंटन ही नहीं किया है। इसलिए, मुख्य नहर में घास न होना स्वाभाविक है। शुक्ला ने इन खबरों को भ्रामक करार देते हुए कहा कि इससे विभाग की छवि खराब करने की कोशिश की जा रही है। उन्होंने कहा कि चारों माइनरों की सफाई पूरी होने से अब खेतों तक भरपूर पानी पहुंच सकेगा। यह मामला सरयू नहर परियोजना के अंतर्गत आता है, जो क्षेत्र के हजारों किसानों की सिंचाई आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए महत्वपूर्ण है। विभागीय सूत्रों के अनुसार, सफाई कार्य अधीक्षण अभियंता मनोज साहू और अधिशासी अभियंता सतीश कुमार के निर्देशन में पूरा किया गया है।

कंचनगढ़ बाबा स्थान पर आस्था का महासंगम, विशाल भंडारे का हुआ आयोजन

●जिला उपाध्यक्ष सहित हजारों श्रद्धालुओं ने ग्रहण किया महाप्रसाद भक्ति और सेवा का दिखा अनुपम दृश्य

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

शुकुल बाज़ार अमेठी। विकासखंड शुकुल बाज़ार अंतर्गत ग्राम सभा इन्दरिया स्थित प्रसिद्ध कंचनगढ़ बाबा स्थान पर श्रद्धा और आस्था के वातावरण में विशाल भंडारे का भव्य आयोजन किया गया। इस धार्मिक आयोजन में दूर-दराज़ से पहुंचे हजारों श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण कर बाबा के प्रति अपनी आस्था प्रकट की।कार्यक्रम में भाजपा जिला उपाध्यक्ष गिरीश चंद्र शुक्ला विशेष रूप से उपस्थित रहे। उन्होंने कंचनगढ़ बाबा के चरणों में शीश नवाया और क्षेत्र की सुख-समृद्धि की कामना की। उन्होंने कहा कि ऐसे धार्मिक आयोजन समाज में आपसी भाईचारे, सेवा और सद्भाव की भावना को मजबूत करते हैं।

आयोजकों ने बताया कि भक्तगणों द्वारा प्रत्येक वर्ष परंपरागत रूप से विशाल भंडारे का आयोजन किया जाता है, जिसमें सभी वर्गों के लोग बिना किसी भेदभाव के शामिल होते हैं। भंडारे में अनुशासित व्यवस्था, स्वच्छता और सेवा भाव ने आयोजन को और भी सराहनीय बना दिया।इस अवसर पर पत्रकार सुशील कुमार मिश्रा, जिला सहसंयोजक मीडिया विभाग भाजपा अमेठी, पत्रकार विकास शुक्ला, पत्रकार दिनेश तिवारी, पत्रकार दीपक सहित बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक, सामाजिक कार्यकर्ता और क्षेत्रवासी उपस्थित रहे। सभी ने सेवा कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।भंडारे के दौरान पूरे परिसर में 'बाबा कंचनगढ़ की जय' के जयकारों से वातावरण भक्तिमय बना रहा। श्रद्धालुओं ने इस सफल आयोजन के लिए आयोजकों की सराहना की और इसे सामाजिक एकता व धार्मिक समरसता का प्रतीक बताया। आयोजन शांतिपूर्ण एवं भव्य रूप से संपन्न हुआ, जिससे क्षेत्र में सकारात्मक संदेश दिया।

पुलिया चौड़ीकरण कार्य का विधायक सुरेश पासी ने किया भूमि पूजन

●विधि विधान पूर्वक मंत्रोपचार के साथ हुआ भूमि पूजन,सुरक्षित व सुगम आवागमन की दिशा में बड़ा कदम

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

शुकुल बाज़ार अमेठी। क्षेत्र की जनता की सुविधा, सुरक्षित आवागमन और यातायात सुगमता को ध्यान में रखते हुए बाज़ार शुकुल पाण्डेयगंज चौराहा से पाली रोड स्थित ग्राम पंचायत बूबूपुर में भूतनाथ स्टेडियम के समीप प्रस्तावित पुलिया चौड़ीकरण कार्य का विधायक सुरेश पासी ने विधि-विधान पूर्वक भूमि पूजन कर शुभारंभ किया।इस अवसर पर विधायक सुरेश पासी ने कहा कि यह पुलिया लंबे समय से क्षेत्रवासियों की एक प्रमुख आवश्यकता रही है। चौड़ीकरण कार्य पूर्ण होने के बाद स्थानीय नागरिकों, व्यापारियों, विद्यार्थियों तथा किसानों को आवागमन में बड़ी राहत मिलेगी। उन्होंने कहा कि यह परियोजना न केवल यातायात को सुचारु बनाएगी, बल्कि क्षेत्र की आर्थिक और सामाजिक गतिविधियों को भी गति प्रदान करेगी।विधायक ने अपने संबोधन में कहा, 'जनहित और विकास के संकल्प के साथ मैं निरंतर क्षेत्र की सेवा में समर्पित हूँ। सड़क, पुल-पुलिया और आधारभूत संरचनाओं का सुदृढ़ीकरण हमारी प्राथमिकता है, ताकि आमजन को सुरक्षित और सुगम यात्रा का लाभ मिल सके।' उन्होंने संबंधित विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया कि निर्माण कार्य गुणवत्ता और समयबद्धता के साथ पूर्ण किया जाए, ताकि जनता को किसी प्रकार की असुविधा न हो। साथ ही उन्होंने भरोसा दिलाया कि क्षेत्र के विकास से जुड़ी प्रत्येक समस्या का समाधान चरणबद्ध ढंग से किया जाएगा।भूमि पूजन कार्यक्रम में स्थानीय जनप्रतिनिधि, ग्राम पंचायत के पदाधिकारी, सामाजिक कार्यकर्ता एवं बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान लोगों ने विधायक का स्वागत करते हुए इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए आभार जताया और उम्मीद व्यक्त की कि आने वाले समय में क्षेत्र में और भी विकास कार्य होंगे।

पुलिया चौड़ीकरण का यह कार्य क्षेत्रीय विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण और आवश्यक कदम माना जा रहा है, जिससे बूबूपुर सहित आसपास के गांवों को सीधा लाभ मिलेगा और क्षेत्र का यातायात तंत्र और अधिक सुदृढ़ होगा।

बलरामपुर में इटवा रजवाहा नहर कटी, फसलें जलमग्न

●सैकड़ों बीघा गेहूं, सरसों, मटर की फसलें बर्बाद, किसानों में आक्रोश।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बलरामपुर- बलरामपुर के रेहराबाजार विकास क्षेत्र अंतर्गत ग्राम पंचायत विशुनपुर खरहना के मजरा हनुमान पुरवा में इटवा रजवाहा नहर कटने से किसानों की सैकड़ों बीघा खड़ी फसल जलमग्न हो गई। इस अचानक हुई घटना से क्षेत्र के किसानों में भारी आक्रोश व्याप्त है। खंड-दो गोण्डा की 55 किलोमीटर लंबी इटवा रजवाहा नहर के कटने से गेहूं, सरसों और मटर की फसलें पूरी तरह पानी में डूब गई। इससे किसानों को बड़े आर्थिक नुकसान की आशंका जताई जा रही है। स्थानीय किसानों रंगीलाल पाल,हरिशंकर वर्मा और वीरेंद्र कुमार ने सिंचाई विभाग पर गंभीर आरोप लगाए हैं।उन्होंने कहा कि बिना सिल्ट सफाई कराए ही नहर में पानी छोड़ दिया गया,जिसकी लापरवाही के कारण नहर कमजोर स्थान से कट गई और उनकी मेहनत से उगाई गई फसल बर्बाद हो गयी ।किसानों का कहना है कि एक तरफ खाद-बीज की महंगाई ने उनकी कमर तोड़ रखी है, वहीं दूसरी तरफ विभागीय उदासीनता ने बची-खुची पूंजी भी डुबो दी है।

किसान प्रदीप कुमार ने बताया कि उन्होंने गेहूं की बुवाई के लिए खेत की सिंचाई कर खाद डाली थी, लेकिन रात में नहर कटने से खाद बह गया और उनकी सारी उम्मीदें खत्म हो गईं। प्रमोद कुमार, लल्लन वर्मा, राधेश्याम, राम तेज वर्मा, राम निहाल, बिंदेश्वरी प्रसाद, दिनेश कुमार, उमेश कुमार, गणेश और प्रवेश कुमार सहित कई किसानों ने कहा कि विभाग की लापरवाही के चलते गेहूं की फसल पूरी तरह नष्ट हो गई है,जिससे उनके परिवारों के सामने भुखमरी का संकट खड़ा हो गया है। किसानों ने यह भी बताया कि यह पहली बार नहीं है। दो वर्ष पूर्व भी नहर कटने से गेहूं और सरसों की फसलें नष्ट हुई थीं,लेकिन आज तक उन्हें कोई मुआवजा नहीं मिला।विशुनपुर खरहना, नथईपुर कुंवर, मुबारपुर, विसम्भरपुर, पतकपुर परसिया, मानिगढ़ा, देवरिया इनायत और सलेमपुर सहित आसपास के गांवों में भी दहशत का माहौल है, क्योंकि यहां के किसान भी पहले इसी तरह का नुकसान झेल चुके हैं।पीड़ित किसानों ने जिला प्रशासन और सिंचाई विभाग के उच्चाधिकारियों से मांग की है कि तत्काल मौके पर पहुंचकर नुकसान का आकलन कराया जाए और प्रभावित किसानों को उचित मुआवजा दिया जाए।किसानों ने चेतावनी दी है कि यदि शीघ्र समाधान नहीं हुआ तो वे आंदोलन करने के लिए मजबूर होंगे। सहायक अभियंता ई.सूर्य प्रकाश ने बताया कि नहर को ठीक कराने के लिए लेबर भेज दी गई है।उन्होंने स्वीकार किया कि नहर की सफाई पूरी होने से पहले ही पानी आ जाने के कारण यह समस्या उत्पन्न हुई।

बलरामपुर में भाकियू भानू का प्रदर्शन, ठेकेदारों की मनमानी: इंफ्रामेट्री बोर्ड न लगाने पर आंदोलन की चेतावनी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बलरामपुर- बलरामपुर के पचपेड़वा नगर में निर्माण कार्यों में अनियमितताओं को लेकर भारतीय किसान यूनियन (भानू) ने प्रदर्शन किया। संगठन के तहसील उपाध्यक्ष आलम खान के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने नगर पंचायत पचपेड़वा के अधिशासी अधिकारी अवनीश सिंह को ज्ञापन सौंपा।ज्ञापन में मुख्य रूप से मांग की गई कि नगर में होने वाले प्रत्येक निर्माण कार्य स्थल पर इंफ्रामेट्री बोर्ड अनिवार्य रूप से लगाया जाए। इससे कार्य की लागत, अवधि और संबंधित ठेकेदार की जानकारी सार्वजनिक हो सकेगी।तहसील उपाध्यक्ष आलम खान ने आरोप लगाया कि ठेकेदार जानबूझकर इंफ्रामेट्री बोर्ड नहीं लगाते, जिससे मानक विहीन कार्य कर सरकारी धन का दुरुपयोग किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि इसका परिणाम यह है कि नई सड़कें छह माह में ही खराब हो जाती हैं, जिससे आम जनता को परेशानी होती है।

आलम खान ने कहा कि इस तरह की अनियमितताओं से सरकार की छवि खराब होती है, जिसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। नगर संरक्षक रोहित कुमार गुप्ता ने चेतावनी दी कि यदि भविष्य में निर्माण कार्यों में इंफ्रामेट्री बोर्ड अनिवार्य नहीं किया गया, तो भारतीय किसान यूनियन भानू धरना-प्रदर्शन और आंदोलन करने को मजबूर होगी। अधिशासी अधिकारी अवनीश सिंह ने कार्यकर्ताओं को आश्वासन दिया कि उनकी मांग उचित है और इस पर जल्द ही आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

रास्ते में रोककर मारपीट कर धमकाने का आरोप

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ललितपुर। पुलिस चौकी नेहरू नगर अंतर्गत मोहल्ला जुगपुरा में रहने वाले प्रानसिंह पुत्र पजन अहिरवार ने पुलिस को शिकायती पत्र दिया है। बताया कि बीती 6 जनवरी को शाम करीब 7 बजे वह काम से लौट रहा था। तभी रास्ते में पड़ोस के सिब्बू पुत्र पुरुषोत्तम, संतराम पुत्र रामचरण, पुरुषोत्तम पुत्र लम्पू व अन्य लोगों ने उसे जबरन रोक लिया और गालियां देते हुये मारपीट कर दी। आरोप है कि उक्त लोगों ने उस पर कुल्हाड़ी से हमला किया, जिससे वह घायल हो गया। बताया कि इसके पहले सुबह जब उसकी पत्नी रेखा काम पर जा रही थी तो सिब्बू ने उसकी पत्नी से अभद्रता की और मारपीट कर दी थी। पुलिस ने पीड़ित की तहरीर पर बीएनएस की धारा 352, 115 (2), 351 (3) के तहत एफआईआर दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी।

संक्षिप्त खबरें

भावना संस्था द्वारा कम्बल वितरण आयोजन संपन्न

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में आज दिनांक 7 जनवरी 2026 को भारतीय वरिष्ठ नागरिक समिति भावना के ग्रामांचल निर्धन जन सेवा प्रकोष्ठ द्वारा गायत्री शक्तिपीठ, रामपुर-देवराई, बी0के0टी0, लखनऊ परिसर में गरीबों को ऊनी कम्बल प्रदान करने का कार्यक्रम आयोजित हुआ। भावना द्वारा 100 ग्रामीण सुपात्र लाभार्थियों को ऊनी कम्बल वितरित किए गए। कम्बल वितरण के पश्चात लाभार्थियों एवं सभी उपस्थित जन को गायत्री परिवार की व्यवस्था तंत्र द्वारा माता जी का प्रसाद अमृताशन भोज उपलब्ध कराया गया। इस अवसर पर भावना के प्रमुख सचिव एस0के0 वर्मा, महासचिव जगमोहन लाल जायसवाल, प्रकोष्ठ संयोजक अमर नाथ धवन, आर0डी0 स्वर्णकार, ए0पी0 सिंह, अनिल खन्ना, डॉ0 शुक्ला, आई0के0 भारद्वाज, एम0एल0 अग्रवाल, भारत भूषण गोयल, अखिल कुमार गुप्ता, जायसवाल, नीना अग्रवाल, अग्रवाल सहित कई अन्य पदाधिकारी गण तथा गायत्री परिसर व्यवस्था की ओर से पुनीत खरे, एस0आर0 सिंह, पवन मिश्र, अर्जुन सिंह, नरेंद्र सिंह आदि उपस्थित रहे।

अज्ञात वाहन की चपेट में आकर भाजपा के मंडल उपाध्यक्ष की दर्दनाक मौत

बिसवां सीतापुर बिसवां देहात अज्ञात वाहन की चपेट में आकर भाजपा के मंडल उपाध्यक्ष की दर्दनाक मौत हो गई। पुलिस ने शव पीएम के लिए जिला मुख्यालय भेज दिया है। कोतवाली बिसवां इलाके के अमझला नहर के पास सड़क दुर्घटना में अज्ञात वाहन की चपेट में आकर एक युवक की मौत हो गई। बताया जाता है कि युवक बिसवां से अपने घर जा रहा था। इसी दौरान सरायं-सकरापुर मार्ग पर अज्ञात परिस्थितियों में सड़क हादसा हो गया, जिसमें उसकी मौके पर ही मौत हो गई। मृतक की पहचान भाजपा मंडल उपाध्यक्ष मानपुर अजीत शुक्ला, निवासी भुइलाकलां के रूप में हुई है। परिजनों के अनुसार अजीत किसी निजी कार्य से बिसवां आए हुए थे। और देर शाम घर लौटते समय यह हादसा हुआ। परिजनों का रो रोकर बुरा हाल है। मृतक के पत्नी सहित छोटे छोटे दो बच्चे हैं। सूचना पर पहुंची कोतवाली पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस का कहना है कि दुर्घटना किन परिस्थितियों में हुई, इसकी जांच-पड़ताल की जा रही है।

पत्रकार ने अपनी माता की पुण्यतिथि पर मरीजों में वितरित किया पूड़ी सब्जी व फल

डलमऊ रायबरेली पत्रकार बृजेंद्र कुमार ने बुधवार को अपनी माता संपत्ति देवी पत्नी हरिशंकर की 19वीं पुण्यतिथि के अवसर पर परिवारिक जनों के साथ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र डलमऊ पहुंचकर वहां पर भर्ती मरीजों एवं तीमारदारों को पूड़ी सब्जी,बिस्किट,फल आदि वितरित किया। पत्रकार बृजेंद्र कुमार एवं उनके बड़े भाई सुशील कुमार ने बताया कि जरूरतमंदों गरीबों एवं मरीजों की सेवा करना ही सबसे बड़ी सेवा है। अवसर बनाकर मजलूमों जरूरतमंदों की सेवा करना ही अपने पूर्वजों की सच्ची श्रद्धांजलि होती है।माता की प्रेरणा से ही वह पिछले 18 वर्षो से पुण्यतिथि को अवसर बनाकर गरीबों,मरीजों एवं जरूरतमंदों के चेहरे पर मुस्कान लाने का एक छोटा सा प्रयास करते हैं इससे हम सभी को परम सुख की प्राप्ति होती है। इस अवसर पर सुशील कुमार, सुधीर कुमार, अरविंद कुमार, गुड्डू जायसवाल, दीपक कुमार, मनोज सोनकर एवं पारिवारिजन मौजूद रहे।

लोकप्रिय सांसद राहुल गांधी द्वारा भेजे गए कंबल जरूरतमंद लोगों को कांग्रेसियों ने किया वितरित

महराजगंज रायबरेली। रायबरेली के लोकप्रिय सांसद राहुल गांधी द्वारा क्षेत्र के जरूरतमंद लोगों के लिए भेजे गए कंबलों का वितरण बुधवार को ब्लॉक कांग्रेस कार्यालय महराजगंज में किया गया।कार्यक्रम का आयोजन ब्लॉक अध्यक्ष सच्चिदानंद त्रिपाठी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। वरिष्ठ कांग्रेसी नेताओं की उपस्थिति में कंबल वितरण सम्पन्न हुआ। इस दौरान कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय सचिव सुशील पासी, कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष मो. इलियास और पीसीसी सदस्य प्रदीप चौधरी ने क्षेत्र के आए निराश्रितों को कम्बल वितरित किए। कांग्रेसियों ने राहुल गांधी के इस सेवा भाव की सराहना करते हुए कहा कि जननायक सदैव गरीबों और वंचितों के हितों के लिए तत्पर रहते हैं। कड़ाके की इस ठंड में कंबलों का वितरण एक सराहनीय मानवीय प्रयास है। इस अवसर पर वरिष्ठ कांग्रेसी नेता कृपाशंकर शर्मा, पीसीसी सदस्य, अंकुर जायसवाल, नगर कांग्रेस अध्यक्ष, रामशरण शुक्ल एवं भगवान दीन फौजी, रविचंद्र सिंह, हौसला तिवारी (मंडल अध्यक्ष), गयाप्रसाद चौरसिया (मंडल अध्यक्ष) समेत समस्त न्याय पंचायत अध्यक्ष व ग्राम सभा अध्यक्ष और ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारी व कांग्रेस कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

ग्राम पंचायत गुरेरा में दबंगों ने बंजर भूमि और चक मार्ग पर किया कब्जा

● ग्रामीणों ने उपजिलाधिकारी से की कार्रवाई की मांग

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बिसवां (सीतापुर)। ग्राम पंचायत गुरेरा में ग्राम प्रधान और ग्रामीणों ने जमाल खां आदि के द्वारा बंजर भूमि और चक मार्ग पर अवैध कब्जा किए जाने के खिलाफ उपजिलाधिकारी से त्वरित कार्रवाई की मांग की है। ग्रामीणों ने गाटा संख्या 1163 (चकमार्ग) और 1164(बी) बंजर भूमि को लेकर प्रार्थना पत्र सौंपा है। ग्रामीणों के अनुसार, जमाल खां ने चक मार्ग पर खंभा और निर्माण कर स्थायी अवरोध स्थापित कर दिया है, जिससे रास्ता पूरी तरह बंद हो गया है और स्थानीय लोगों को आवागमन में गंभीर कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। ग्राम प्रधान ने बताया कि पहले भी लेखपाल, कानूनगो और अन्य अधिकारियों को मामले की जानकारी दी गई थी, लेकिन अब तक कोई प्रभावी कार्रवाई नहीं हुई। इससे अवैध कब्जा धारियों के हौसले और बढ़ गए हैं। ग्राम प्रधान और ग्रामीणों ने उपजिलाधिकारी से अनुरोध किया है कि अविलंब अवैध कब्जा हटाकर चक मार्ग को खुलवाया जाए, ताकि ग्रामवासियों का दैनिक जीवन सुचारू रूप से चल सके।

गुरु गोविंद सिंह प्रकाश पर्व के अवसर पर निकाली गई भव्य शोभा यात्रा

बिसवां सीतापुर गुरु गोविंद सिंह प्रकाश पर्व पर बिसवां कस्बे में सिख समुदाय द्वारा भव्य शोभायात्रा गुरुद्वारा गुरु सिंह सभा के तत्वावधान मे अरदास के बाद निकाली गई जो कस्बे में भ्रमण करती हुई गुरु तेज बहादुर गुरुद्वारा होते हुए मंगरैया बाजार सब्जी मंडी बड़ा चौराहा रायगंज होते हुए पुनः गुरुद्वारा पुरवारी टोला पर समाप्त हुई ।शोभायात्रा में सिख समुदाय की महिलाएं आगे-आगे झाड़ू लगाते चल रही थी। वहीं भारी संख्या में महिलाएं पुरुष व बच्चे शामिल थे ।बच्चों द्वारा शोभायात्रा में बहुत ही सुंदर प्रदर्शन किया जा रहा था। जगह-जगह पर लोगों द्वारा फूलों की वर्षा की गई। इसके बाद गुरुद्वारे में लंगर का आयोजन हुआ ।सुरक्षा की दृष्टिकोण से भारी संख्या में पुलिस दल भी साथ-साथ चल रहा था ।इस अवसर पर मुख्य रूप से गुरु सिंह सभा अध्यक्ष भजनसिंह सचदेवा चरणजीत सिंह सुरेन्द्र पाल सिंह, हरजीत सिंह,इंद्रपाल सिंह महेंद्र सिंह इंद्रजीत सिंह चरणजीत सिंह, सोनू सिंह,गगन सिंह मनजीत सिंह सहित भारी संख्या में सिख समुदाय के लोग मौजूद रहे।

विकासखंड मिश्रिख के पंचायती राज ग्रामीण सफाई कर्मचारियों ने मनाया नव वर्ष

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मिश्रिख (सीतापुर) उत्तर प्रदेश पंचायती राज ग्रामीण सफाई कर्मचारी संघ विकासखंड मिश्रित व्दारा नव वर्ष 2026 के शुभ अवसर पर आज विकासखंड के बैठक हाल में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आयोजित कार्यक्रम में खंडविकास अधिकारी सुनील कुमार कौशल , सहायक विकास अधिकारी पंचायत तथा समस्त ग्राम पंचायत सचिव एवं स्थानीय पत्रकार बंधुओं की उपस्थिति बनी रही। आयोजित कार्यक्रम के दौरान उत्तर प्रदेश पंचायती राज ग्रामीण सफाई कर्मचारी संघ के पदाधिकारियों ने सभी अधिकारियों एवं अतिथिगणो को नव वर्ष 2026 की हार्दिक शुभ कामनाए दी। तथा सभी सफाई कर्मचारियों को डायरी देकर सम्मानित किया। इस मौके पर सभी अतिथियों का पुष्प मालाओं, मिठाई एवं डायरी भेंट करके स्वागत किया गया। सभी कर्मचारियों ने संघ की एकता एवं संगठन की मजबूती का संकल्प भी दोहराया। इस अवसर पर विकासखंड के सफाई कर्मचारी संघ के पदाधिकारी ब्लाक अध्यक्ष मनोज कुमार, ब्लाक कोषाध्यक्ष रामलोटन, संघ महामंत्री ऊदन कुमार, संगठन मंत्री कुलदीप कुमार, संप्रेक्षक पूनम देवी, उपाध्यक्ष अरविंद कुमार वर्मा सहित सभी सफाई कर्मचारी उपस्थित रहे।

एडवोकेट अमृता सिंह ने बार कौंसिल ऑफ उत्तर प्रदेश के प्रत्याशी प्रदीप कुमार सिंह की जीत के लिए पत्थर शिवाला मंदिर में की पूजा अर्चना

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बिसवा (सीतापुर) हाई कोर्ट लखनऊ की वरिष्ठ अधिवक्ता अमृता सिंह ने अधिवक्ता समर्थकों के साथ बार कौंसिल ऑफ उत्तर प्रदेश के प्रत्याशी बार कौंसिल ऑफ उत्तर प्रदेश प्रदीप कुमार सिंह की आगामी चुनाव में जीत के लिए तहसील बिसवा के प्रसिद्ध व प्राचीन पत्थर शिवाला मंदिर में जाकर भोलेनाथ शिव जी के दरबार में माथा टेक कर विधिवत की पूजा अर्चना। वरिष्ठ अधिवक्ता हाई कोर्ट लखनऊ अमृता सिंह ने बार कौंसिल ऑफ उत्तर प्रदेश के प्रत्याशी प्रदीप कुमार सिंह के चुनाव के मद्देनजर तहसील बिसवा,लहरपुर में भ्रमण कर सहयोग की अपील की।

वरिष्ठ अधिवक्ता अमृता सिंह अपने अधिवक्ता समर्थकों शुभी सोनी सिंह,रीता शर्मा,विशाल सिंह,जगलाल राजपूत के साथ नगर के प्रसिद्ध व प्राचीन पत्थर शिवाला मंदिर पहुंची,वहां पर भोलनाथ शिव जी के दर्शन कर पूजा अर्चना की,एवं मंदिर में सभी दरबार में स्थापित भगवान की पूजा अर्चना की। इस अवसर पर बिसवा बार एसोसिएशन बिसवा के अध्यक्ष दिनेश कुमार श्रीवास्तव, अधिवक्ता नीरज कुमार श्रीवास्तव, प्रीती श्रीवास्तव अधिवक्ता गण साथ में रहे।

ककराही रेलवे फाटक के पास सड़क हादसा

गोपीगंज। कोतवाली क्षेत्र के ककराही रेलवे फाटक के पास मंगलवार देर शाम अज्ञात चार पहिया वाहन की टक्कर से बाइक सवार दो युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। गल्हैया ज्ञानपुर निवासी शिवम (22) पुत्र अमृतलाल मौर्य और प्रमोद गिरी (23) पुत्र कैलाश गिरी बाइक से घर लौट रहे थे, तभी पीछे से आए वाहन ने टक्कर मार दी। सूचना पर 108 एंबुलेंस से घायलों को सीएचसी गोपीगंज लाया गया, जहां से प्राथमिक उपचार के बाद जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। हादसे के बाद वाहन चालक फरार हो गया। पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

सकल हिंदू समाज आयोजक समिति द्वारा हिंदू सम्मेलन का किया गया आयोजन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बिसवां सीतापुर बिसवां कस्बे के सरस्वती शिशु मंदिर पुरवारी टोला में मंगलवार को राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के नेत्रत्व में सकल हिन्दू समाज आयोजक समिति द्वारा केशव बस्ती में हिंदू सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता जय प्रकाश क्षेत्र व्यवस्था प्रमुख एवं वरिष्ठ प्रचारक ने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि हिन्दू सम्मेलनों में सकल हिन्दू समाज के विभिन्न वर्गों द्वारा मिलकर किया जा रहा है जिससे समाज के समस्त अंगों में आपस में भाईचारा पुष्ट हो रहा है। छोटे छोटे आपसी मतभेद समाप्त हो रहे हैं एवं विशेष रूप से युवा नागरिकों को हिंदू सनातन संस्कृति के संस्कारों से अवगत होने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। इन हिन्दू सम्मेलनों के आयोजन का उद्देश्य भी सनातन संस्कृति, सनातन धर्म और सामाजिक एकता को सुदृढ़ करना है, जिसकी प्राप्ति होती हुई दिख रही है। भारत के भी आज विश्व के लगभग समस्त देशों के साथ दोस्ताना सम्बंध हैं, भारत ने कभी भी किसी देश की जमीन पर कब्जा करने के उद्देश्य से किसी देश के साथ युद्ध नहीं किया है। भारत सदैव से ही 'जियो और जीने दो' के सिद्धांत का अनुपालन करता आया है। बल्कि, विश्व के अन्य देशों के नागरिक, जैसे, शक, हूण, कुषाण, पारसी, यहूदी, ईसाई एवं मुस्लिम भी भारत आकर आसानी से यहां रच बस गए हैं। आज पूरे विश्व में भारत ही एक ऐसा देश है जिसमें मुस्लिम समाज के समस्त फिर्के पाए जाते हैं। संत रघुवंश शास्त्री ने कहा कि हिंदुत्व यदि सशक्त होता है तो यह न केवल भारत के लिए बल्कि पूरे विश्व के हित में होगा क्योंकि आज विश्व के विभिन्न देशों में फैली अशांति को दूर करने में केवल सनातन हिंदू संस्कृति ही सक्षम दिखाई दे रही है और इस विषय को विभिन्न देशों में फैले भारतीय मूल के नागरिकों के माध्यम

से विकसित एवं अन्य देशों के नागरिक भलीभांति समझने लगे हैं क्योंकि इन देशों में निवासरत भारतीय मूल के नागरिक सनातन हिंदू संस्कृति के संस्कारों का अनुपालन करते हुए दिखाई देते हैं जिनमें 'वसुधैव कुटुम्बकम' का भाव दिखाई देता है। इन देशों में समस्त भारतीय मूल के नागरिक शांतिपूर्वक अपना जीवन यापन करते हैं एवं वहां की स्थानीय अर्थव्यवस्था में अपना सशक्त योगदान देते हुए दिखाई देते हैं। कार्यक्रम का सफल संचालन साहित्यकार आनंद खत्री ने किया ढ्ढ इस अवसर पर सैकड़ों हिंदू जन एकत्र हुए।

विद्यंत शिक्षण संस्थान में संस्थापक दिवस समारोह होनहार विद्यार्थियों को विद्यंत मेडल पुरस्कार

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। राजधानी लखनऊ के विद्यंत हिंदू पीजी कॉलेज, विद्यंत इंटर कॉलेज एवं विद्यंत प्राइमरी विद्यालय में संस्थापक दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस शिक्षण संस्थान के संस्थापक प्रबंधक विक्टर नारायण विद्यांत की जयंती को संस्थापक दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर होनहार विद्यार्थियों को विद्यांत मेडल से पुरस्कृत किया गया इसके साथ ही साथ महाविद्यालय वार्षिक पत्रिका साक्षी का भी लोकार्पण किया गया मुख्य अतिथि राज्य सूचना आयुक्त डॉ0 दिलीप अग्निहोत्री ने कहा कि बी0एन0 विद्यांत जी के जीवन से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है उन्होंने समाज में अपनी संपदा दान कर दी थी यह समाज और राष्ट्र के प्रति उनका समर्पण भाव था। विद्यंत एजुकेशनल ट्रस्ट के प्रबंधक शिवशीष घोष ने समाज के सभी वर्गों को शिक्षा प्रदान करके महाविद्यालय की भूमिका पर प्रकाश डाला। सहायक प्रबंधक अविक भट्टाचार्य ने सुलभ शिक्षा को आकार देने में संस्थापक की विरासत को रेखांकित किया। प्राचार्य प्रो0 धर्म कौर ने शैक्षणिक और गैर-शैक्षणिक क्षेत्र में छात्रों के प्रदर्शन को एक मूल परंपरा बताया। प्रो0 राजीव शुक्ला ने इस कार्यक्रम को शैक्षणिक योग्यता और सांस्कृतिक मूल्य को सम्मानित करने मंच बताया। विक्टर नरायण विद्यंत ने 1938 में नवाब अमजद अली शाह के वित्त मंत्री राजा दक्षिण रंजन मुखर्जी के वंशजों से खरीदी गई भूमि पर इस संस्थान की स्थापना की थी। यह संस्थान 1944 में हाई स्कूल और 1946 में इंटरमीडिएट कॉलेज के रूप में विकसित हुआ लखनऊ विश्वविद्यालय से संबद्धता के तहत 1954 में बी0ए0 पाठ्यक्रम शुरू हुआ। इसके बाद 1974 में बी0कॉम0 शुरू हुआ स्नातकोत्तर कार्यक्रम 2006 में शुरू किया गया। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्ति कॉलेज शहर में एक शैक्षणिक केंद्र के

रूप में कार्य करता है। शैक्षणिक वर्ष 2024-25 के अंतिम वर्ष के लखनऊ विश्वविद्यालय की परीक्षा के परिणाम के आधार पर प्रत्येक पाठ्यक्रम में शीर्ष तीन छात्रों को पुरस्कार दिए गए। विपुल श्रीवास्तव प्रथम, आदित्य यादव द्वितीय, अनामिका तिवारी तृतीय स्थान प्राप्त किया। बी0 ए0 मेंकल शर्मा प्रथम, सचिन शुक्ला द्वितीय, राहुल सिंह तृतीय स्थान प्राप्त किया। बी0 कॉम0 अनुज प्रथम, अभिजीत सावरनी द्वितीय, सौर्य निगम तृतीया एम0 कॉम0 प्रीति त्रिपाठी प्रथम, इसाम मुस्तकीम द्वितीय, मानसी सिंह तृतीय शामिल रहे।

कड़ाके की ठंड में, 30 जरूरतमंदों को बांटे गए कंबल

कंबल पाकर लाभार्थियों के खिले चेहरे

लालगंज (रायबरेली)। भीषण ठंड को देखते हुए बुधवार को ब्लॉक कार्यालय परिसर में जरूरतमंदों के लिए कंबल वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान चकपंचम व चांदा बन्नामऊ गांव के कुल 30 असहाय व गरीब लोगों को गर्म कंबल वितरित किए गए। कंबल पाकर लाभार्थियों के चेहरों पर खुशी साफ दिखाई दी। कार्यक्रम में खंड विकास अधिकारी गगनदीप सिंह ने स्वयं जरूरतमंदों को कंबल प्रदान किए। उन्होंने कहा कि ठंड के मौसम में गरीब व असहाय लोगों की मदद करना प्रशासन की प्राथमिक जिम्मेदारी है। आगे भी इसी तरह के राहत कार्य लगातार जारी रहेंगे।

खंड विकास अधिकारी ने लोगों से ठंड से बचाव के लिए गर्म कपड़ों के प्रयोग की अपील करते हुए समाज से जरूरतमंदों की मदद के लिए आगे आने का आह्वान किया।

इस अवसर पर समाजसेवी मुन्ना सिंह चौहान, एडीओ पंचायत प्रणवीर प्रताप सिंह, सूरह आलम, सुचित कुमार, सीमा मौर्य और पूनम यादव सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

अगर आप चाहें तो मैं अखबार के कॉलम साइज, डिजिटल पोर्टल, या सोशल मीडिया पोस्ट के अनुसार भी इसे ढाल सकता हूँ।

बरौली प्रखंड कार्यालय में आयोजित हुआ 'प्रशासन जनता के द्वार' कार्यक्रम

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

गोपालगंज (बिहार)- जिला पदाधिकारी गोपालगंज द्वारा बरौली प्रखंड कार्यालय परिसर में प्रशासन जनता के द्वार कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस जनोपयोगी कार्यक्रम का उद्देश्य प्रशासन को सीधे आम जनता से जोड़ना तथा उनकी समस्याओं का त्वरित एवं प्रभावी समाधान सुनिश्चित करना रहा। कार्यक्रम का उद्घाटन बरौली विधानसभा क्षेत्र के माननीय विधायक मनजीत सिंह एवं जिला पदाधिकारी पवन कुमार सिन्हा द्वारा संयुक्त रूप से फीता काटकर किया गया। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न विभागों–जैसे राजस्व, कृषि, आपूर्ति, सामाजिक सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य, मनरेगा, जीविका, पंचायती राज, विद्युत, परिवहन सहित अन्य विभागों–द्वारा अलग-अलग स्टॉल लगाए गए। इन स्टॉलों पर उपस्थित पदाधिकारियों एवं कर्मचारियों ने आम नागरिकों की समस्याओं को गंभीरता से सुना और मौके पर ही कई मामलों का निराकरण किया गया। जिन मामलों का त्वरित समाधान संभव नहीं था, उन्हें संबंधित विभागों को अग्रसारित करते हुए समयबद्ध निष्पादन के निर्देश दिए गए। इस अवसर पर बड़ी संख्या में बरौली प्रखंड के ग्रामीण नागरिक उपस्थित रहे। ग्रामीणों ने भूमि विवाद, राशन कार्ड, पेंशन, आवास योजना, रोजगार, स्वास्थ्य सेवाओं, बिजली एवं अन्य जनकल्याणकारी योजनाओं से संबंधित अपनी समस्याओं के समाधान हेतु जिला पदाधिकारी को आवेदन भी सौंपे। जिला पदाधिकारी पवन कुमार सिन्हा ने प्राप्त आवेदनों पर शीघ्र कार्रवाई सुनिश्चित करने का आश्वासन दिया तथा संबंधित अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि जनता की समस्याओं का समाधान सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ किया जाए।

कार्यक्रम में उप विकास आयुक्त कुमार विवेक निशांत, अनुमंडल पदाधिकारी गोपालगंज अनिल कुमार, विशेष कार्य पदाधिकारी संदीप कुमार सहित सभी विभागों के वरीय पदाधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। अधिकारियों ने विभिन्न स्टॉलों का निरीक्षण कर कार्यप्रणाली की समीक्षा की तथा आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस अवसर पर विधायक मनजीत सिंह ने कहा कि *प्रशासन जनता के द्वार* जैसे कार्यक्रमों से आम लोगों को अपनी समस्याओं के समाधान के लिए जिला मुख्यालय के चक्कर नहीं लगाने पड़ते, बल्कि प्रशासन स्वयं जनता के बीच पहुंचकर उनकी समस्याओं का समाधान करता है। उन्होंने इस पहल की सराहना करते हुए इसे जनहित में एक सराहनीय कदम बताया। कार्यक्रम का समापन सकारात्मक माहौल में हुआ। उपस्थित ग्रामीणों ने जिला प्रशासन द्वारा आयोजित इस पहल की सराहना की और उम्मीद जताई कि ऐसे कार्यक्रम भविष्य में भी निरंतर आयोजित किए जाएंगे, जिससे प्रशासन और जनता के बीच विश्वास एवं संवाद और मजबूत हो सके।

क्षेत्र के हिलहा गांव में घर में घुसे अज्ञात बदमाशों ने गृह स्वामी किसान पर चाकूओं से किया हमला

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

महराजगंज/रायबरेली। घर में घुसे अज्ञात बदमाशों ने गृह स्वामी किसान पर चाकूओं से हमला कर दिया। व उसकी पत्नी से भी मारपीट कर घायल कर दिया।शोर सुनकर लोगों के आने की आहट पाकर अज्ञात बदमाश फरार हो गए। मौके पर पहुंची पुलिस ने घटना की छानबीन शुरू कर दी है। वही घायल किसान गंभीर हालत में जिला अस्पताल में भर्ती है।

क्षेत्र के हिलहा गांव निवासी किसान पवन बाजपेई 52 वर्ष अपनी पत्नी व दो बच्चों के साथ घर के आंगन में बने बरामदे में सो रहे थे। रात करीब एक बजे छत के रास्ते घर में घुसे अज्ञात बदमाशों की चहलकदमी से उनकी पत्नी रिंकी की नींद खुली तो उन्होंने आंगन में दो लोगों को उनके पति पर हमला करते देख सहम गई। उन्होंने छुपकर प्रधान प्रतिनिधि दिलीप तिवारी को फोन कर जानकारी दी। तभी दरवाजे में लगे परदे के पीछे छिपे एक बदमाश ने उनका गला दबा दिया। चीख-पुकार सुनकर पड़ोसी पहुंचते तब तक बदमाश फरार हो गए। सूचना पर पहुंची डायल पुलिस व कोतवाली पुलिस ने रात में ही छानबीन शुरू कर दी है। घटना में किसान के चेहरे व पेट में चाकुओं के कई गहरे घाव हैं। घायल किसान पवन बाजपेई को डायल पुलिस व प्रधान प्रतिनिधि दिलीप तिवारी ने सीएचसी

पहुंचाया जहां से चिकित्सकों ने उन्हें गंभीर हालत में जिला अस्पताल रेफर कर दिया। घटना के बाबत कोतवाल जगदीश यादव ने बताया कि जमीनी विवाद की रंजिश के चलते किसान पर हमला हुआ है। अन्य पहलुओं की भी जांच की जा रही है। जल्द ही गिरफ्तार कर कार्यवाही की जाएगी। क्षेत्राधिकारी प्रदीप कुमार ने बताया कि प्रथम दृष्टया पुरानी रंजिश को लेकर हमले की बात सामने आ रही है। फारेंसिक टीम बुलाई गई है। घटना के सभी पहलुओं की छानबीन की जा रही है। जल्द ही आरोपियों की शिनाख्त कर कार्यवाही की जाएगी।

पड़ोसी श्याम तिवारी, दिलीप तिवारी आदि अन्य ग्रामीणों का कहना है कि चोरी की नियत से घर में घुसे बदमाशों ने दम्पति के जाग जाने से उन पर जानलेवा हमला कर दिया। जबकि किसान के साथ जिला अस्पताल में मौजूद परिजन विमल किशोर अवस्थी का कहना है कि पुरानी रंजिश को लेकर उनके ऊपर जानलेवा हमला किया गया है।

नशे में धुत चालक बस सड़क किनारे रोकी, यात्रियों में मचा हड़कंप

नशे में झूमता रहा बस चालक,यात्री रहे परेशान

लालगंज (रायबरेली)। कस्बे के बाईपास रोड पर बुधवार को उत्तर प्रदेश परिवहन निगम की एक बस में उस समय हंगामा मच गया, जब बस चालक नशे की हालत में पाया गया। आलमबाग डिपो की यह बस फतेहपुर से यात्रियों को लेकर लखनऊ जा रही थी। बताया गया कि बाईपास रोड पर पहुंचते ही चालक ने बस को अनियंत्रित ढंग से चलाना शुरू कर दिया, जिससे बस में बैठे यात्री सहम गए। कुछ यात्रियों ने विरोध किया तो चालक और परिचालक के बीच बहस शुरू हो गई। नशे में धुत चालक ने बस आगे ले जाने से इनकार कर दिया और सड़क किनारे बस खड़ी कर दी। इसके बाद वह बस में ही लेट गया। घटना के दौरान बस में बैठे यात्रियों, खासकर महिलाओं और बुजुर्गों में भय का माहौल बन गया। रालपुर निवासी पंकज ने बताया कि उन्हें लखनऊ जाना था, लेकिन चालक काफी देर तक बस नहीं चला रहा था। नगर निवासी विनीता ने आरोप लगाया कि चालक नशे में यात्रियों और परिचालक से उलझ रहा था। स्थिति को संभालते हुए परिचालक ने सूझबूझ दिखाई और यात्रियों को दूसरी बस में शिफ्ट कराया। इसके बाद सभी यात्रियों को उनके गंतव्य की ओर रवाना किया गया। हालांकि, इस दौरान यात्रियों को काफी देर तक इंतजार करना पड़ा। कुछ यात्री बस से उतरकर वैकल्पिक साधन तलाशते भी नजर आए। सड़क किनारे खड़ी सरकारी बस काफी देर तक लोगों के बीच चर्चा का विषय बनी रही।

जनवरी में पूरी की जाए जल जीवन मिशन के तहत जलापूर्ति- जिलाधिकारी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

उरई(जालौन): जिलाधिकारी राजेश कुमार पाण्डेय ने कलेक्ट्रेट सभागार में जल जीवन मिशन के अंतर्गत हर घर जल योजना की प्रगति की विस्तृत समीक्षा करते हुए कहा कि पेयजल आपूर्ति में किसी भी प्रकार की लापरवाही अब बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने अधिकारियों और कार्यदायी संस्थाओं को निर्देशित किया है कि अवशेष कार्यों को निर्धारित समय-सीमा के भीतर पूर्ण कर आमजन को निर्बाध पेयजल उपलब्ध कराया जाए।

समीक्षा के दौरान अवगत कराया गया कि योजना के अंतर्गत जनपद में लगभग 1600 किलोमीटर सड़कों की खुदाई की गई थी, जिनमें से 1260 किलोमीटर सड़कों का निर्माण पूर्ण किया जा चुका है। जांच में यह भी सामने आया कि 264 ग्राम पंचायतों में लगभग 330 किलोमीटर सड़क निर्माण अभी अवशेष है। इस पर जिलाधिकारी ने कार्यदायी एजेंसियों जीवीपीआर एवं बीजीसीसी को निर्देश दिए कि 31 जनवरी तक प्रत्येक ग्राम पंचायत में सड़क पुनर्निर्माण का कार्य अनिवार्य रूप से पूरा किया जाए। बैठक में विभिन्न स्थानों पर निर्माण कार्यों के दौरान क्षतिग्रस्त पाइपलाइनों के कारण कई ग्रामों में पिछले चार माह से बाधित जलापूर्ति को लेकर जिलाधिकारी ने लोक निर्माण विभाग और संबंधित निर्माण खंडों को निर्देश दिए कि ग्राम कुरकुरू, करथरा, गुढ़ा, सिमरिया, टीहर, धन्जा एवं गिरथान सहित सभी प्रभावित गांवों में क्षतिग्रस्त पाइपलाइनों को जनवरी माह के भीतर दुरुस्त कर जलापूर्ति सुनिश्चित कराएं।

जिलाधिकारी ने कहा कि पुलिया एवं कल्वर्ट निर्माण के दौरान पाइपलाइन क्षतिग्रस्त होने की घटनाएं लगातार सामने आ रही हैं, इसलिए भविष्य में ऐसे निर्माण कार्यों के प्राक्कलन में पाइपलाइन शिफ्टिंग को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाए। उन्होंने यह भी निर्देश दिया कि लोक निर्माण विभाग द्वारा किसी भी खुदाई कार्य से पूर्व प्रतिदिन व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से वर्क प्लान साझा किया जाए जिससे आपसी समन्वय स्थापित कर नुकसान से बचा जा सके। विद्युत आपूर्ति संबंधी समस्याओं पर नाराजगी व्यक्त करते हुए जिलाधिकारी ने कहा कि कोटा मुस्तकिल पेयजल योजना के अंतर्गत इंटेकवेल एवं जल शोधन संयंत्र को स्वतंत्र फीडर से जोड़ा जाना आवश्यक

है ताकि लो वोल्टेज की समस्या समाप्त हो सके। सहाव, धनौरा कलां, सरावन, सारंगपुर, मिझौना, सिंगपुरा एवं चतेला नलकूप पेयजल योजनाओं में स्थापित ट्रांसफॉर्मरों पर दो दिन के भीतर विद्युत आपूर्ति प्रारंभ कराने के निर्देश भी उन्होंने दिए। जिलाधिकारी ने कार्यदायी संस्थाओं को चेतावनी देते हुए कहा कि मैनपॉवर बढ़ाकर सड़क पुनर्निर्माण, पाइपलाइन मरम्मत और जलापूर्ति कार्यों में तेजी लाई जाए। उन्होंने स्पष्ट किया कि हर घर जल योजना सरकार की प्राथमिकता है और इसमें किसी भी स्तर पर शिथिलता मिलने पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी। बैठक में अधिशाषी अभियंता नमामि गंगे ग्रामीण अंचल गुप्ता, जिला पंचायत राज अधिकारी राम अयोध्या प्रसाद सहित सम्बंधित अधिकारी मौजूद रहे।

दंगाइयों को कानून का कवच देने से शीर्ष अदालत का इंकार

दिल्ली के दंगाइयों को शीर्ष अदालत ने राहत देने से सीधा इंकार कर दिया यह अदालत की अराजकता से निबटने की जीरो टॉलरेंस को नीति का हवाला देता है। उच्चतम न्यायालय ने 2020 के दिल्ली दंगों की साजिश के मामले में आरोपियों उमर खालिद और शरजील इमाम को जमानत देने से साफ इंकार करते हुए कहा है कि उनके खिलाफ गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम के तहत प्रथम दृष्टया मामला बनता है। अदालत ने साथ ही उमर खालिद और शरजील इमाम पर इस मामले में एक साल तक जमानत याचिका दाखिल करने पर भी रोक लगा दी है। न्यायमूर्ति अरविंद कुमार और न्यायमूर्ति एनवी अंजारिया की पीठ ने हालांकि इस मामले में अन्य आरोपियों गुलफिशा फातिमा, मीरान हैदर, शिफा उर रहमान, मोहम्मद सलीम खान और शादाब अहमद को 12 शर्तों के साथ जमानत दे दी है। पीठ ने कहा, 'अदालत इस बात से संतुष्ट है कि अभियोजन पक्ष द्वारा प्रस्तुत सामग्री से याचिकाकर्ताओं उमर खालिद और शरजील इमाम के खिलाफ प्रथम दृष्टया आरोप सिद्ध होते हैं। इन याचिकाकर्ताओं के संबंध में वैधानिक कसौटी लागू होती है। कार्यवाही के इस चरण में उन्हें जमानत पर रिहा करना उचित नहीं है।' अदालत ने कहा कि जिन लोगों को जमानत मिली है, उनकी भूमिका सीमित और परिस्थितिजन्य मानी गई है, जबकि उमर खालिद और शरजील इमाम पर दंगों की साजिश रचने, भीड़ को भड़?काने और सुनियोजित तरीके से हिंसा को दिशा देने के गंभीर आरोप हैं। अदालत ने यह भी रेखांकित किया कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर हिंसा को जायज नहीं ठहराया जा सकता। देखा जाये तो उच्चतम न्यायालय का यह फैसला केवल दो व्यक्तियों की जमानत याचिका का निपटारा नहीं है, बल्कि यह देश की आंतरिक सुरक्षा, कानून व्यवस्था और राष्ट्रीय संकल्प का स्पष्ट संदेश है। आपको पता रहे उमर खालिद और शरजील इमाम जैसे लोग कोई साधारण आरोपी नहीं हैं। ये वे चेहरे हैं जिन्होंने विचारधारा की आड़ में सड़कों पर आग लगाने की मानसिकता को खाद पानी दिया। यह वार वार साबित हो चुका है कि दिल्ली दंगे अचानक नहीं भड़?के थे। उनके पीछे शब्दों के बारूद, भाषणों की चिंगारी और योजनाबद्ध उकसावे की लंबी तैयारी थी।

ऐसे मामलों में यदि अदालत नरमी दिखाती, तो यह न केवल न्याय के साथ अन्याय होता बल्कि समाज के लिए एक खतरनाक संकेत भी जाता। अदालत ने सही कहा कि इन दोनों की स्थिति अन्य आरोपियों से अलग है। यह अंतर केवल कानूनी नहीं, बल्कि नैतिक और सामाजिक भी है। दंगा केवल पत्थर फेंकने से नहीं होता, दंगा उस सोच से पैदा होता है जो समाज को बांटने का काम करती है। जब किसी मंच से यह कहा जाए कि सड़?कों पर उतर कर व्यवस्था को जाम कर दो, तब वही शब्द बाद में आग बन जाते हैं। जमानत खारिज करने का फैसला उन सभी लोगों के लिए चेतावनी है जो खुद को एक्टिविस्ट या बुद्धिजीवी बताकर कानून को ठेंगा दिखाना चाहते हैं। यह फैसला बताता है कि भारत में अभिव्यक्ति की आजादी का मतलब अराजकता फैलाने की छूट नहीं है। मुकदमे में देरी को लेकर अदालत की टिप्पणी भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। वर्षों से एक तर्क गढ़ लिया गया था कि अगर मुकदमा लंबा चल रहा है, तो आरोपी को स्वतः राहत मिलनी चाहिए। यह सोच न्याय व्यवस्था को कमजोर करती है। अगर गंभीर साजिशों में केवल समय के आधार पर जमानत मिलने लगे, तो हर देश विरोधी ताकत समय को हथियार बना लेगी। इस फैसले का सबसे बड़ा असर उपद्रवी और दंगाई मानसिकता वाले लोगों पर पड़ेगा। अब यह भ्रम टूटेगा कि लंबी कानूनी प्रक्रिया अंततः उन्हें बचा लेगी। देखा जाये तो अदालत का सख्त रुख भारत की आतंकवाद के खिलाफ चल रही लड़ाई को मजबूत करता है। आपको बता दें यह फैसला उन आम नागरिकों के लिए भी भरोसे का आधार है जिन्होंने दंगों में अपने घर, दुकानें और परिजन खोए। उनके लिए न्याय केवल सजा नहीं, बल्कि यह विश्वास है कि सिस्टम उनके साथ खड़ा है। कुछ लोग इसे कठोरता कहेंगे, लेकिन सच यह है कि लोकतंत्र की रक्षा के लिए कठोर फैसले जरूरी होते हैं। उमर खालिद और शरजील इमाम की जमानत खारिज होना इस बात का प्रमाण है कि भारत की न्यायपालिका आज भी राष्ट्र की सुरक्षा, सामाजिक सौहार्द और संविधान की मूल भावना को समझती है। यह फैसला आने वाले समय में न केवल कानूनी मिसाल बनेगा, बल्कि उन सभी ताकतों के लिए एक सख्त चेतावनी भी होगा जो भारत को भीतर से तोड़ने का सपना देखती हैं। यह निर्णय बताता है कि भारत कमजोर नहीं है, भारत चुप नहीं है और भारत अब दंगों की राजनीति को बर्दाश्त करने के मूड में बिल्कुल नहीं है। हालिया कानूनी घटनाक्रमों और विभिन्न टिप्पणियों के अनुसार, खुद को एक्टिविस्ट या बुद्धिजीवी बताकर कानून से ऊपर समझने वाले व्यक्तियों के खिलाफ सख्ती बढ़ी है। अदालतों ने स्पष्ट किया है कि एक्टिविस्ट या बुद्धिजीवी होने का लेबल किसी व्यक्ति को आपराधिक जांच या कानूनी प्रक्रिया से सुरक्षा प्रदान नहीं करता है। कानून की नजर में सभी नागरिक समान हैं। पिछले कुछ वर्षों में भीमा कोरेगांव और दिल्ली दंगों जैसे मामलों में कई चर्चित चेहरों की गिरफ्तारियों और अदालतों द्वारा उनकी जमानत याचिकाओं को खारिज किए जाने को इस दिशा में एक बड़ा झटका माना गया है। जांच एजेंसियों ने इन पर अर्बन नक्सल या देश विरोधी गतिविधियों में शामिल होने के आरोप लगाए हैं। यूएपीए जैसे कड़े कानूनों के तहत की गई कार्रवाई और अदालतों द्वारा साक्ष्यों के आधार पर दी गई कड़ी टिप्पणियों ने यह संदेश दिया है कि वैचारिक स्वतंत्रता की आड़ में हिंसा या अस्थिरता को बढ़ावा देना स्वीकार्य नहीं होगा। सर्वोच्च न्यायालय ने विभिन्न मामलों में कहा है कि विरोध का अधिकार मौलिक है, लेकिन यह कानून के शासन के उल्लंघन का अधिकार किसी को नहीं देता है। जाहिर है कि कानून का शासन बनाए रखना और दंगाइयों के प्रति अदालत का भी सख्त रुख होना अत्यंत महत्वपूर्ण है इसके बिना सामूहिक गुंडई अराजकता फैलाने और भीड़ तंत्र कायम करने के षडयंत्रों पर नकेल डालना संभव नहीं होगा।

मनोज कुमार अग्रवाल

संपादकीय

मतदाता सूची का मेगा रीसेटः जनता, वोट और सत्ता की जंग

मृतक, डुप्लीकेट और गायब नामः लोकतंत्र की परीक्षा यूपी में [मतदाता सूची की सफाईः अधिकार सुरक्षित या लोकतंत्र कमजोर?]

उत्तर प्रदेश में हाल ही में मतदाता सूची में बड़ा संशोधन आया, जिसने राजनीति और प्रशासन दोनों में हलचल मचा दी है। 2.89 करोड़ नाम हटने के बाद लोकतंत्र की नींव पर गंभीर प्रश्न उठ खड़े हुए हैं। क्या यह कदम चुनावों को निष्पक्ष और पारदर्शी बनाने की वास्तविक कोशिश है, या सत्ता की चालाकी और रणनीति का हिस्सा मात्र? देश के सबसे बड़े राज्य में इस बदलाव ने व्यापक बहस को जन्म दिया है। शुद्धता के दावे और अन्याय के आरोपों के बीच जनता उलझन में है। ड्राफ्ट सूची में यह विशाल संशोधन दिखाता है कि मतदाता सूची केवल कागजी दस्तावेज़ नहीं, बल्कि लोकतंत्र की रीढ़ और उसकी विश्वसनीयता का प्रमाण है। चुनाव आयोग ने 6 जनवरी 2026 को ड्राफ्ट सूची जारी की, जिसमें कुल 15.44 करोड़ मतदाताओं में से 2.89 करोड़ नाम हटा दिए गए। अब कुल वैध नाम केवल 12.55 करोड़ बचे हैं। हटाए गए नामों में 46.23 लाख मृतक, 2.17 करोड़ स्थानांतरित और 25.47 लाख डुप्लिकेट नाम शामिल हैं। यह कुल मतदाताओं का 18.7 प्रतिशत है, जो भारत में किसी भी राज्य में सबसे बड़ा संशोधन माना जा रहा है। एसआईआर की समयसीमा और ड्राफ्ट प्रकाशन कई बार बढ़ाया गया, क्योंकि सूची में बड़े पैमाने पर असंगतियां मिलीं। दावा-आपत्ति की अवधि 6 फरवरी तक है, जिससे सभी प्रभावित लोग फॉर्म भरकर नाम जोड़ सकते हैं। इस विशाल हटाव ने सवाल खड़े किए हैं कि क्या यह लोकतंत्र को मजबूत करने का कदम है, या लक्षित राजनीतिक कार्रवाई है। लोकतंत्र की शुद्धता के समर्थक इसे ऐतिहासिक सुधार कहते हैं। उनके अनुसार, मृतक और डुप्लिकेट नाम चुनाव प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। इससे वोटिंग सिस्टम में फर्जीवाड़ा रोका जा सकता है। एसआईआर प्रक्रिया के अनुसार, 81.3 प्रतिशत मतदाताओं ने गणना फॉर्म जमा किए, जबकि बाकी नहीं कर सके। इस तरह की सफाई अन्य राज्यों में भी हुई, लेकिन उत्तर प्रदेश में कटौती सर्वाधिक रही। समर्थकों का कहना है कि इससे वोट बैंक की राजनीति कमजोर होगी और असली मतदाताओं की आवाज़ को ताकत मिलेगी। विपक्षी दल इसे राजनीतिक साजिश मान रहे हैं। उनका तर्क है कि गरीब और अल्पसंख्यक समुदाय के वोटों को प्रभावित किया जा रहा है। कई नेता और उनके परिवार के नाम हटाए जाने का दावा कर रहे हैं। उनका कहना है कि केवल निवास बदलने के कारण वैध मतदाताओं को बाहर किया गया। विरोधियों का आरोप है कि यह लोकतंत्र पर हमला है और संवैधानिक अधिकारों का उल्लंघन हो सकता है। शहरी क्षेत्रों और प्रवासी आबादी में अधिक नाम हटाए गए हैं, जिससे यह आशंका बढ़ रही है कि यह उद्देश्यपूर्ण कार्रवाई हो सकती है। तथ्यों की पड़ताल करें तो आयोग ने हटाव के स्पष्ट कारण बताए हैं–मृत्यु, स्थानांतरण और डुप्लिकेट नाम। लखनऊ और गाजियाबाद जैसे शहरी केंद्रों में सबसे ज्यादा नाम हटाए गए। घर-घर जाकर फॉर्म भरवाए गए और 91 प्रतिशत से अधिक मैपिंगकी गई। शेष को नोटिस भेजे जा रहे हैं। बावजूद इसके, इतनी बड़ी संख्या ने संदेह पैदा कर दिया है। क्या सभी फॉर्म न जमा करने वाले असली मतदाता नहीं हैं? आयोग का कहना है कि दावा-आपत्ति प्रक्रिया में सुधार संभव है और यह निष्पक्षता दिखाती है। विपक्ष का कहना है कि दस्तावेज जुटाने में गरीब और अनपढ़ मतदाताओं को दिक्कत होगी, जिससे लोकतंत्र की वैधता पर सवाल उठते हैं। इस संशोधन का आगामी चुनावों पर गहरा प्रभाव पड़ सकता है। उत्तर प्रदेश की 80 लोकसभा सीटें निर्णायक मानी जाती हैं। अगर वैध मतदाता भी हट गए, तो वोट प्रतिशत और चुनाव परिणाम प्रभावित हो सकते हैं। समर्थक इसे फर्जीवाड़ा रोकने का कदम मानते हैं, जबकि विपक्ष इसे वोट दबाने की रणनीति कह रहा है। एसआईआर की अवधि बढ़ने से सत्यापन बेहतर हुआ, लेकिन गरीब और अल्पसंख्यक समुदाय इससे सबसे अधिक प्रभावित हो सकते हैं। यह सवाल उठता है कि क्या प्रक्रिया पर्याप्त पारदर्शी है या नहीं। समाज पर नजर डालें तो प्रवासी मजदूर, शहरी गरीब और छोटे शहरों के मतदाता सबसे प्रभावित हुए हैं। ग्रामीण क्षेत्र भी इससे अछूते नहीं रहे। विपक्ष इसे मतदाता दमन मान रहा है। वहीं आयोग का कहना है कि मृतक नाम हटाना अनिवार्य था और यह रूटीन प्रक्रिया है। अन्य राज्यों में भी ऐसा सुधार होना चाहिए। मतदाता सूची की शुद्धता ही चुनाव की नींव है। अगर फर्जी नाम मौजूद रहें, तो लोकतंत्र कमजोर होगा। वहीं वैध नाम हटने से अन्याय होगा। जनता को जागरूक होना आवश्यक है। आगे की राह में आयोग के लिए पूर्ण पारदर्शिता

अनिवार्य हो गई है। दावा-आपत्ति की अवधि में लाखों मतदाता अपने अधिकार को सुरक्षित कर सकते हैं, और यदि कोई वैध मतदाता सूची से बाहर रह गया, तो लोकतंत्र की नींव हिल सकती है। अन्य राज्यों के अनुभव और उदाहरण हमें यह सिखाते हैं कि मतदाता सूची सिर्फ एक प्रशासनिक दस्तावेज़ नहीं, बल्कि हर नागरिक की राजनीतिक पहचान का प्रतीक है। इसलिए इसकी नियमित समीक्षा और सुधार न्यायपूर्ण, निष्पक्ष और समयबद्ध तरीके से होना चाहिए। यह संशोधन दोधारी तलवार की तरह है–2.89 करोड़ नामों के हटने ने सार्वजनिक बहस और राजनीतिक विवाद को हवा दी है। यदि हटाए गए नाम केवल फर्जी थे, तो यह लोकतंत्र की शुद्धता की दिशा में ऐतिहासिक कदम होगा। लेकिन यदि वैध मतदाता प्रभावित हुए, तो यह अधिकार और विश्वास दोनों को क्षति पहुंचा सकता है। विपक्ष को ठोस प्रमाण प्रस्तुत करने होंगे और आयोग को अपनी निष्पक्षता साबित करनी होगी। लोकतंत्र तब मजबूत रहेगा जब हर वैध वोट गिना जाएगा और किसी की आवाज़ दबाई नहीं जाएगी। यह प्रकरण याद दिलाता है कि वोट हमारा अधिकार है और सुरक्षित रहना चाहिए। समय ही बताएगा कि यह कदम लोकतंत्र की शुद्धता था या राजनीतिक खेल। उत्तर प्रदेश का यह उदाहरण हमें एक बड़ा और सशक्त सबक देता है। बड़े बदलाव सोच-समझकर और पूरी सावधानी के साथ होने चाहिए, क्योंकि हर गलती सीधे लोकतंत्र की नींव को हिला सकती है। जनता के लिए यह जिम्मेदारी बन गई है कि वह अपने नाम, अपने अधिकार और मतदाता रिकॉर्ड की खुद जांच करे। हर मतदाता जागरूक रहे, ताकि किसी की आवाज दबाई न जा सके और हर वैध वोट सुरक्षित रहे। चुनाव प्रक्रिया की पवित्रता पर ध्यान देना अब केवल प्रशासन का कर्तव्य नहीं, बल्कि हर नागरिक की अनिवार्य भूमिका बन चुकी है।

प्रो. आरके जैन

नशे की संगती, जीवन की बड़ी विपत्ति वर्तमान यथार्थ और समाधान का भविष्य

नशा मानव जीवन की उन कमजोरियों में से एक है, जिसने युगों-युगों से व्यक्ति, परिवार और समाज को भीतर से क्षीण किया है। यह केवल आधुनिक समय की समस्या नहीं है, बल्कि इसके बीज पौराणिक काल तक फैले हुए दिखाई देते हैं। किंतु यह भी उतना ही सत्य है कि भारतीय पौराणिक परंपरा ने नशे को कभी जीवन-मूल्य नहीं माना, बल्कि उसे पतन का कारण बताया और आत्मसंयम को श्रेष्ठ गुण के रूप में प्रतिष्ठित किया। पौराणिक काल में नशे का उल्लेख प्रतीकात्मक और सीमित रूप में मिलता है। देवताओं और असुरों द्वारा समुद्र मंथन से प्राप्त 'सुरा' और 'सोम' का प्रसंग प्रसिद्ध है। किंतु यह समझना आवश्यक है कि सोम कोई सामान्य नशीला पेय नहीं था, बल्कि वह यज्ञीय और औषधीय प्रयोजनों से जुड़ा दिव्य तत्व था, जिसका प्रयोग केवल विशेष अवसरों पर और संयमित रूप में होता था। इसके विपरीत, जब सुरा का प्रयोग असंयम और भोग के लिए हुआ, तो उसका परिणाम विनाशकारी सिद्ध हुआ। पुराणों में असुरों का पतन अक्सर उनकी भोगवादी प्रवृत्ति और मद्यपान से जोड़ा गया है, जो यह संकेत देता है कि नशा विवेक और मर्यादा के क्षय का कारण बनता है। महाभारत में यदुवंश का विनाश नशे के दुष्परिणामों का सबसे सशक्त उदाहरण है। द्वारका में यादवों के बीच मद्यपान से उत्पन्न उन्माद ने उन्हें आपस में ही विनाश की ओर धकेल दिया। यह प्रसंग स्पष्ट संदेश देता है कि नशा केवल व्यक्ति को नहीं, बल्कि पूरे वंश और समाज को नष्ट कर सकता है। रामायण में भी मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का जीवन पूर्ण संयम और आत्मनियंत्रण का आदर्श है। वहाँ नशा कहीं भी आदर्श जीवन का अंग नहीं बनता, बल्कि त्याग, तप और संयम को ही श्रेष्ठ माना गया है। बौद्ध और जैन परंपराओं ने तो नशे के विरुद्ध और भी स्पष्ट रुख अपनाया। भगवान बुद्ध के पंचशील में नशा न करने की प्रतिज्ञा आत्मिक जागरण की अनिवार्य शर्त है। महावीर स्वामी ने इंद्रिय संयम को मोक्ष का द्वार बताया। इन सभी परंपराओं का मूल संदेश यही है कि नशा मनुष्य को उसके लक्ष्य से भटका देता है और आत्मविकास के मार्ग में बाधा बनता है। आज के समय में नशे की समस्या कहीं अधिक विकराल रूप ले चुकी है। शराब, तंबाकू, गुटखा, अफीम और सिंथेटिक ड्रग्स ने समाज के हर वर्ग को प्रभावित किया है, विशेषकर युवा पीढ़ी को। नशा आज केवल व्यक्तिगत कमजोरी नहीं, बल्कि संगठित अपराध, बेरोजगारी, पारिवारिक विघटन और मानसिक रोगों का कारण बन चुका है। इसका प्रभाव राष्ट्र की उत्पादकता और सामाजिक ताने-बाने पर भी पड़ता है। नशे के विरुद्ध प्रभावी संघर्ष के लिए बहुआयामी प्रयास आवश्यक हैं। सबसे पहले, सामाजिक चेतना का निर्माण करना होगा। पौराणिक कथाओं और ऐतिहासिक उदाहरणों के माध्यम से यह समझाया जा सकता है कि नशा सदैव पतन का कारण रहा है। शिक्षा संस्थानों में नैतिक शिक्षा, योग, ध्यान और जीवन-कौशल को अनिवार्य किया जाना चाहिए, ताकि युवा तनाव से निपटने के लिए नशे का सहारा न लें। दूसरे, परिवार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। संवादहीनता और भावनात्मक रिक्तता नशे की ओर पहला कदम होती है। यदि परिवार बच्चों को समय, स्नेह और सही मार्गदर्शन दे, तो नशे की संभावना स्वतः कम हो जाती है। तीसरे, शासन और समाज को मिलकर नशे के व्यापार पर कठोर नियंत्रण करना होगा। केवल कानून नहीं, बल्कि पुनर्वास

और परामर्श केंद्रों का विस्तार भी आवश्यक है, ताकि नशे में फँसे व्यक्ति को अपराधी नहीं, रोगी समझकर उपचार दिया जा सके। अंततः, नशे के विरुद्ध संघर्ष एक निरंतर अभियान है, न कि एक बार का कार्यक्रम। पौराणिक काल से लेकर आज तक का अनुभव यही सिखाता है कि जहाँ संयम, विवेक और मूल्य रहे, वहाँ समाज फला-फूला; और जहाँ नशा जीवन-शैली बना, वहाँ विनाश अवश्यंभावी हुआ। आज आवश्यकता है कि हम अपने सांस्कृतिक मूल्यों की ओर लौटते हुए नशा-मुक्त, स्वस्थ और सशक्त समाज के निर्माण का संकल्प लेना होगा।

संजीव ठाकुर

विश्व राजनीति में अमेरिका की जिद और ट्रम्प की सोच शक्तिप्रदर्शन से उपजी वैश्विक बेचैनी का यथार्थ

अमेरिका की विदेश नीति लंबे समय से शक्ति के प्रदर्शन और दबाव की रणनीति पर आधारित रही है। डोनाल्ड ट्रम्प के राष्ट्रपति बनने के बाद यह प्रवृत्ति और अधिक आक्रामक रूप में सामने आई। ट्रम्प जिस विचार को मन में रखते हैं उसे लागू करने के लिए वे किसी भी हद तक जाने को तैयार दिखाई देते हैं। वेनेजुएला पर हमला इसी सोच का परिणाम माना जा रहा है। इस हमले ने न केवल लैटिन अमेरिका बल्कि पूरी दुनिया को चिंता में डाल दिया है। भारत ने भी वेनेजुएला की स्थिति पर चिंता व्यक्त की है क्योंकि दोनों देशों के संबंध पारंपरिक रूप से मैत्रीपूर्ण रहे हैं। ट्रम्प की विचारधारा मूल रूप से अमेरिका फर्स्ट की अवधारणा पर टिकी है। इस अवधारणा में सहयोग से अधिक दबाव और साझेदारी से अधिक आदेश की भावना झलकती है। ट्रम्प मानते हैं कि वैश्विक व्यवस्था में अमेरिका को सर्वोच्च रहना चाहिए और यदि इसके लिए सैन्य शक्ति आर्थिक प्रतिबंध या राजनीतिक धमकी का सहारा लेना पड़े तो वह भी उचित है। वेनेजुएला पर हमला इसी मानसिकता का प्रतीक है। वहां के राष्ट्रपति मदुरो के खिलाफ वर्षों से चल रहे अमेरिकी विरोध ने अंततः सैन्य कार्रवाई का रूप ले लिया। इस हमले में निर्दोष नागरिकों को भारी नुकसान हुआ है। मदुरो की पत्नी के घायल होने की खबर ने इस संघर्ष की मानवीय कीमत को उजागर किया है। आंख के पास लगी चोट केवल एक व्यक्ति की पीड़ा नहीं बल्कि उस समाज की पीड़ा का प्रतीक है जो महाशक्तियों की लड़ाई में पिस जाता है। युद्ध का सबसे बड़ा शिकार आम नागरिक ही बनते हैं जिनका सत्ता संघर्ष से कोई लेना देना नहीं होता। यूरोप के कई देशों ने ट्रम्प की नीतियों का खुलकर विरोध किया है। वेनेजुएला के मामले में यूरोपीय देशों ने अमेरिका के एकतरफा रवैये पर सवाल उठाए हैं। डेनमार्क के प्रधानमंत्री का बयान कि ग्रीनलैंड पर हमला हुआ तो नाटो समाप्त हो जाएगा यह दर्शाता है कि अमेरिकी तानाशाही से उसके पारंपरिक सहयोगी भी असहज हैं। यह बयान केवल एक चेतावनी नहीं बल्कि वैश्विक गठबंधनों में बढ़ती दरार का संकेत है। भारत और अमेरिका के संबंधों को अक्सर रणनीतिक साझेदारी कहा जाता है लेकिन हाल के वर्षों में इसमें भी तनाव के संकेत मिले हैं। अमेरिका द्वारा भारत से रूस से कच्चा तेल खरीदने पर आपत्ति जताना इसी का उदाहरण है। यह कहना कि अमेरिका को खुश करने के लिए भारत को अपनी ऊर्जा नीति बदलनी होगी सीधे तौर पर संप्रभुता पर सवाल है। भारत ने हमेशा स्वतंत्र विदेश नीति का पालन किया है और किसी भी दबाव में निर्णय लेने से परहेज किया है। भारत सैन्य शक्ति में किसी से कम नहीं है। उसकी रणनीतिक क्षमता और क्षेत्रीय प्रभाव को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। यदि अमेरिका की नीति केवल धमकी और दबाव तक सीमित न रहकर आक्रामक होती तो इसके गंभीर परिणाम हो सकते थे। सौभाग्य से अभी यह टकराव शब्दों और नीतिगत दबाव तक सीमित है लेकिन यह स्थिति भी चिंता पैदा करने वाली है। लैटिन अमेरिका में अमेरिका की छवि लगातार खराब हो रही है। कोलंबिया के राष्ट्रपति पेट्रो का बयान कि किसी को धमकी देना ठीक नहीं है इस असंतोष को दर्शाता है। ट्रम्प द्वारा कोलंबिया को बीमार देश कहना औपनिवेशिक मानसिकता की याद दिलाता है। यह भाषा सम्मानजनक कूटनीति के विपरीत है और इससे देशों के बीच अविश्वास बढ़ता है। यदि अमेरिका ने वेनेजुएला जैसे देशों में हस्तक्षेप जारी रखा तो वहां गुरिल्ला युद्ध भड़कने की आशंका है। इतिहास गवाह है कि बाहरी हस्तक्षेप अक्सर लंबे और रक्तरंजित संघर्ष को जन्म देता है। अफगानिस्तान और इराक इसके उदाहरण हैं जहां सैन्य विजय के दावे तो किए गए लेकिन स्थायी शांति नहीं आ सकी। अमेरिका की नीतियों का असर केवल प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित देशों तक सीमित नहीं रहता। वैश्विक अर्थव्यवस्था ऊर्जा बाजार और अंतरराष्ट्रीय राजनीति सभी इससे प्रभावित होते हैं। वेनेजुएला तेल संपदा से भरपूर देश है और वहां अस्थिरता का असर पूरी दुनिया पर पड़ता है। भारत जैसे विकासशील देशों को ऊर्जा सुरक्षा के लिए संतुलन साधना पड़ता है लेकिन अमेरिकी दबाव इस संतुलन को कठिन बना देता है। ट्रम्प की विचारधारा में कूटनीति से अधिक व्यापारिक सौदे और शक्ति का प्रदर्शन दिखाई देता है। वे रिश्तों को लाभ और हानि के तराजू पर तौलते हैं। जो देश उनकी शर्तें मानते हैं वे मित्र कहलाते हैं और जो विरोध करते हैं वे शत्रु की श्रेणी में आ जाते हैं। यह दृष्टिकोण वैश्विक सहयोग की भावना को कमजोर करता है। निर्दोष देशों और समाजों पर इस राजनीति का गहरा असर पड़ता है। युद्ध और प्रतिबंधों से आम लोगों की जिंदगी कठिन हो जाती है। बच्चों की शिक्षा रुक जाती है स्वास्थ्य सेवाएं प्रभावित होती हैं और गरीबी बढ़ती है। इन मानवीय पहलुओं पर अक्सर ध्यान नहीं दिया जाता क्योंकि सत्ता की भाषा

में केवल रणनीति और हित गिने जाते हैं। आज दुनिया बहुध्रुवीय व्यवस्था की ओर बढ़ रही है। चीन रूस भारत और यूरोपीय संघ जैसी शक्तियां अपने अपने क्षेत्र में प्रभाव बढ़ा रही हैं। ऐसे समय में अमेरिका का एकतरफा रवैया उसे अलग थलग कर सकता है। सहयोग और संवाद के बिना वैश्विक चुनौतियों का समाधान संभव नहीं है। जलवायु परिवर्तन आतंकवाद और आर्थिक असमानता जैसे मुद्दे सामूहिक प्रयास मांगते हैं। अमेरिका को यह समझना होगा कि शक्ति का स्थायी आधार नैतिकता और विश्वास होता है न कि केवल सैन्य बल। ट्रम्प की नीतियों ने अल्पकालिक दबाव तो बनाया है लेकिन दीर्घकाल में इससे अमेरिका की विश्वसनीयता को नुकसान पहुंचा है। मित्र देश भी अब सोचने लगे हैं कि क्या अमेरिकी नेतृत्व भरोसेमंद है। अंततः यह समय आत्ममंथन का है। अमेरिका यदि सच में वैश्विक नेतृत्व चाहता है तो उसे तानाशाही के स्थान पर साझेदारी का मार्ग चुनना होगा। वेनेजुएला भारत कोलंबिया या यूरोप सभी यह संकेत दे रहे हैं कि दुनिया अब आदेश नहीं संवाद चाहती है। निर्दोष लोगों की पीड़ा को समझे बिना बनाई गई नीतियां इतिहास में कठोर रूप से आंकी जाएंगी।

कांतिलाल मांडोत

कड़ाके की सर्दी में इंसानियत की कसौटीरैन बसेरे

कागज़ से बड़ा जीवन, व्यवस्था से बड़ा करुणा का सवाल

कड़के की सर्दी जब अपने चरम पर होती है, जब तापमान एकल अंक में उतर जाता है और ठंडी हवाएं शरीर के आर-पार हो जाती हैं, तब सबसे बड़ा सवाल यह नहीं रह जाता कि किसी के पास कौन सा दस्तावेज है, बल्कि यह बन जाता है कि क्या वह रात सुरक्षित और गर्म जगह पर काट पाएगा या नहीं। राजस्थान के कोटा, भीलवाड़ा, जोधपुर, भरतपुर, उदयपुर और बीकानेर जैसे शहरों से सामने आई तस्वीरें बताती हैं कि रैन बसेरे इस समय जरूरतमंदों के लिए राहत का नहीं, बल्कि संघर्ष का प्रतीक बनते जा रहे हैं। कहीं रैन बसेरे खचाखच भरे हैं, कहीं ताले लटके हैं, कहीं बिस्तर टूटे पड़े हैं और कहीं सिर्फ इस वजह से लोगों को बाहर कर दिया जा रहा है कि उनके पास आधार कार्ड नहीं है। कोटा में जब तापमान 8.8 डिग्री तक पहुंच गया, तब किशोर तालाब की पाल पर बने रैन बसेरे में जगह न मिलने के कारण करीब दो दर्जन श्रमिक खुले आसमान के नीचे सोने को मजबूर दिखे। रिक्शा चालक धन्नालाल जैसे लोग बताते हैं कि रैन बसेरे में जगह नहीं मिलती, इसलिए पुलिया की छत के नीचे या तालाब की पाल पर ही रात गुजारनी पड़ती है। यह दृश्य सिर्फ कोटा का नहीं है। भीलवाड़ा में कई रैन बसेरों पर सुरक्षा के नाम पर ताले लटके मिले, कहीं नशेड़ियों ने डेरा डाल रखा था और वास्तविक जरूरतमंद बाहर ठंड में ठिठुरते रहे। जोधपुर में क्षमता से अधिक लोगों के आने पर एक ही बिस्तर पर दो-दो लोगों को सोते देखा गया। उदयपुर में कुछ जगह व्यवस्था बेहतर दिखी, लेकिन कई स्थानों पर पलंग टूटे हुए थे और मजदूर बस स्टैंड या दुकानों के बाहर खुले में सोने को मजबूर थे। सबसे पीड़ादायक पहलू यह है कि कई शहरों में आधार कार्ड या किसी पहचान पत्र के अभाव में लोगों को रैन बसेरे में प्रवेश नहीं दिया जा रहा। तलवंडी में महिलाएं बच्चों के साथ फ्लाईओवर के नीचे अलाव तापती दिखीं, क्योंकि उनके पास आधार कार्ड नहीं था। भरतपुर में दिव्यांग रवि कुमार और धर्मेंद्र मीणा जैसे लोगों ने बताया कि आधार कार्ड न होने की वजह से उन्हें रैन बसेरे से लौटा दिया गया। सवाल यह है कि क्या ठंड से बचने के लिए किसी दस्तावेज की अनिवार्यता इंसान की जान से बड़ी हो सकती है। जब कोई व्यक्ति फुटपाथ पर सोने को मजबूर है, तो यह साफ संकेत है कि वह पहले से ही समाज के सबसे कमजोर तबके में है। ऐसे में उससे कागज़ मांगना संवेदनहीनता की पराकाष्ठा नहीं तो और क्या है। रैन बसेरे मूल रूप से इसी सोच के साथ बनाए गए थे कि कोई भी व्यक्ति, चाहे वह मजदूर हो, रिक्शा चालक हो, बेसहारा बुजुर्ग हो, महिला हो या बच्चा, सर्द रात में सुरक्षित जगह पा सके। सुप्रीम कोर्ट और विभिन्न सरकारी दिशानिर्देशों में भी स्पष्ट किया गया है कि आपात स्थितियों में आश्रय देने में पहचान पत्र को बाधा नहीं बनाया जाना चाहिए। इसके बावजूद जमीनी हकीकत यह है कि प्रशासनिक सुविधा और नियमों की आड़ में मानवीय संवेदना को पीछे छोड़ दिया जाता है। कागज़ों में दर्ज योजनाएं तब बेमानी हो जाती हैं, जब ठंड में कोई व्यक्ति कांपते हुए कहता है कि हमारे पास आधार कार्ड नहीं है, इसलिए हमें अंदर नहीं जाने दिया गया। यह समस्या सिर्फ राजस्थान तक सीमित नहीं है। देश के अन्य राज्यों में भी सर्दियों के दौरान रैन बसेरों की स्थिति लगभग ऐसी ही देखने को मिलती है। दिल्ली में हर साल सर्दी बढ़ते ही फुटपाथों, बस स्टैंडों और रेलवे स्टेशनों पर सोने वालों की संख्या बढ़ जाती है। नगर निगम और राज्य सरकारें रैन बसेरे खोलने का दावा तो करती हैं, लेकिन कई बार क्षमता कम पड़ जाती है या व्यवस्थाएं नाकाफी होती हैं। उत्तर प्रदेश के बड़े शहरों जैसे लखनऊ, कानपुर और वाराणसी में भी ठंड के मौसम में यह सवाल उठता रहा है कि क्या सभी जरूरतमंदों को वास्तव में आश्रय मिल पा रहा है। बिहार, मध्य प्रदेश और हरियाणा जैसे राज्यों में भी रैन बसेरों की संख्या और गुणवत्ता को लेकर समय-समय पर सवाल उठते रहे हैं। मुंबई जैसे महानगर में, जहां सर्दी राजस्थान जितनी तीखी नहीं होती, वहां भी बेघर लोगों के लिए रैन बसेरे पर्याप्त नहीं हैं। कोलकाता में भी कई सामाजिक संगठनों को आगे आकर अस्थायी आश्रय और कंबल वितरण की जिम्मेदारी उठानी पड़ती है, क्योंकि सरकारी व्यवस्था हर जरूरतमंद तक नहीं पहुंच पाती। यह स्थिति बताती है कि रैन बसेरा सिर्फ एक इमारत नहीं, बल्कि एक सोच है, और जब तक इस सोच के केंद्र में इंसान को नहीं रखा जाएगा, तब तक समस्या बनी रहेगी। कड़ाके की सर्दी में व्यवस्था करना प्रशासन का दायित्व ही नहीं, बल्कि नैतिक जिम्मेदारी भी है। नगर निगम, जिला प्रशासन और राज्य सरकारें अक्सर बजट, नियम और प्रक्रिया की बात करती हैं, लेकिन सर्द रात में ठंड से कांपते व्यक्ति के लिए ये तर्क अर्थहीन हो जाते हैं। रैन बसेरों की संख्या बढ़ाना, उनकी क्षमता के अनुसार बिस्तर, कंबल, रजाई और हीटर जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराना और सबसे अहम बात यह सुनिश्चित करना कि किसी भी व्यक्ति को पहचान पत्र के अभाव में बाहर न किया जाए, यह सब प्रशासन के प्राथमिक कर्तव्यों में होना चाहिए। यह भी जरूरी है कि रैन बसेरों की नियमित निगरानी हो। कई

जगह ताले लटके मिलने का अर्थ यह है कि व्यवस्था सिर्फ कागज़ों में है। कहीं निजी आश्रय स्थल पूरी तरह भरे हैं, तो सरकारी आश्रय स्थल आधे खाली पड़े हैं, यह असंतुलन भी गंभीर सवाल खड़े करता है। सुरक्षा के नाम पर आईडी जमा कराने की शर्तें तब तक ठीक लग सकती हैं, जब तक वे किसी को ठंड में मरने के लिए मजबूर न कर दें। आपात स्थिति में अस्थायी रजिस्ट्रेशन, नाम और फोटो के आधार पर भी व्यवस्था की जा सकती है। समाज के स्तर पर भी यह हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है कि हम इस मुद्दे को सिर्फ खबर बनकर न छोड़ दें। जिस तरह गर्मी में पानी और छांव की बात होती है, उसी तरह सर्दी में आश्रय और गर्म कपड़ों की बात होनी चाहिए। कई स्वयंसेवी संगठन और सामाजिक कार्यकर्ता इस दिशा में काम कर रहे हैं, लेकिन उनकी पहुंच सीमित है। स्थायी समाधान तभी संभव है, जब सरकारी तंत्र पूरी संवेदनशीलता के साथ आगे आए। रैन बसेरे किसी पर एहसान नहीं हैं, बल्कि यह उस न्यूनतम मानवीय अधिकार का हिस्सा हैं, जिसके बिना सभ्य समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। जब कोई व्यक्ति कहता है कि हमारे पास आधार कार्ड नहीं है, इसलिए हमें अंदर नहीं जाने दिया गया, तो यह सिर्फ उसकी पीड़ा नहीं, बल्कि हमारी व्यवस्था की असफलता का बयान होता है। सर्द रातों में यह तय करना कि कौन दस्तावेज के योग्य है और कौन नहीं, यह इंसानियत के खिलाफ जाता है। आज जरूरत इस बात की है कि रैन बसेरों को सिर्फ एक सरकारी योजना के रूप में नहीं, बल्कि मानवीय संवेदना के प्रतीक के रूप में देखा जाए। चाहे राजस्थान हो या कोई अन्य राज्य, चाहे महानगर हो या छोटा शहर, सर्दी सबके लिए एक जैसी होती है। ठंड यह नहीं पूछती कि आपके पास आधार कार्ड है या नहीं। ऐसे में प्रशासन और समाज को भी यह सवाल छोड़ देना चाहिए। एक बार इंसानियत के नाते, बिना किसी शर्त के, हर जरूरतमंद को रैन बसेरे में जगह दी जानी चाहिए। यही किसी भी सभ्य और संवेदनशील समाज की असली पहचान है।

कांतिलाल मांडोत

स्वामी-स्वतंत्र प्रभात मीडिया, मुद्रक एवं प्रकाशक प्रीती शुक्ला द्वारा अनवर ऑफसेट एम- 58, 59 बेसमेंट विकासदीप बिल्डिंग स्टेशन रोड लखनऊ से मुदित ई-4 सेक्टर-एम/29 अपोजिट उमान एन्क्लेव अलीगंज लखनऊ 226024 से प्रकाशित संपादक-राजीव कुमार शुक्ला , मो0-9511151254 Mail: news@swatantraprabhat.com, RNI No: UPHIN/2019/79073 इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी आर वी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। किसी भी कानूनी विवाद का निपटारा न्यायलय जनपद लखनऊ ही होगा।

संक्षिप्त खबरें

सांसद खेल स्पर्धा का आयोजन मल्हना मलहनी स्पोर्ट्स स्टेडियम में आज से

देवरिया। लोकसभा क्षेत्र सलेमपुर अंतर्गत आयोजित विधायक खेल स्पर्धा में विजेता रहे खिलाड़ी एवं टीमें अब सांसद खेल स्पर्धा में प्रतिभाग करेंगी। मुख्य विकास अधिकारी राजेश सिंह ने बताया कि सांसद खेल स्पर्धा का आयोजन मल्हना मलहनी स्पोर्ट्स स्टेडियम, भाटपार रानी में किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि सांसद खेल स्पर्धा के अंतर्गत विधानसभा स्तर पर कुल आठ खेल विधाओं में विभिन्न आयु वर्ग के महिला एवं पुरुष खिलाड़ियों की प्रतियोगिताएं आयोजित होंगी। इनमें एथलेटिक्स, वॉलीबॉल, कबड्डी, फुटबॉल, भारोत्तोलन, जूडो, कुश्ती एवं बैडमिंटन शामिल हैं। कार्यक्रम के अनुसार वॉलीबॉल, फुटबॉल, बैडमिंटन एवं कुश्ती प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी, जबकि 9 जनवरी को प्रातः 9 बजे से कबड्डी, एथलेटिक्स, भारोत्तोलन एवं जूडो प्रतियोगिताएं प्रारंभ होंगी। आयोजन का उद्देश्य युवाओं में खेल प्रतिभा को प्रोत्साहित करना है।

कपकपाती ठंड में कम्बल पाकर ग्रामीणों में खुशी की लहर

सहजनवां ब्लॉक के ग्राम पंचायत कटाइटिकर में बिगत वर्षो की भांति इस वर्ष भी ग्राम प्रधान प्रतिनिधि देवानन्द यादव द्वारा 500 लोगो को कम्बल वितरित किया गया जिससे ग्रामीणों के चेहरे खिल उठे। प्रधान जी का कहना है कि गरीब, असहाय तथा वंचित लोगों की मदद करने में हमें प्रसन्नता होती है। जब भी मौका मिलता है हम ऐसे लोगों की सहायता के लिए तत्पर रहते हैं। ग्रामीणों का कहना है कि प्रधान जी हम लोगों की सहायता के लिए हमेशा तैयार रहते हैं जब भी जरूरत होती है वह हमारी मदद जरुर करते हैं।इस कार्यक्रम में समाजसेवी रामआशीष ग्राम प्रधान प्रत्याशी रामपुर गढ़थौली भी मौजूद रहे। वही सम्भ्रांत लोगो मे कालिंदी देवी ग्राम प्रधान (कटाइटिकर), गिरजेश मिश्र, सुरेन्द्र नाथ मिश्र,रामबाबू मिश्रा, दुर्विजय यादव, गुड्डु यादव, झिनक गौड, हरिलाल चौहान, राम मचल हरिजन, राजेंद्र शर्मा सहित अनेक ग्रामीण लोग मौजूद रहे।

कोहरे के कारण ट्रेन की चपेट में आने से ट्रैकमैन की मौत

सहजनवां – गोरखपुर लखनऊ रेल खंड पर घने कोहरा के कारण ट्रेन की चपेट में आने से ट्रैकमैन की मौत हो गई। मृतक की पहचान गोंडा जनपद निवासी 25 वर्षीय सदीप सिद्धार्थ के रूप में हुई और वह रेलवे में ई निविदा के जरिए कार्यरत था। मऊ जनपद के मुहम्मदाबाद थाना क्षेत्र जामपुर निवासी विजय साहनी ने पुलिस को दिए तहरीर में बताया कि वह रेलवे में एक निजी फर्म के माध्यम से ट्रैकमैन का काम करते है। बताया कि सहयोगी अनुराग सिंह और संदीप सिद्धार्थ के साथ मगहर से रेलवे ट्रैक पर कार्य करते हुए सहजनवां के तरफ आ रहे थे। घना कोहरा होने के कारण दिखाई कम दे रहा है। अचानक पीछे से ट्रेन आ गई और सहयोगी 25 वर्षीय संदीप सिद्धार्थ निवासी रानीजोत अयाह थाना इटियाथोक जनपद गोंडा देख नहीं पाया और ट्रेन की चपेट में आ गया। इससे संदीप की मौके पर ही मौत हो गई। थानाध्यक्ष महेश चौबे ने कहा कि सूचना के बाद शव का पोस्टमार्टम कराया जा रहा है। मौत का कारण स्पष्ट हो जाएगा।

मिशन शक्ति फेज-5.0 व 'शक्ति दीदी' अभियान के किया जागरूक

देवरिया। महिलाओं व बालिकाओं की सुरक्षा एवं सशक्तिकरण को लेकर पुलिस अधीक्षक संजीव सुमन के निर्देशन में जनपद के समस्त थानों की मिशन शक्ति व एंटी रोमियो टीमों द्वारा 'मिशन शक्ति फेज-5.0' एवं 'शक्ति दीदी' अभियान चलाया गया। थाना बरियारपुर व भटनी सहित विभिन्न क्षेत्रों में छात्राओं, महिलाओं व बच्चियों को डायल-112, 1090, 181, 1098, 1930 सहित अन्य हेल्पलाइन नंबरों की जानकारी दी गई तथा पंपलेट वितरित किए गए। पुलिस टीमों ने महिला सुरक्षा, साइबर अपराध व सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूक किया।

गोला विस्तारित क्षेत्रों में बंद पड़े सार्वजनिक शौचालय, नगर पंचायत गोला की उदासीनता उजागर

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ग़ोला -गोरखपुर- जनपद के दक्षिणांचल में स्थित जिले की दूसरी सबसे बड़ी नगर पंचायत गोला में स्वच्छता व्यवस्था को लेकर किए जा रहे दावे जमीनी हकीकत से कोसों दूर नजर आ रहे हैं। स्वच्छ भारत मिशन के तहत लाखों रुपये खर्च कर बनाए गए सार्वजनिक शौचालय आज खुद बदहाली की तस्वीर पेश कर रहे हैं। हालात यह हैं कि नगर पंचायत के विस्तारित क्षेत्रों में बने कई सार्वजनिक शौचालय वर्षों से बंद पड़े हैं, जिससे आमजन खुले में शौच को मजबूर है और पवित्र सरयू नदी लगातार प्रदूषण की चपेट में आ रही है। नगर पंचायत गोला में एक ओर जहां शौचालयों से निकलने वाला मल-मूत्र सीधे सरयू नदी में गिराया जा रहा है, वहीं दूसरी ओर स्वच्छता के प्रतीक सार्वजनिक शौचालयों पर हमेशा ताले लटके रहते हैं। कागजों में केयर टेकरों की नियुक्ति दर्शाई जाती है, लेकिन जमीनी स्तर पर न तो शौचालय खुले हैं और न ही उनकी देखरेख हो रही है।

सबसे खस्ता हाल विस्तारित क्षेत्रों का है। वार्ड नंबर 4 भवनियापुर में स्थित सार्वजनिक शौचालय का निर्माण लगभग चार वर्ष पूर्व ग्राम सभा के समय कराया गया था। नगर पंचायत में शामिल होने के बाद लाखों रुपये खर्च कर इसमें टाइल्स और सौंदर्यीकरण कराया गया, लेकिन आज तक यह शौचालय आम जनता के उपयोग के लिए नहीं खोला गया। स्थानीय लोगों का कहना है कि मरम्मत केवल कागजों तक सीमित रही। इस संबंध में वार्ड सभासद संदीप सोनकर ने अनभिज्ञता जताते हुए जांच की बात कही, जबकि लोगों का आरोप है कि जनप्रतिनिधियों की उदासीनता के कारण समस्या जस की तस बनी हुई है। वार्ड नंबर 10 की स्थिति भी बेहद चिंताजनक है। रानीपुर, अतरौरा सब्जी मंडी और सरकारी पशु चिकित्सालय के सामने बने तीनों सार्वजनिक शौचालय हमेशा बंद रहते हैं। इसी तरह वार्ड नंबर 11 बेवरी में बना सार्वजनिक शौचालय भी वर्षों से बंद पड़ा है। ये सभी शौचालय विस्तारित क्षेत्रों में आते हैं, जो नगर पंचायत की अव्यवस्था और लापरवाही का स्पष्ट प्रमाण हैं।

स्थानीय नागरिकों का कहना है कि स्वच्छता के नाम पर करोड़ों रुपये खर्च किए जा रहे हैं, योजनाओं का खूब प्रचार हो रहा है, लेकिन धरातल पर कोई ठोस बदलाव नजर नहीं आ रहा। सभासदों, चेयरमैन और अधिशासी अधिकारी की निष्क्रियता का खामियाजा आम जनता को भुगतना पड़ रहा है। खुले में शौच से न सिर्फ बीमारियों का खतरा बढ़ रहा है, बल्कि सरयू नदी का पर्यावरण भी गंभीर संकट में है। लोगों ने मांग की है कि बंद पड़े सार्वजनिक शौचालयों को तत्काल चालू कराया जाए, सरयू नदी में गिर रहे गंदे पानी पर रोक लगाई जाए और विस्तारित क्षेत्रों में स्वच्छता व्यवस्था को प्राथमिकता दी जाए, ताकि स्वच्छता अभियान केवल कागजी दावा बनकर न रह जाए।

साइबर ठगों से सावधान रहने के लिए खोड़ारे पुलिस ने ग्राम पंचायत पिपरा बारा खां में लगाई 'चौपाल'

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मनकापुर गोण्डा- पुलिस अधीक्षक गोण्डा के निर्देशन में चलाए जा रहे साइबर जागरूकता अभियान के क्रम में, थाना खोड़ारे के साइबर प्रभारी द्वारा ग्राम पिपरा बारा खां में एक 'ग्राम चौपाल' का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य ग्रामीणों को डिजिटल युग में बढ़ रहे साइबर अपराधों के प्रति सचेत और जागरूक करना था। जागरूकता के मुख्य बिंदुःचौपाल के दौरान साइबर प्रभारी ने ग्रामीणों को सरल भाषा में साइबर सुरक्षा के महत्वपूर्ण बिन्दुओ से संबंधित जानकारी देते हूए बताया कि अनजान लिंक से बचें: किसी भी अनजान व्हाट्सएप मैसेज या ईमेल पर आए संदिग्ध लिंक को क्लिक न करें, OTP साझा न करें: बैंक अधिकारी बनकर आने वाली फर्जी कॉल्स से सावधान रहें और अपना ओटीपी (OTP) या पिन किसी को न बताएं।, लालच में न आएं: भारी इनाम या लॉटरी के झांसे में आकर अपनी व्यक्तिगत जानकारी साझा न करें,साइबर हेल्पलाइन 1930: यदि कोई व्यक्ति साइबर ठगी का शिकार होता है, तो वह तत्काल भारत सरकार की हेल्पलाइन नंबर 1930 पर कॉल करें या www.cybercrime.gov.in पर अपनी शिकायत दर्ज कराएं। पुलिस आपकी सेवा में सदैव तत्पर:आगे उन्होंने उपस्थित ग्रामीणों को संबोधित करते हुए साइबर प्रभारी ने कहा कि 'साइबर सुरक्षा ही बचाव है।' उन्होंने ग्रामीणों को विश्वास दिलाया कि पुलिस उनकी सुरक्षा के लिए सदैव तत्पर है और किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना तुरंत थाने में दें।इस अवसर पर उपनिरीक्षक ज्ञानेन्द्र शुक्ला,आरक्षी आदर्श वर्मा ,महिला आरक्षी वंदना अग्निहोत्री सहित भारी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे,जिन्होंने साइबर सुरक्षा के नियमों का पालन करने का संकल्प लिया।

पुलिस का चला मार्निंग वॉकर चेकिंग अभियान

देवरिया। पुलिस अधीक्षक संजीव सुमन के निर्देशन में जनपद में शांति व सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से बुधवार को प्रातः 5 बजे से 8 बजे तक 'मार्निंग वॉकर चेकिंग अभियान' चलाया गया। अभियान के तहत सभी थाना प्रभारी व थानाध्यक्षों ने आमजन से सीधा संवाद स्थापित कर सुरक्षा का भरोसा दिलाया। इस दौरान संदिग्ध व्यक्तियों व वाहनों की चेकिंग की गई। पुलिस ने चोरी की गाड़ियों की जांच, तीन सवारी, मोडिफाइड साइलेंसर, नाबालिगों द्वारा वाहन चलाने सहित विभिन्न उल्लंघनों पर कार्रवाई की। जनपद में कुल 19 स्थानों पर चेकिंग के दौरान 343 व्यक्तियों व 199 वाहनों की जांच की गई। आमजन ने पुलिस की इस पहल की सराहना करते हुए सुरक्षा व्यवस्था पर संतोष व्यक्त किया।

अपना दल एस की मासिक बैठक सम्पन्न

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

गोण्डा – अपना दल एस इकाई गोण्डा की मासिक बैठक मुख्य अतिथि राम नरेश पटेल प्रदेश सचिव सहकारिता मंच की उपस्थिति मे सरदार बल्लभ भाई पटेल संस्थान गोण्डा मे जिला अध्यक्ष राम दीन वर्मा के अगुवाई मे जिला इकाई गोण्डा एवं मंडल अध्यक्ष राकेश वर्मा की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुवा जिसमेराष्ट्रीय कार्यकारिणी मे नव नियुक्त पदाधिकारियों को फूल माला से स्वागत किया और पदाधिकारियों को पार्टी के नीतियों को अवगत कराया गया इस अवसर पर अभिमन्यु पटेल प्रदेश सचिव ने कहा कि आप लोगो को राष्ट्रीय कार्यकारिणी के जिला स्तर पर पदाधिकारियों का तहे दिल से स्वागत करता हुँ और आप लोगो के जुड़ने से पार्टी मे और मजबूती आएगा। जिला अध्यक्ष अपना दल एस राम दीन पटेल ने सभी नव नियुक्त पदाधिकारियों को बधाई देते हूए पार्टी के नीतियों को जन जन तक पहुंचाने के लिए प्रेरित किया। जिलाध्यक्ष

महिला प्रकोष्ठ दिशा वर्मा ने सभी पदाधिकारियों का आभार व्यक्त करते हूए कहा कि हम लोग पार्टी के नीतियों का पालन करते हूए पार्टी को मजबूत करने का प्रयास किया जाएगा जिला महासचिव परशुराम वर्मा ने सभी नव नियुक्ति पदाधिकारियों को बधाई देते हूए कहा कि पार्टी के निर्देशानुसार उक्त तिथि पर होने वाले बैठकों मे सभी पदाधिकारियों को उपस्थित होना अनिवार्य है राम प्रगट पटेल राष्ट्रीय सलाहकार, विधानसभा अध्यक्ष रवि पटेल तरबगंज, विद्या सागर पटेल गौरा विधानसभा विधानसभा अध्यक्ष सहित कई पदाधिकारियों के द्वारा सम्बोधित किया गया।

बिरधा में क्षेत्र पंचायत की बैठक हुई सम्पन्न

● विकास खण्ड परिसर में कायाकल्प का हुआ भव्य लोकार्पण

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बिरधा। विकास खण्ड बिरधा के लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल सभागार में क्षेत्र पंचायत की बैठक प्रमुख क्षेत्र पंचायत मोहित निरंजन की अध्यक्षता में आयोजित हुई जिसमे मुख्य अतिथि के रूप में रामरतन कुशवाहा सदर विधायक मौजूद रहे कार्यक्रम में सर्वप्रथम मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर पुष्प अर्पित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया सर्वप्रथम पुरानी बैठक की कार्यवाही पढ़कर सुनाई गई बैठक में विभिन्न विभागों के अधिकारियों ने सरकार द्वारा संचालित विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी जिसमे मातादीन यादव द्वारा दिव्यांग जन पेंशन योजना वृद्धावस्था पेंशन योजना विधवा पेंशन योजना के अलावा मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना एवम राष्ट्रीय पारिवारिक लाभ के बारे में जानकारी दी स्वास्थ विभाग के अधिकारी द्वारा बताया गया कि प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना आयुष्मान कार्ड के द्वारा 5 लाख का मुफ्त इलाज भारत सरकार द्वारा कराया जा रहा है जननी शिशु सुरक्षा योजना एवम 108 एंबुलेंस और 102 एंबुलेस स्वास्थ विभाग द्वारा चलाई जा रही है बैठक में सदर विधायक रामरतन कुशवाहा ने मनरेगा योजना की जगह वीबी जी राम जी योजना के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी देते हुए बताया कि सरकार द्वारा 125 दिन के

रोजगार की गारंटी दी जा रही है इसमें पंचायत की स्थायी संपत्ति भी सृजित होगी और लोगो को रोजगार के अवसर भी प्रदान होंगे साथ ही साथ एक सप्ताह के अंदर मजदूरी का भुगतान किया जायेगा सदर विधायक ने कहा कि सभी ग्राम प्रधान अपने अपने क्षेत्र में गरीब व्यक्तियों को कंबल वितरित जरूर करे यह बहुत ही पुण्य का काम है ब्लॉक प्रमुख मोहित निरंजन ने कहा कि सभी जनप्रतिनिधि अपने अपने क्षेत्र में सरकार द्वारा संचालित विभिन्न जन हितैषी योजनाओं का लाभ हर पात्र व्यक्ति को दिलाने का प्रयास करे और अपने क्षेत्र के विकास में योगदान दे यह चुनावी वर्ष है आपके द्वारा किए गए अच्छे कार्यो के अनुसार ही जनता निर्णय करेगी। साथ ही साथ शीत लहर से बचाव के लिए क्षेत्र में अलाव भी जलवाए और अपने घर परिवार के बुजुर्गो और बच्चों का ध्यान रखे।

शिक्षा विभाग और बिजली विभाग के अधिकारी बैठक से रहे नदारद

विकासखंड बिरधा में क्षेत्र पंचायत की बैठक में शिक्षा विभाग और बिजली विभाग के कोई भी अधिकारी उपस्थित नहीं रहे यह पहली बार नहीं हुआ है जब शिक्षा विभाग और बिजली विभाग के अधिकारी क्षेत्र पंचायत की बैठक में न आए हो दरअसल प्रमुख क्षेत्र पंचायत प्रमुख के सरल और सौम्य स्वभाव का फायदा उठाकर वह जानबूझकर क्षेत्र पंचायत की बैठक में नही आते है क्योंकि ग्रामीण क्षेत्र में सरकारी शिक्षक समय से नहीं आते और बिजली की लगातार हो रही कटौती और बिजली विभाग की मनमानी पर जनप्रतिनिधि उन्हे घेर न ले इस डर के कारण वह बैठक में ही नही आते है।

विकास खण्ड का हुआ कायाकल्प

विकासखंड बिरधा परिसर में लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल सभागार में सीलिंग और कार्यालय खण्ड विकास अधिकारी में वी सी रूम का शुभारंभ मोहित निरंजन ने फीता काटकर किया साथ ही साथ कार्यालय खण्ड विकास अधिकारी में ए सी पी सीट और भवन का कायाकल्प मुख्य प्रवेश द्वार की सजावट सहित विभिन्न कार्यो का लोकार्पण जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में किया गया इस अवसर पर जयराम सिंह निरंजन पूर्व ब्लॉक प्रमुख बिरधा इरशाद अहमद खण्ड विकास अधिकारी महेश शर्मा सहायक विकास अधिकारी दौलत राम साहू प्रधान बालाबेहट रामेश्वर राजपूत प्रधान रूपेश जैन महेश नगाइज सहित क्षेत्र पंचायत सदस्य और ग्राम प्रधान मौजूद रहे।

विवादित मकान में प्रशासन ने जड़ा ताला विवाद को कराया शांत

●2012 सत्ता के दवाब में भूमि कब्जा कर बना लिया था मकान

पीड़ित पक्ष मकान का ताला तोड़कर घुसा था मकान में

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सहजनवां तहसील क्षेत्र के अनंतपुर चौराहे पर एक स्थित एक विवादित मकान का कब्जा को लेकर तुल पकड़ता देखकर प्रशासन ने मकान में ताला जड़ दिया है। और प्रशासन ने दोनों पक्षों से शांति व्यवस्था कायम करने की अपील किया है। बताते चले कि आराजी संख्या 398 में 26

डिसमिल भूमि सुशीला देवी पत्नी मिठाईलाल,शिमिरित लाल पुत्र संतराज,तपेसरा देवी पत्नी शिमिरित लाल ने बैनामा कराकर चारदीवारी चला लिया था। वहीं विपक्षी माधुरी देवी पत्नी मेवालाल, सांभा देवी पत्नी ओम प्रकाश, सुनील यादव पुत्र राम कृपाल यादव ने आराजी 401 में बैनामा कराया था। मिठाईलाल ने धारा 24 के तहत पत्थर नसब कराया था। जिसको तहसील प्रशासन द्वारा कब्जा दिलाया गया था। 2014 में विपक्षी सत्ता के हनक पर मिठाईलाल ने भूमि कब्जा कर लिया था। कब्जा करने की लड़ाई दोनों पक्षों में कई वर्षों से चल रही थी। करीब दो दिन पहले माधुरी देवी का परिवार घर में ताला मारकर कही चला गया था। मौका पाकर मिठाईलाल ने ताला खोल कर घर में परिवार सहित घुस गया था। जिसको लेकर प्रशासन काफी गंभीर था। बुधवार को नायब तहसीलदार राम सूरज और राजस्व टीम पुलिस के साथ मौके पर पहुंचे। स्थित गंभीर होते देखकर कर मकान के अन्य जो भी व्यक्ति थे उसे बाहर निकाल कर शांति व्यवस्था कायम करने के लिए ताला जड़ दिया।

इस संदर्भ में नायब तहसीलदार राम सूरज ने कहा कि शांति व्यवस्था कायम करने के लिए ताला जड़ा गया है। और दोनों पक्षों को एसडीएम सहजनवां के यहां कागजात लाने को निर्देशित किया गया है।

दहेज उत्पीड़न व मारपीट का आरोप, पति समेत तीन के खिलाफ मुकदमा दर्ज

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

गोलाबाजार गोरखपुर । गोला थाना क्षेत्र के ग्राम पहाड़पुर निवासी एक विवाहिता ने अपने पति व ससुराल पक्ष पर दहेज की मांग, मारपीट और जान से मारने की धमकी देने का गंभीर आरोप लगाया है। पीड़िता की तहरीर के पर पुलिस ने सुसंगत धाराओं में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।प्राप्त विवरण के अनुसार पीड़िता साधना पत्नी विनय कुमार ने पुलिस को दिए गए प्रार्थना पत्र में बताया कि उसकी शादी करीब तीन वर्ष पूर्व हुई थी और उसका एक 10 माह का पुत्र भी है। आरोप है कि शादी के बाद से ही पति विनय कुमार, ससुर लालधारी और सास माला देवी द्वारा लगातार दहेज की मांग की जाती रही। मांग पूरी न होने पर उसे मानसिक और शारीरिक रूप से प्रताड़ित किया जाता था। पीड़िता के अनुसार बीते 5 जनवरी की रात करीब 9 बजे दहेज की बात को लेकर तीनों आरोपियों ने उसे ताना मारते हुए गाली-गलौज शुरू कर दी। विरोध करने

पर लात-मुक्का व थप्पड़ों से मारपीट की गई, जिससे उसकी पीठ, कमर, पेट और आंख में गंभीर चोटें आई। आरोप है कि मारपीट के साथ उसे जान से मारने की धमकी भी दी गई। पीड़िता ने बताया कि कई बार समझाने के बावजूद ससुराल पक्ष का व्यवहार नहीं बदला, जिसके बाद मजबूर होकर उसने पुलिस की शरण ली। मामले में बीएनएस की धारा 85, 115(2), 352, 351(3) तथा दहेज प्रतिषेध अधिनियम 1961 की धारा 3 व 4 के तहत मुकदमा दर्ज किया गया है। इस संबंध में थाना प्रभारी निरीक्षक राहुल शुक्ल ने बताया पीड़िता की तहरीर के मुताबिक मुकदमा दर्ज कर लिया गया है।

बैतालपुर चीनी मिल को शीघ्र चलाने तथा किसान हित से जुड़ी 16 सूत्रीय मांगों को लेकर धरना 1 वर्ष 342वें दिन भी जारी रहा

देवरिया। चीनी मिल चलाओ संघर्ष समिति, संयुक्त पंचायत निकाय मोर्चा एवं संयुक्त महा मोर्चा के तत्वावधान में बैतालपुर चीनी मिल को शीघ्र चलाने तथा किसान हित से जुड़ी 16 सूत्रीय मांगों को लेकर कलेक्ट्रेट परिसर में चल रहा धरना बुधवार को 1 वर्ष 342वें दिन भी जारी रहा। कड़ाके की ठंड के बावजूद किसान धरना स्थल पर डटे रहे और अलाव जलाकर आंदोलन को जारी रखा। धरना सभा को संबोधित करते हुए क्रांतिकारी किसान सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष विकास दुबे ने कहा कि बैतालपुर चीनी मिल का मुद्दा पूर्वांचल का सबसे बड़ा किसान आंदोलन बन चुका है, जिसे व्यापक जनसमर्थन प्राप्त है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री द्वारा मिल चलाने की चार बार घोषणा किए जाने के बावजूद अब तक वादा पूरा नहीं हुआ, जो किसानों के साथ अन्याय है। धरने में बृजेंद्र मणि त्रिपाठी, वेद प्रकाश, विनय मिश्रा, शंभू नाथ तिवारी, मंजू चौहान सहित अनेक किसान मौजूद रहे।

तेलगुडवा कोन सडक निर्माण मे देरी को लेकर अपना दल एस ने अधिशासी अभियंता को सौंपा ज्ञापन

●अच्छी रोड और समय से बने रोड- आनन्द पटेल दयालु

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सोनभद्र/ उत्तर प्रदेश- तेलगुडवा से कोन तक सडक निर्माण कार्य मे हो रही अत्यधिक देरी को लेकर लोक निर्माण विभाग पर दबाव बढता जा रहा है ।इसी क्रम मे प्रदेश उपाध्यक्ष युवा मंच अपना दल एस आनन्द पटेल दयालु के नेतृत्व मे अधिशासी अभियंता लोक निर्माण विभाग को ज्ञापन सौंपा गया। ज्ञापन मे बताया गया कि उक्त सडक निर्माण कार्य का टेंडर लगभग एक वर्ष पूर्व हो चुका है लेकिन कार्य की गति अत्यन्त धीमी है जिससे क्षेत्रीय जनता मे असंतोष व्याप्त है श्री दयालु ने बताया कि इस सडक की स्वीकृति के लिए उनकी टीम द्वारा लम्बे समय तक संघर्ष किया गया था । जिसके क्रम में उप जिलाधिकारी जिलाधिकारी मण्डलायुक्त खनन अधिकारी को ज्ञापन देने से लेकर जन हस्ताक्षर अभियान तक चलाया गया इसके बाद उत्तर प्रदेश सरकार के कैबिनेट मंत्री मा. आशीष पटेल जी के पत्राचार के उपरान्त सडक स्वीकृत हो सकी।

उन्होंने कहा कि इतने लम्बे संघर्ष के बाद भी यदि निर्माण कार्य धीमी गति से चलता है तो यह आम नागरिको के लिए कष्टकारी होने के साथ सरकार की कार्यप्रणाली पर भी प्रश्न खडा करता है। ज्ञापन के माध्यम से मांग की गई कि ठेकेदार को स्पष्ट और कठोर निर्देश जारी कर निर्माण कार्य शीघ्र पूर्ण कराया जाए साथ ही कार्य की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिया जाए मानक के अनुरूप कार्य न होने की स्थिति मे विभागीय लापरवाही मानी जाएगी। इस दौरान प्रदेश सचिव अल्पसंख्यक मंच जनाब महताब आलम जिला उपाध्यक्ष जनाब शिबू शेख तथा जिला उपाध्यक्ष राष्ट्रीय नवनिर्माण सेना विकास घटक सहित अन्य कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

पारिवारिक बंटवारे को लेकर दो पक्षों में जमकर हुई मारपीट

● पुलिस ने दोनों पक्ष की तहरीर पर दर्ज की एफआईआर

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ललितपुर। पारिवारिक बंटवारे को लेकर कस्बा बानपुर में दो पक्षों में विवाद हो गया। विवाद में दोनों ओर से लाठी-डंडे चले। इस हमले में दोनों पक्षों से लोग घायल हुये हैं। पुलिस ने दोनों पक्षों की तहरीर पर मामला दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी है। बानपुर में बार रोड निवासी सूरज सिंह पुत्र बृजलाल ने पुलिस को बताया कि परिवार के हरिसिंह, राजकुमार पुत्रगण राधाचरण, रोहित पुत्र राजकुमार, सोहित पुत्र हरीसिंह, सुजान पुत्र शालिगराम, गायत्री पत्नी राजकुमार, सावित्री पत्नी हरीसिंह से उसका पारिवारिक बटवारे का विवाद चल रहा है। इसी विवाद को लेकर 5 जनवरी को रात करीब साढ़े आठ बजे उक्त लोगों ने पीड़ित के पुत्र अभिषेक, राजेन्द्र, रिंकू उसके पिता बृजलाल, मां श्यामबाई, पत्नी उमा के साथ लाठी-डण्डों से मारपीट कर दी। शोरगुल सुनकर बचाने पहुंची उसकी पुत्री के साथ भी मारपीट की। मारपीट के दौरान थाना पुलिस आ गयी, जहां उक्त लोगों ने जान से मारने की धमकी दी। पुलिस ने सूरज सिंह की तहरीर पर उक्त लोगों के खिलाफ बीएनएस की धारा 191 (2), 115 (2), 352, 351 (3) के तहत एफआईआर दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी। वहीं दूसरे पक्ष की ओर से हरीसिंह पुत्र राधाचरण ने बताया कि वह अपने घर में था, तभी परिवार के सूरज, रामकिशन, राजेन्द्र, उमा, शोभा, विशाखा, श्यामबाई एकराय होकर आये और पारिवारिक बटवारे को लेकर गालियां दीं और मना करने पर मारपीट कर दी। डायल 112 पर पुलिस को सूचना देने पर पुलिस आयी, जिसके सामने ही उक्त लोग मारपीट करते हुये जान से मारने की धमकी दी। पुलिस ने हरीसिंह की तहरीर पर उक्त लोगों के खिलाफ बीएनएस की धारा 191 (2), 115 (2), 352, 351 (3) के तहत मामला दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी।

संसद में पारित कराया जाय अधिवक्ता सुरक्षा कानून, किया प्रदर्शन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

प्रतापगढ़। आल इण्डिया रूरल बार एसोसिएशन द्वारा उत्तर प्रदेश में लखनऊ से निकली अधिवक्ता सुरक्षा यात्रा बुधवार को प्रयागराज, भदोही होते हुए देवरिया पहुंची। एसोसिएशन के राष्ट्रीय महासचिव अनिल कुमार तिवारी महेश व राष्ट्रीय संगठन मंत्री अनूप कुमार पाण्डेय के संयुक्त नेतृत्व में पहुंची अधिवक्ता सुरक्षा यात्रा में शामिल अधिवक्ताओं ने यहां दीवानी अदालत गेट के समीप अधिवक्ता सुरक्षा अधिनियम विधेयक पारित कराए जाने की मांग को लेकर जमकर नारेबाजी भी की। यहां अधिवक्ताओं की सभा को संबोधित करते हुए एसोसिएशन के राष्ट्रीय महासचिव अनिल कुमार तिवारी महेश ने कहा कि संसद के बजट सत्र में यदि अधिवक्ता सुरक्षा अधिनियम विधेयक केंद्र सरकार ने पारित नही कराया तब वकील दिल्ली मार्च करते हुए संसद भवन के सामने तगड़ा विरोध प्रदर्शन करेंगे। उन्होने कहा कि अधिवक्ता सुरक्षा अधिनियम विधेयक में सुरक्षा के साथ अधिवक्ताओं के लिए कैशलेस हेल्थ बीमा व बुजुर्ग अधिवक्ता पेंशन के प्राविधान भी शामिल किये गये हैं। इसके बाद राष्ट्रीय महासचिव अनिल कुमार तिवारी महेश ने दीवानी परिसर में अधिवक्ताओं को अधिनियम के मसौदे की प्रतियां सौपते हुए संघर्ष की मजबूती का आहवान किया।

उन्होने अधिवक्ता सुरक्षा अधिनियम विधेयक के समर्थन में सहयोग देने वाले अधिवक्ताओं को एसोसिएशन की ओर से सम्मान पत्र भी प्रदान किया। आमसभा की अध्यक्षता बार एसोसिएशन देवरिया के अध्यक्ष मनोज मिश्रा व संचालन मंत्री अर्जुन यादव ने किया। इस मौके पर विनीत यादव, हरेकृष्ण तिवारी, पूनम सिंह, बीनू वर्मा, हरकेश पाण्डेय, विश्वेन्द्र कुमार सिंह, निरंजन सिंह बघेल, अजय यादव, वैभवकांत मिश्र, राधेश्याम तिवारी, पारसनाथ चौहान, गीता पाण्डेय, रामसकल पाण्डेय आदि अधिवक्ता रहे। अधिवक्ता सुरक्षा यात्रा का देवरिया में संयोजन करते हुए वरिष्ठ अधिवक्ता राजा मान सिंह की अगुवाई में वकीलों ने यहां जोरदार स्वागत भी किया।

संक्षिप्त खबरें

अंतरराष्ट्रीय हिंदू सेवा के जिला अध्यक्ष ने किया थाना प्रभारी का स्वागत

बरेली/ क्यों लड़िया के नए थाना प्रभारी वेद सिंह का आज अंतर्राष्ट्रीय हिंदू सेवा के जिला अध्यक्ष अजय पटेल जिला मंत्री दीनानाथ राठौर आदि ने थाना क्यों लड़िया में पहुंचकर उनके कार्यालय में उनको पका पहनकर सम्मानित किया और नए प्रभारी को क्यों लड़िया का प्रभारी निरीक्षक बनाए जाने पर उनको हार्दिक बधाई दी यहां के प्रभारी निरीक्षक वेद सिंह ने भी जन सहयोग से कार्य करने का आश्वासन दिया।

बरही इंटर कॉलेज के प्राचार्य अरुण कुमार दुबे का आकस्मिक निधन, शिक्षा जगत में शोक की लहर

बरही, हजारीबाग, झारखंडः- बरही इंटर कॉलेज के प्राचार्य एवं प्रसिद्ध शिक्षाविद पंचमाधव निवासी अरुण कुमार दुबे का बीते दिनों आकस्मिक निधन हो गया। उनके निधन की सूचना मिलते ही शिक्षा जगत में शोक की लहर दौड़ गई। विद्यालय परिवार, शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं स्थानीय बुद्धिजीवियों ने इसे अपूरणीय क्षति बताया है। जानकारी के अनुसार दिवंगत प्राचार्य अरुण कुमार दुबे वर्ष 1983 से बरही इंटर कॉलेज में अपनी सेवाएं दे रहे थे। लंबे समय तक सेवा देते हुए उन्होंने न केवल पढ़ाई की गुणवत्ता को बेहतर किया, बल्कि अपनी दूरदृष्टि और प्रयासों से कॉलेज में केवल आर्ट्स संकाय तक सीमित पढ़ाई को विस्तार देते हुए कॉमर्स एवं साइंस संकाय भी शुरू करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इससे इलाके के हजारों विद्यार्थियों को उच्च स्तरीय शिक्षा का लाभ मिला। कॉलेज के शिक्षकों और स्थानीय लोगों का कहना है कि दिवंगत प्राचार्य अपने सरल, सौम्य स्वभाव, अनुशासनप्रियता और शिक्षा के प्रति समर्पण के लिए हमेशा याद किए जाएंगे। उन्होंने छात्रों के उज्जवल भविष्य के लिए सदैव सकारात्मक वातावरण बनाया और उनके व्यक्तित्व निर्माण में अहम योगदान दिया। दिवंगत अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनके निधन पर क्षेत्र के कई जनप्रतिनिधियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और शिक्षा जगत से जुड़े लोगों ने गहरा शोक व्यक्त किया है। शोक व्यक्त करने वालों में बरही विधायक मनोज कुमार यादव, पूर्व विधायक उमाशंकर अकेला, जेएमएम नेता बिनोद विश्वकर्मा, जीप उपाध्यक्ष किशुन यादव, विधायक प्रतिनिधि रमेश ठाकुर, राष्ट्रपति पुरस्कृत शिक्षक इशो सिंह, महासचिव महेंद्र प्रसाद दुबे, आरएनवाईएम कॉलेज सचिव परमेश्वर यादव, प्राचार्य डॉ. बिमल किशोर, बीएसए संरक्षक अब्दुल मनान वारसी, भाजपा प्रदेश नेता रंजीत चंद्रवंशी, शिक्षाविद् संतोष चौरसिया, संजय दुबे, हरेंद्र गोप, मनोहर यादव, आइलेक्स पब्लिक स्कूल निदेशक डॉ. शैलेश कुमार, डीएवी पब्लिक स्कूल प्राचार्य डॉ. आशुतोष कुमार मैढ़, रघुनंदन गोप सहित अन्य गणमान्य लोग शामिल हैं। सभी ने शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति की कामना की।

अंबरनाथ में भाजपा से हाथ मिलाना पड़ा महंगा, कांग्रेस ने 12 नेता पार्टी से किये निलंबित

बुधवार को कांग्रेस ने अंबरनाथ में अपने स्थानीय नेतृत्व को निलंबित कर दिया। पार्टी के पार्षदों ने भाजपा के साथ मिलकर नगर परिषद का नेतृत्व गठित कर लिया था। इससे महाराष्ट्र में विभिन्न दलों के नागरिक गठबंधनों को लेकर चल रहे व्यापक राजनीतिक विवाद के बीच विपक्षी पार्टी को शर्मिंदगी उठानी पड़ी। महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस कमेटी (एमपीसीसी) के उपाध्यक्ष गणेश पाटिल ने अंबरनाथ कांग्रेस ब्लॉक के अध्यक्ष प्रदीप पाटिल को पत्र लिखकर सूचित किया है कि राज्य नेतृत्व की जानकारी या अनुमोदन के बिना भाजपा के साथ गठबंधन करने के कारण उन्हें पार्टी से निलंबित कर दिया गया है।

मुजफ्फरनगर में करंट लगने से दो बहनों की मौत

रामपुर इलाके में बुधवार को पानी गर्म करते समय रॉड से बिजली का झटका लगने से दो बहनों की मौत हो गई। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि मृतकों की पहचान कोतवाली थाना अंतर्गत रामपुर इलाके की निधि (21) और उसकी छोटी बहन लक्ष्मी (16) के रूप में हुई है। कोतवाली थाने के प्रभारी बबलू कुमार वर्मा ने बताया कि यह घटना तब हुई जब निधि पानी गर्म करने के लिए बिजली की रॉड के संपर्क में आ गई। जब लक्ष्मी ने उसे बचाने की कोशिश की, तो उसे भी बिजली का झटका लगा। थाना प्रभारी ने बताया कि सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची। उन्होंने बताया कि परिवार के अनुरोध पर शवों को पोस्टमार्टम के लिए नहीं भेजा गया। उत्तर प्रदेश के मंत्री कपिल देव अग्रवाल ने शोक संतप्त परिवार से मिलकर संवेदना व्यक्त की।

आखिर बिजुआ की जांच से क्यो बचते नजर आ रहे डी.पी.आर.ओ.व डी.सी मनरेगा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

विकासखंड बिजुआ की बहुचर्चित ग्राम पंचायत मूडा बुर्जुग में सड़क और शोकपिट और खाद के गडढे के नाम पर फर्जी तरीके से किए गए लाखों के सरकारी धन गबन की जांच किया जाना ग्रामीणों की प्रमुख मार्ग बनी है इसके बावजूद भी अधिकारियों के कान पर जून तक नहीं रेंग रहा है सूत्र बताते हैं मामले की दर्जनों शिकायतें की गई है लेकिन ऊपर तक चल रही साठगांठ के चलते सभी शिकायतों में ग्राम पंचायत अधिकारी द्वारा बगैर जांच के मनमाने तरीके से फर्जी जांच आख्या लगाकर शासन प्रशासन को गुमराह किया जा रहा है और जिम्मेदार अधिकारी मामले की जांच करने से बचते नजर आ रहे हैं आखिर क्यों अहम सवाल बना हुआ है।

यदि केवल नल रिबोर और मरम्मत सहित साफ सफाई दबा छिडकाव की करा ली जाय निष्पक्ष जांच तो कई ईमानदार चेहरे होंगे बेनकाब-

ग्राम पंचायत मूडा बुर्जुग में अधूरे कार्यो पर काम दिखाकर पैसे का बंदरबाट कर लिए जाने का मामला भले ही अखबारी सुर्खियां बना है और इसकी निगरानी को नियुक्त किए गए जिम्मेदार अधिकारी अपनी कुंभकर्णी नींद में सोए दिखाई पड़ रहे हैं ।सूत्रों द्वारा मिली जानकारी के अनुसार विकासखंड बिजुआकी ग्राम पंचायत मूडा बुर्जुग में हैंडपंप मरम्मत और रिबोर के नाम पर लाखों रुपए का भुगतान निकाल कर बंदरबांट कर लिया गया ।हर घरनल जल योजना के अंतर्गत हर साल लाखों का भुगतान तो निकल गया पर गांव के काफी लोग आज भी पीने के पानी को दूर-दूर से पानी भरकर लाने को विवश दिखाई पड़ रहे हैं। इतना ही नहीं कई नलों से गंदा और दूषित पानी निकल रहा है जो नल रिबोर और मरम्मत की पोल खोलने को काफी है। ग्राम पंचायत मूडा बुर्जुग में कई नल खराब पड़े बताए जाते हैं अधिकारियों की मिली भगत से बगैर कार्य कराए महज कागजों पर काम दिखाकर पैसा निकल जाने का मामला तूल पकड़ता जा रहा है प्रधान और पंचायत सचिव पर विकास के नाम पर धन निकालकर आपस में बंदरबाट किए जाने के ग्रामीणों द्वारा आरोप लगाए गए हैं देखा जाए तो कई योजनाओं में जमकर भ्रष्टाचार किया गया है चाहे वह स्ट्रीट लाइट खरीद

का मामला हो या फिर हयूम पाइप खरीद तथा दवा छिड़काव और साफ सफाई अथवा ठेलिया खरीद का मामला हो। ग्रामीणों में राधेश्याम सहित तमाम ग्रामीणों के बताएं अनुसार ग्राम पंचायत में क ई का कागजो पर करवाकर पैसा निकालकर हजम कर लिया गया हो। ऐसा ग्रामीणों का आरोप है ग्रामीणों का कहना है यदि जिला अधिकारी दुर्गा शक्ति नागपाल करायें मामले की निष्पक्ष जांच तो लाखों का घोटाला आएगा सामने और कई लोगों पर आएगी कार्रवाई की आंच ।अब देखना यह है कि जिले की ईमानदार जानी जाने वाली जिला अधिकारी द्वारा उपरोक्त मामले पर क्या कार्रवाई की जाती है?

बाजार में गायब हुए बच्चे को पुलिस ने खोज कर परिजनों को सौपा

बरेली/हाफिजगंज थाना क्षेत्र के पुलिस चौकी रिठौरा नगर में लगने वाली साप्ताहिक बाजार में 6 वर्ष का यस नाम का बच्चा अपने परिजनों से विछुड गया तो परिजनों में अपराध टपरी मच गई अंत में परिजन पुलिस चौकी पहुंचे इस पर चौकी प्रभारी वैभव गुप्ता सी दिनेश सिंह आकाश चौधरी कांस्टेबल सौरभ चौधरी इमरान आदि ने बच्चों की खोज भी शुरू की और अंत में उन्होंने कुछ घंटे के बाद खोए हुए बच्चे को बरामद कर परिजनों को सौंप दिया जिससे परिजनों में खुशी की लहर दौड़ पड़ी और उन्होंने पुलिस प्रशासन को बधाई दी।

ताबड़तोड़ घटनाओं के बाद भी हैदराबाद पुलिस गंभीर नहीं

● ममरी रोशन नगर रोड पर बढ़ी दहशत

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

गोला गोकर्णनाथ खीरी। ममरी-रोशन नगर रोड पर ताबड़तोड़ आपराधिक घटनाओं से आमजन में भय का माहौल है, लेकिन हालात काबू में करने के लिए हैदराबाद थाना पुलिस की सक्रियता नजर नहीं आ रही। न तो क्षेत्र में नियमित पुलिस गश्त हो रही है और न ही डायल-112 पुलिस अपने निर्धारित प्वाइंट पर तैनात दिखाई देती है। स्थानीय लोगों के अनुसार अपराधों पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से तत्कालीन पुलिस अधीक्षक रामानंद के निर्देश पर परेली नहर पुलिया के पास पुलिस पिकेट (कक्ष) का निर्माण कराया गया था। यह पिकेट तत्कालीन ग्राम प्रधान अनूप चंद वर्मा द्वारा बनवाया गया था। पिकेट के सक्रिय रहने के दौरान ममरी-रोशन नगर रोड पर अपराधों में काफी कमी आई थी और लोगों ने राहत महसूस की थी। लोगों का कहना है कि हैदराबाद थाना क्षेत्र में तैनाती के दौरान तत्कालीन एसओ दीपक तिवारी

द्वारा उक्त पुलिस पिकेट को गिरवा दिया गया, जिसके बाद से अपराधियों के हौसले बुलंद हो गए। पिकेट हटते ही इस मार्ग पर आपराधिक गतिविधियों में लगातार इजाफा हो रहा है। क्षेत्रवासियों का कहना है कि ताबड़तोड़ घटनाओं के बावजूद हैदराबाद पुलिस की कार्यप्रणाली गंभीर नहीं दिख रही। शिकायतों के बाद भी न तो प्रभावी कार्रवाई हो रही है और न ही रात्रि गश्त बढ़ाई गई है। सबसे चिंताजनक स्थिति यह है कि डायल-112 पुलिस की मौजूदगी केवल कागजों तक सीमित रह गई है। ग्रामीणों और राहगीरों ने मांग की है कि ममरी-रोशन नगर रोड पर पुलिस पिकेट को पुनः स्थापित किया जाए, नियमित गश्त सुनिश्चित की जाए और डायल-112 की जवाबदेही तय की जाए, ताकि क्षेत्र में कानून-व्यवस्था बहाल हो सके।

वनियर मशीनों ने सड़क पर किया अतिक्रमण, वाहन चालकों की बढ़ी मुश्किलें

●ईसानगर रोड मूसेपुर में सड़क किनारे लकड़ी के ढेर, हादसों की आशंका

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

खमरिया- ईसानगर रोड पर स्थित मूसेपुर क्षेत्र में विनियर मशीनों के संचालकों द्वारा सड़क के दोनों किनारों पर भारी मात्रा में लकड़ी डंप किए जाने से आम जनता और वाहन चालकों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। सड़क पर किए गए इस अतिक्रमण के कारण मार्ग संकरा हो गया है, जिससे आए दिन जाम की स्थिति बन रही है और सड़क हादसों की आशंका भी लगातार बढ़ती जा रही है। स्थानीय लोगों के अनुसार, विनियर मशीनों में उपयोग होने वाली लकड़ी को खुलेआम सड़क के दोनों ओर लंबे समय से रखा जा रहा है। खासकर रात के समय और कोहरे में यह लकड़ी के ढेर वाहन चालकों के लिए जानलेवा साबित हो सकते हैं। दोपहिया वाहन चालकों को संतुलन बिगड़ने का खतरा बना रहता है, वहीं चारपहिया और भारी वाहनों को निकलने में भारी दिक्कतों का सामना करना

पड़ता है। ग्रामीणों और राहगीरों का कहना है कि कई बार इस समस्या को लेकर जिम्मेदार अधिकारियों को अवगत कराया गया, लेकिन अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई। न तो लकड़ी हटवाई जा रही है और न ही अतिक्रमण करने वालों पर कोई कार्रवाई हो रही है, जिससे संचालकों के हौसले बुलंद हैं। सड़क किनारे बेतरतीब ढंग से रखी गई लकड़ी के कारण पैदल चलने वालों को भी सड़क पर उतरकर चलना पड़ रहा है, जिससे दुर्घटना का खतरा और बढ़ गया है। स्थानीय लोगों ने प्रशासन से मांग की है कि तत्काल प्रभाव से सड़क से अतिक्रमण हटवाया जाए और नियमों का उल्लंघन करने वाले विनियर मशीन संचालकों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए, ताकि किसी बड़े हादसे से पहले इस समस्या का समाधान हो सके।

अनियंत्रित बाइक पलटी युवक की हालत गंभीर

मितौली खीरी। लखीमपुर खीरी के नीमगांव थाना क्षेत्र में बुधवार को एक सड़क हादसे में एक युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। बेहजम पुलिस चौकी अंतर्गत लखीमपुर-मैगलगंज मार्ग पर बाछेपारा तिराहा के पास उसकी बाइक अनियंत्रित होकर पलट गई। जानकारी के अनुसार, रजी अहमद (18) पुत्र फकीरा अपनी बाइक से बेहजम की ओर आ रहे थे। इसी दौरान उनकी बाइक अचानक अनियंत्रित होकर फिसल गई, जिससे वह सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से चोटिल हो गए। हादसे की सूचना मिलते ही बेहजम पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने घायल युवक को तत्काल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बेहजम पहुंचाया। वहां चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के बाद रजी अहमद की गंभीर हालत को देखते हुए उन्हें जिला अस्पताल मोतीपुर रेफर कर दिया। इस संबंध में पुलिस चौकी प्रभारी सिद्धांत पवार ने बताया कि घायल युवक को उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया था। हालत नाजुक होने के कारण उसे बेहतर इलाज के लिए जिला अस्पताल भेजा गया है।

कड़ाके की ठंड एवं शीत लहर से घरों में कैद हुए लोग जन जीवन अस्त-व्यस्त गरीबों का बुरा हाल

● शासन द्वारा गरीबों को ठंड से बचने के लिए कंबल भी वितरित नहीं किए गए

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बरेली/क्योलडिया। और आसपास के ग्रामीण इलाकों में पड़ रही भीषण ठंड में जनजीवन को पूरी तरह से अस्त व्यस्त कर दिया है शीत लहर और गलन भरी ठंड के चलते लोग जारी जरूरी कार्यो के अलावा घरों से बाहर निकलने से बच रहे हैं सुबह और शाम के समय शाम को सड़कों पर सन्नाटा पसरा नजर आ रहा है । ठंड का सबसे ज्यादा असर मजदूर बुजुर्गों बच्चों और बीमार लोगों को पड रहा है शीतलहरके कारण लोग अलाव और हीटरो का सहारा लेने को मजबूर है लेकिन नगर और ग्रामीण क्षेत्रों में लगाए गए अलाव ना काफी साबित हो रहे हैं कई स्थानों पर अलाव आधे अधूरे जल रहे हैं जबकि अनेक मोहल्ले और गांव सार्वजनिक स्थानों पर अब तक अलाव की व्यवस्था नहीं हो पाई है । कड़ाके की ठंड से पशु-पक्षी भी वेहाल है बेसहारा पशुओं को और खेतों में ठंड से बचने के लिए दुवकेदिखाई दे रहे हैं वहीं पक्षी पेड़ों और छतोपर सिमटे नजर आ रहे हैं पशुपालकों का कहना है कि ठंड के कारण पशुओं के चारा पानी के स्वास्थ्य पर भी असर पा रहा है भीषण ठंड के चलते बाजारों में भी रौनक कम हो गई है सुबह के समय दुकान देरी से खुल रही है जबकि शाम ढलते ही लोग घरों

में कैद है लेकिन गलन भरी हवा चलने से ठंड के मारे लोगों की कप कपी छूटने लगी लगातार पड़ रही ठंड से जनजीवन अस्त व्यस्त है और लोग बेहाल हैं। ऐसी स्थिति मे गांव में रहने वाले ग्रामीणों को कोई भी अधिकारी देखने तक को तैयार नहीं है कम्बल वितरित न होने से ग्रामीणों को ठंड से बचने का कोई उपाय नहीं दिखाई दे रहा है।

दहेज प्रथा भारतीय समाज पर एक भयावह कलंक

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मैगलगंज खीरी। मानव समाज और सभ्यता के समक्ष अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं, किंतु उनमें से एक सामाजिक विकृति ऐसी है, जिसका कोई ठोस समाधान आज तक सामने नहीं आ सका है। विवाह संस्कार से जुड़ी दहेज प्रथा भारतीय समाज के लिए एक भयंकर अभिशाप बन चुकी है, जो हमारी सभ्यता और संस्कृति पर लगा गहरा कलंक है।दहेज प्रथा महिलाओं के साथ होने वाले मानसिक एवं शारीरिक उत्पीड़न को बढ़ावा देती है। यह कुरीति आज समाज के हर वर्ग को अपनी गिरफ्त में ले चुकी है। संपन्न वर्ग इसे अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा और शानो-शौकत के प्रदर्शन का माध्यम मानता है, जबकि निर्धन अभिभावकों के लिए बेटी के विवाह में दहेज देना मजबूरी बन गया है। उन्हें भय रहता है कि बिना दहेज के बेटी को विदा करने पर उसका ससुराल में जीवन कठिन हो सकता है।आज कई परिवार बेटी के विवाह में किए गए खर्च को एक निवेश के रूप में देखते हैं। उन्हें लगता है कि अधिक दहेज देने से न केवल उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी, बल्कि बेटी को ससुराल में सम्मान और सुरक्षा भी मिलेगी। दुर्भाग्यवश हमारा सामाजिक वातावरण ऐसा बन चुका है, जहाँ व्यक्ति की प्रतिष्ठा उसके संस्कारों से नहीं, बल्कि उसकी आर्थिक स्थिति से आँकी जाती है।इसी मानसिकता के कारण दहेज की लालसा सामान्य हो गई है। आए दिन दहेज हत्या, घरेलू हिंसा और आत्महत्या से जुड़े समाचार समाज की इसी भयावह सच्चाई को उजागर करते हैं। विडंबना यह है कि जिसे जितना अधिक दहेज मिलता है, उसे समाज में उतनी ही सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है।दहेज का यह दावानल पूरी युवा पीढ़ी को भी अपनी चपेट में ले रहा है। बेरोजगार युवक की भी कीमत लाखों में आँकी जाती है, जबकि नौकरीपेशा युवकों के लिए मानो खुलेआम बोली लगती है। इस सौदेबाजी में न तो संस्कार देखे जाते हैं और न ही चरित्र।दहेज के दुष्परिणाम विवाह के बाद भी सामने आते हैं। कई बार बहू के साथ दहेज का अभिमान भी घर में प्रवेश करता है, जिससे पारिवारिक सुख-शांति भंग हो जाती है। यही स्थिति आगे चलकर मानसिक तनाव, पारिवारिक कलह और आत्महत्याओं का कारण बनती है।दहेज

के औचित्य पर आज गंभीर प्रश्न खड़े हो रहे हैं। दूसरे के धन से की गई शानो-शौकत क्या वास्तविक सम्मान दिला सकती है। यह दिखावा यदि करना ही है तो अपने परिश्रम की कमाई से क्यों नहीं? दहेज लेने वाला ही नहीं, बल्कि देने वाला भी इस सामाजिक अपराध में बराबर का दोषी है।हालाँकि दहेज निषेध कानून मौजूद है, लेकिन केवल कानून के सहारे इस कुप्रथा को समाप्त नहीं किया जा सकता। समाज की सामूहिक चेतना और कठोर सामाजिक निर्णय इसमें अधिक प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं। कुछ समाजों और पंचायतों द्वारा दहेज लेने या देने वालों के सामाजिक बहिष्कार जैसे निर्णय इस दिशा में सकारात्मक संकेत हैं। यदि समाज दृढ़ संकल्प ले, तो दहेज प्रथा का अंत अवश्य संभव है।

नाला निर्माण की जांच में खेल किए जाने के आरोप

● नाला निर्माण में गुणवत्ता की जांच लेखपाल से कराए जाने का मामला

किसी इंजीनियर से जांच करवाने और लगाई जा रही सामग्री की लैब टेस्टिंग कराने की बजाय लेखपाल से जांच कराकर लीपापोती का खेल किए जाने प्रशासन पर लगाए जा रहे आरोप

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखीमपुर खीरी। मामला नगर पंचायत खीरी टाउन में कराया जा रहे नियम विपरीत मानक विहीन नाला निर्माण की शिकायत सभासद मकसूद अली द्वारा दिनांक 17 दिसंबर 2025 को जिला अधिकारी खीरी से कर नाला निर्माण में लगाई जा रही घटिया सामग्री की जांच कराकर दोषी लोगों के विरुद्ध कार्रवाई किए जाने की मांग की गई थी। जिसका संज्ञान लेते हुए जिला अधिकारी कार्यालय के पत्रांक संख्या 1307/21एम/जांच प्रपत्र मकसूद अली दिनांक 24/12/25 को उप जिलाधिकारी सदर लखीमपुर को जांच के लिए आदेशित किया गया था। लेकिन उक्त मामले मे यस. डी. एम. सदर द्वारा मामले की स्वयं जांच ना कर एक लेखपाल से जांच के नाम पर महज औपचारिकता निभाई गई है ना तो मौके की जांच ही की गई और ना ही दोनों पक्षों के आरोप प्रत्यारोपों को सुना और शिकायत का निस्तारण ही किया गया। शिकायतकर्ता मकसूद अली का आरोप है कि लेखपाल नाला निर्माण में लगाई गई सामग्री की गुणवत्ता की जांच कैसे कर लेगा? सामग्री की जांच अधिशासी अभियंता लोक निर्माण विभाग या किसी अन्य विभाग के सिविल अभियंता से कराई जानी चाहिए थी। लेकिन एसडीएम सदर द्वारा जांच के नाम पर रस्म अदायएगी करके दोषियों को घटिया सामग्री लगाकर नाला निर्माण करने के लिए अभय दान दे दिए जाने के आरोप लगाए हैं। यदि उक्त नाला निर्माण में की जा रही मानकों की अनदेखी की कराई जाए जांच टीम गठित कर निष्पक्ष जांच तो भारी भ्रष्टाचार का होगा खुलासा और कई जिम्मेदारों समेत ठेकेदारों पर भी आएगी कार्रवाई की।

सड़क सुरक्षा माह- डॉ कौशलेंद्र ने कहा कि हेलमेट सर पर बोझ नहीं बल्कि सर का ताज है

लखीमपुर खीरी। परिवहन विभाग लखीमपुर खीरी द्वारा आयोजित अंजली नाट्य कला केंद्र द्वारा नुक्कड़ नाटक के माध्यम से लोगों को सड़क सुरक्षा को लेकर जागरूक किया गया। सड़क सुरक्षा माह के सातवें पीटीओ डॉक्टर कौशलेंद्र यादव के नेतृत्व में सौजन्य चौक एवं कलेक्ट्रेट परिसर में नुक्कड़ नाटक के माध्यम से जागरूकता अभियान चलाते हुए लोगों को जागरूक किया गया इस अवसर पर लोगों की भीड़ देख डॉ कौशलेंद्र ने कहा कि सड़क सुरक्षा के नियमों के जानकारी सभी को होनी चाहिए। डॉ कौशलेंद्र ने बिना हेलमेट दोपहिया वाहनों से सवारी कर रहे लोगों को रोककर नियमों के बारे में बताया एवं कहा कि हेलमेट उनकी सुरक्षा के लिए कितना आवश्यक है इस अवसर पर परिवहन विभाग के कर्मचारी मौजूद रहे तथा पैंफलेट आदि का वितरण भी किया।

एक ही व्यक्ति के दो परिवार रजिस्टर और दो पिता कैसे संभव?

● पूर्व 2023 मे जारी परिवार रजिस्टर नकल और बाद मे जारी नकल मे सही कौन अहम सबाल?

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखीमपुर खीरी। मामला जनपद खीरी के विकास खंड बांकेगंज का है।जहां पर बुलडोजर बाबा के मातहतो ने अपनी ही सरकार के दावो और वादो तथा जीरो टारलेंस की धज्जियां उडाकर रख दी हैं।सुत्रो से मिली जानकारी के अनुसार ग्राम खंजनपुर निवासी रामरतन पुत्र रोशन के माता पिता की मृत्यु 2023 मे हो जाने के बाद रामरतन अपने पिता का इकलौता वारिस बचा था।उसके पिता के नाम राजस्व अभिलेखो मे दर्ज कागजात जमीन का वह एक मात्र वारिस है।उसकी जमीन हडपने की नियत से नेमपुर निवासी मुकेश पुत्र घुरई ने उसकी जमीन पर कब्जा करने का प्रयास शुरू कर दिया मामला न्यायालय तक पहुचा।न्यायलय मे अपने आप को रामरतन का भाई साबित करने की नियत से उक्त मुकेश ने पंचायत सचिव से मिलीभगत कर अपना नाम परिवार रजिस्टर मे चढवा लिया।उक्त आरोप रामरतन ने लगाते हुये बताया कि दस्तावेजी साक्षयो मे मुकेश पुत्र घुरई कई जगह दर्ज कागजात है।मुकेश नेमपुर गांव के निवासी है।और वहां पर अपने चाचा जिनकी शादी न होने के चलते सम्पत्ति मुकेश व इनके भाई पुत्रगण घुरई को मिल चुकीहै।बगैर जांच पडताल नाम चढाकर भारी फर्जीवाडा पंचायत अधिकारी ने किया है।अहम सबाल यह है। क्या गांव सभा की मीटिंग बुलाई गई? क्या एक व्यक्ति के दो पिता और दो परिवार रजिस्टर हो सकते है? सही क्याहै।मुकेश पुत्र घुरई या मुकेश पुत्र रोशन सही है सत्यता कौन साबित करेगा?किस दस्तावेज के आधार पर दर्ज किया गया गया मुकेश का फर्जी नाम? यदि मुकेश पुत्र रोशन है तो 2023 के परिवार रजिस्टर की नकल मे नाम क्यो नही है?मामले की यदि दस्तावेजो पर

आधारित करायी जांच तो मुकेश पुत्र घुरई समेत ग्राम पंचायत सचिव का जेल जाना तय होगा। पीडित ने मामले की लिखित शिकायत शासन और प्रशासन से कर मामले की निष्पक्ष जांच करवाकर परिवार रजिस्टर मे हेरफेर करने वाले सचिव के खिलाफ कठोर कार्रवाई किये जाने की मांग की है।

क्या कहते है जिम्मेदार

जब मामले की जानकारी लेने को ग्राम पंचायत अधिकारी अभिषेक कश्यप से जानकारी चाही गई तो घंटो बजती रही लेकिन उनहोने फोन उठाना उचित नही समझा।

पंचायत में धर्म परिवर्तन के प्रलोभन से महिलाएं हो रही प्रभावित, सतर्क रहने की जरूरत : मुखिया राजेन्द्र प्रसाद

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बरही, हजारीबाग, झारखंडः- धनवार पंचायत क्षेत्र में लोभ-लालच देकर जबरन धर्म परिवर्तन कराए जाने की सूचना लगातार सामने आने के बाद धनवार मुखिया राजेन्द्र प्रसाद ने सतर्क रहने की अपील की है। धनवार पंचायत के मुखिया राजेन्द्र प्रसाद ने पंचायत व क्षेत्रवासियों से अपील करते हुए कहा कि किसी भी परिस्थिति में लालच, प्रलोभन, धमकी या झूठे वादे के आधार पर धर्म परिवर्तन करवाना न सिर्फ सामाजिक सौहार्द के खिलाफ है, बल्कि कानूनन भी दंडनीय अपराध है। उन्होंने कहा कि पंचायत में कुछ असामाजिक तत्व लोगों की आर्थिक व पारिवारिक कमजोरी का फायदा उठाकर धार्मिक भावनाओं से खिलवाड़ करने की कोशिश कर रहे हैं, जिसे किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। मुखिया राजेन्द्र प्रसाद ने स्पष्ट कहा कि पंचायत में शांति, भाईचारा और सामाजिक सौहार्द बनाए रखना उनकी प्राथमिकता है। उन्होंने लोगों से अपील की कि यदि किसी के साथ धोखे, लालच, नौकरी-पैसे का प्रलोभन, इलाज का भरोसा या किसी अन्य प्रलोभन के बदले धर्म बदलवाने की कोशिश की जाती है, तो तुरंत पंचायत प्रतिनिधि, प्रशासन या नजदीकी थाना को सूचना दें। उन्होंने कहा कि इस तरह की गतिविधियाँ समाज को तोड़ने का काम करती हैं और इन पर सख्त कार्रवाई होना जरूरी है। उन्होंने पंचायत के बुद्धिजीवियों, जनप्रतिनिधियों, सामाजिक संगठनों तथा युवाओं से भी सहयोग की अपील करते हुए कहा कि सभी लोग जागरूक रहें और दूसरों को भी जागरूक करें ताकि किसी भी तरह की गलत गतिविधि को समय रहते रोका जा सके। मुखिया ने कहा कि प्रशासन को भी मामले की

जानकारी दी गई है और यदि कोई दोषी पाया जाएगा तो उसके खिलाफ कठोर कानूनी कार्रवाई सुनिश्चित कराई जाएगी। मुखिया राजेन्द्र प्रसाद ने अंत में कहा कि धनवार पंचायत की पहचान शांति, भाईचारे और पारस्परिक सम्मान की रही है, जिसे हर हाल में कायम रखा जाएगा। उन्होंने विश्वास जताया कि पंचायत के लोग एकजुट रहकर इस तरह की असामाजिक हरकतों को रोकेंगे और समाज में सद्भाव का माहौल बनाए रखेंगे।

उप जिलाधिकारी ने जरूरतमंदों को मंडी परिसर में वितरित किए कंबल

गोला गोकर्णनाथ खीरी। कई दिनो से पड रही कडाके की ठंड के चलते गोला की उप जिला अधिकारी प्रतीक्षा त्रिपाठी ने जरूरतमंद व असहायों को कंबल वितरित किये। वही कंबल पाकर जरूरतमंदों ने राहत महसूस की। उपजिलाधिकारी प्रतीक्षा त्रिपाठी ने कहा कि शीतलहर के दौरान असहाय एवं गरीब व्यक्तियों को ठंड से बचाने के लिए प्रशासन द्वारा लगातार राहत व बचाव कार्य किए जा रहे हैं। प्रशासन ने संबंधित विभागों को निर्देश दिए हैं कि सार्वजनिक स्थानों पर रह रहे जरूरतमंदों पर विशेष नजर रखी जाए और आवश्यकतानुसार सहायता उपलब्ध कराई जाए। इस दौरान तहसील गोला भीमचन्द के सहित तहसील प्रशासन मौजूद रहा।

संक्षिप्त खबरें

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी का आगमन कल

सीखड़, मीरजापुर। भाजपा के नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी का मीरजापुर में प्रथम आगमन चुनार विधानसभा के लोकप्रिय विधायक अनुराग सिंह के आवास पर गुरुवार को हो रहा है। प्रदेश अध्यक्ष विधायक आवास पर उनके पिता ओमप्रकाश सिंह भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष एवं भाजपा सरकार में पूर्व कैबिनेट मंत्री शिष्टाचार मुलाकात करेंगे तथा कार्यकर्ताओं से संवाद स्थापित करेंगे। उक्त आशय की जानकारी देते हुए विधायक प्रतिनिधि आलोक सिंह ने देते हुए बताया कि प्रदेश अध्यक्ष का काफिला वाराणसी से सड़क मार्ग से चुनार विधायक आवास मंगरहा पर पहुचेगा।

राज्य स्तरीय क्रिकेट प्रतियोगिता में बी एच यू ने प्रयागराज को और नैनी ने विहार को हराया

सीखड़, मीरजापुर। आजाद स्पोर्टिंग क्लब सीखड़ के तत्वावधान में चल रहे राज्य स्तरीय क्रिकेट प्रतियोगिता में बुधवार को कुल चार टीमों के बीच मैच खेला गया।पहला मैच बी एच यू वाराणसी और प्रयागराज के बीच खेला गया।बी एच यू ने टास जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 15ओवर में 188रन का लक्ष्य रखा।जबाब में उतरी प्रयागराज की टीम ने 40रन ही बना पाई।दुसरा मुकाबला नैनी और विहार के बीच खेला गया, जिसमें टास जीतकर नैनी ने पहले बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया। निर्धारित 15ओवर में नैनी ने 187रन का विशाल स्कोर खड़ा किया। जबाब में उतरी विहार की टीम ने निर्धारित 15ओवर में 45रन पर ही आल आउट हो गई।इस मैच के निर्णायक नरेश यादव रहें। और स्कोरर बीनू यादव रहें। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को डाक्टर नरेश तिवारी, सच्चिदानंद मिश्र और अजय यादव प्रधान ने पुरस्कृत किया।

बाण सागर का पानी अदवा बैराज से अदवा बांध में आने से किसानों कि डूबी फसले

हलिया , मीरजापुर । क्षेत्र के बाण सागर अदवा बैराज से अदवा बांध में एक सप्ताह तक पानी छोड़ने से गुर्गी गांव में अदवा बांध के समीप भूमिधारी भूमि में बोई गई किसानों की फसल गेंहू ,मटर की फसल डूब गई।पीड़ित किसानों ने सिंचाई विभाग से क्षतिपूर्ति की मांग किया है।क्षेत्र के गुर्गी गांव निवासी धनंजय सिंह, भूप नारायण, बृजबिहारी राय, रामजी राय,रामचंद्र, राजेश्वर सिंह, छोटेलाल, रामजी राय,बाल गोविन्द, श्याम किशोर,रामसागर, कृपा शंकर, रामलल्लू, रामजीत मौर्य, सहित अन्य किसानों की लगभग पचास बीघा से अधिक गेंहू मटर की फसल बाण सागर अदवा बैराज से अदवा बांध में पानी छोड़ने से जलमग्न हो गई। पीड़ित किसानों ने पानी से जलमग्न हुई फसलों की क्षतिपूर्ति सिंचाई विभाग से मांग किया है। इसी प्रकार अदवा बांध से विस्थापित हुए किसानों द्वारा सिंचाई विभाग द्वारा दी गई भूमि पर बोई गई गेंहू की फसल भी पानी में डूब गई है। किसानों का आरोप है यह स्थिति सिंचाई विभाग के कर्मचारियों व अधिकारियों की लापरवाही से किसानों की फसल नष्ट हो गई है लेकिन सिंचाई विभाग द्वारा इस तरफ ध्यान नहीं दिया जा रहा है। इस संबंध में अवरअभियंता अदवा सिद्धार्थ यादव का कहना है मेजा नहर खराब होने के कारण एक सप्ताह तक 600 क्यूसेक पानी अदवा बांध में बाणसागर का आया था अब बाण सागर का पानी मेजा बांध में जा रहा है।

उद्यमों के वार्षिक सर्वेक्षण के सम्बन्ध में पुनःबोधात्मक प्रशिक्षण सम्पन्न

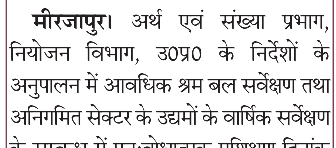

मीरजापुर। अर्थ एवं संख्या प्रभाग, नियोजन विभाग, उ0प्र0 के निर्देशों के अनुपालन में आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण तथा अनिगमित सेक्टर के उद्यमों के वार्षिक सर्वेक्षण के सम्बन्ध में पुनःबोधात्मक प्रशिक्षण दिनांक 06.01.2026 एवं 07.01.2026 को राम नरायन यादव उप निदेशक (अर्थ एवं संख्या), विन्ध्याचल मण्डल के कार्यालय में सम्पन्न हुआ। प्रशिक्षण भारत सरकार के बोधात्मक / उप क्षेत्रीय राष्ट्रीय सांख्यिकीय कार्यालय वाराणसी के माटर ट्रेनर्स विकास सिंह, राजेश प्रसाद, धर्मपाल शास्त्री तथा बी0के0 सिंह वरिष्ठ सांख्यिकीय अधिकारी द्वारा दिया गया। प्रशिक्षण कार्यकम में मण्डल के तीनों जनपदों के कुल 07 पर्यवेक्षकों, 14 सर्वेक्षकों तथा सर्वे से सम्बन्धित मण्डल के अपर सांख्यिकीय अधिकारियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। मण्डलीय सांख्यिकीय अधिकारी राम नरायन यादव सहित इस प्रशिक्षण में जनपद मीरजापुर, सोनभद्र एवं भदोही के जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी बाबूलाल, बब्बन प्रसाद, निशान्त मिश्रा तथा शशिकान्त उपस्थित रहें।

गोवंश संरक्षण को लेकर प्रशासन सख्त, चारागाहों में हरे चारे की बुवाई का सीडीओ ने दिया निर्देश

● ठंड में गौशालाओं में तिरपाल, बोरा व चारे की पूरी व्यवस्था सुनिश्चित करने के आदेश

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

भदोही। गोवंशों के संरक्षण और देखभाल को लेकर जिला प्रशासन ने कमर कस ली है। मुख्य विकास अधिकारी बाल गोविन्द शुक्ल की अध्यक्षता में बुधवार को गौ आश्रय स्थलों की समीक्षा बैठक आयोजित की गई, जिसमें चारागाह भूमि पर हरे चारे की बुवाई सुनिश्चित कराने तथा ठंड के मौसम को देखते हुए गौशालाओं में सभी आवश्यक व्यवस्थाएं दुरुस्त रखने के निर्देश दिए गए। सीडीओ ने कहा कि जिन ग्राम पंचायतों के पास चारागाह भूमि उपलब्ध है, वे हरे चारे का उत्पादन कर नजदीकी गौशालाओं को उपलब्ध कराएं। चारा उपलब्ध कराने वाली पंचायतों की प्रतिपूर्ति संबंधित गौशालाएं करेंगी। सभी कार्यों की निगरानी खंड विकास अधिकारी एवं पशु चिकित्सा अधिकारी करेंगे, लापरवाही पर सख्त कार्रवाई की चेतावनी दी गई। मुख्य पशु चिकित्साधिकारी को निर्देशित किया गया कि जनपद की तीनों तहसीलों में चारागाह भूमियों पर बरसीम सहित हरे चारे की बुवाई कराई जाए। साथ ही ठंड के दृष्टिगत सभी गौ आश्रय स्थलों में तिरपाल, बोरा उढ़ाना और पर्याप्त चारे की व्यवस्था समय से सुनिश्चित की जाए। बैठक में यह भी निर्देश दिए गए कि गौ आश्रयों के भरण-पोषण एवं केयर टेकरों का भुगतान समय से हो। समस्त खंड विकास अधिकारियों को विशेष अभियान चलाकर छुट्टा गोवंशों को पकड़कर गौ आश्रय स्थलों में संरक्षित कराने के निर्देश दिए गए। पशु चिकित्सालयों में डॉक्टरों की नियमित तैनाती सुनिश्चित करने को कहा गया। मुख्य पशु चिकित्साधिकारी ने प्रत्येक विकासखंड में कम से कम एक वृहद गो संरक्षण केंद्र के लिए न्यूनतम एक हेक्टेयर भूमि उपलब्ध कराने, मुख्यमंत्री निराश्रित गोवंश सहभागिता योजना को प्रभावी ढंग से लागू करने तथा कुपोषित परिवारों को दूध देने वाली या गाभिन गाय उपलब्ध कराने पर जोर दिया। बैठक में मुख्य पशु चिकित्साधिकारी डॉ. सी. वी. सचान, समस्त खंड विकास अधिकारी एवं संबंधित जनपदीय अधिकारी उपस्थित रहे।

वित्तीय साक्षरता बढ़ाने के लिए ग्रामों में आयोजित हुई डाक चौपाल

मिश्रिख(सीतापुर) भारत सरकार की ओर से डाक विभाग में संचालित विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी आम जनता तक पहुँचाने के उद्देश्य से डाक विभाग द्वारा लगातार जन चौपालों का आयोजन किया जा रहा है। इसी क्रम में सीतापुर जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में डाक चौपाल का आयोजन किया गया।डाक अधीक्षक सीतापुर पुरुषोत्तम नाथ के निर्देशानुसार दक्षिण उप मण्डलीय निरीक्षक अंकुज वर्मा के नेतृत्व में ग्राम कोरौना एवं सदना में जन चौपाल आयोजित की गई। इस दौरान ग्रामीणों को सुकन्या समृद्धि योजना, डाक जीवन बीमा, बचत खाता, आवर्ती जमा (आरडी) सहित डाक विभाग की अन्य योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी गई। चौपाल में ओवरसियर अवनीश वर्मा, बीपीएम सुमन गुप्ता (सदना), बीपीएम जितेंद्र शुक्ला (सरोसा), बीपीएम सौरभ यादव (ब्रम्हावली) सहित अन्य बीपीएम व एबीपीएम उपस्थित रहे। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने भाग लेकर योजनाओं में गहरी रुचि दिखाई।

ड्रमडगंज क्षेत्र में तमाम चल रही है अवैध क्लीनिक घटना होने के बाद जागता है जिला प्रशासन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

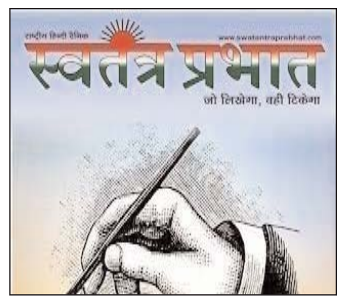

हलिया, मीरजापुर। हलिया ड्रमडगज व लालगज क्षेत्र मे तमाम अवैध ढंग से चल रही है अवैध क्लिनिक घटना होने के बाद जागता है जिला प्रशासन पहले से होता रहता है झोलाछाप डॉक्टरों का शिकायत जिला प्रशासन ले देकर कर लेता है समझौता जब होता है बढी घटना तब जिला प्रशासन जागता है और बड़ी कार्रवाई के लिए दौड़ लगाता है ग्रामीणों ने आक्रोश जताते हुए बताया कि घटना के बाद जिले की पूरी टीम मौके पर पहुंचती है घटना के पहले तमाम अवैध तरीके से संचालित हो रहे हॉस्पिटलों का शिकायत किया गया लेकिन मौके पर कोई प्रशासन कार्रवाई के लिए नहीं जाता है ज्यो ही होता है घटना तब खुलता है जिला प्रशासन की नींद ड्रमंडगंज क्षेत्र में आए दिन इस तरीके की घटना देखने को मिलता रहता है कि झोलाछाप डॉक्टर का शिकार होते हैं गरीब परिवार सरकारी व्यवस्था को ताक पर रखकर झोलाछाप डॉक्टर अपने आप को देते हैं सर्जन का दर्जा घटना का कौन है जिम्मेदार हलिया व ड्रमंडगंज नैडी कठारी बेलन बरौधा सहित तमाम जगहों पर चल रही है अवैध क्लिनिक नहीं है किसी भी क्लीनिक का कागजात ग्रामीणों का आरोप साथ ही साथ ग्रामीणों ने बताया कि हम लोगों का जिला प्रशासन से यही मांग है कि अवैध तरीके से संचालित हो रही अस्पताल व क्लिनिक को बंद कराया जाए नहीं तो लोग आए दिन घटना दुर्घटना के शिकार होते रहेंगे।

बलरामपुर में भाकियू भानू का प्रदर्शन, ठेकेदारों की मनमानी: इंफ्रामेट्री बोर्ड न लगाने पर आंदोलन की चेतावनी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बलरामपुर के पचपेड़वा नगर में निर्माण कार्यों में अनियमितताओं को लेकर भारतीय किसान यूनियन (भानू) ने प्रदर्शन किया। संगठन के तहसील उपाध्यक्ष आलम खान के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने नगर पंचायत पचपेड़वा के अधिशासी अधिकारी अवनीश सिंह को ज्ञापन सौंपाज्ञापन में मुख्य रूप से मांग की गई कि नगर में होने वाले प्रत्येक निर्माण कार्य स्थल पर इंफ्रामेट्री बोर्ड अनिवार्य रूप से लगाया जाए।

इससे कार्य की लागत, अवधि और संबंधित ठेकेदार की जानकारी सार्वजनिक हो सकेगी।तहसील उपाध्यक्ष आलम खान ने आरोप लगाया कि ठेकेदार जानबूझकर इंफ्रामेट्री बोर्ड नहीं लगाते, जिससे मानक विहीन कार्य कर सरकारी धन का दुरुपयोग किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि इसका परिणाम यह है कि नई सड़कें छह माह में ही खराब हो जाती हैं, जिससे आम जनता को परेशानी होती है। आलम खान ने कहा कि इस तरह की अनियमितताओं से सरकार की छवि खराब होती है, जिसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। नगर संरक्षक रोहित कुमार गुप्ता ने चेतावनी दी कि यदि भविष्य में निर्माण कार्यों में इंफ्रामेट्री बोर्ड अनिवार्य नहीं किया गया, तो भारतीय किसान यूनियन भानू धरना-प्रदर्शन और आंदोलन करने को मजबूर होगी। अधिशासी अधिकारी अवनीश सिंह ने कार्यकर्ताओं को आश्वासन दिया कि उनकी मांग उचित है और इस पर जल्द ही आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

अटल चौक पर चलाया गया हेलमेट व सीट-बेल्ट जागरूकता अभियान

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

उरई(जालौन): राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह के अंतर्गत इकलासपुरा चौराहा (अटल चौक) उरई में हेलमेट व सीट-बेल्ट के प्रयोग को लेकर जागरूकता अभियान चलाया गया। अभियान का उद्देश्य दोपहिया एवं चारपहिया वाहन चालकों को यातायात नियमों के प्रति सचेत करना रहा। इस दौरान सहायक संभागीय परिवहन अधिकारी राजेश कुमार ने वाहन चालकों व राहगीरों से अपील करते हुए कहा कि सड़क सुरक्षा नियमों का पालन कर हम न केवल अपना जीवन सुरक्षित रख सकते हैं, बल्कि अपने परिवार को भी सड़क दुर्घटनाओं से उत्पन्न होने वाली समस्याओं से बचा सकते हैं। उन्होंने सभी से जिम्मेदार नागरिक बनते हुए यातायात नियमों का पालन करने की अपील की। जागरूकता अभियान के दौरान जो वाहन चालक हेलमेट व सीट-बेल्ट पहनकर वाहन चलाते पाए गए, उन्हें माला पहनाकर एवं पुष्प भेंट कर सम्मानित किया गया। वहीं बिना हेलमेट व सीट-बेल्ट वाहन चला रहे चालकों को कड़ी चेतावनी दी गई। अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि नशे की हालत में वाहन चलाना, तेज गति, स्टंटबाजी व यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

अधिकारियों ने आमजन से अपील की है कि सड़क सुरक्षा नियमों का पालन कर सुरक्षित यातायात को अपनाएं और दुर्घटनाओं से बचाव में सहयोग करें। जागरूकता कार्यक्रम में यातायात प्रभारी बीर बहादुर सिंह, एल्ड्रिच पब्लिक स्कूल के प्रबंधक अजय इटौरिया, रेड क्रास सोसाइटी के अध्यक्ष डॉ. नरेश वर्मा, सद्भावना एकता मंच/सभासद लक्ष्मणदास बबानी, गुड सेमेरिटन पुरस्कार से सम्मानित समाजसेवी अब्दुल अलीम खान, रेड क्रास सोसाइटी के महावीर तरसौलिया, समाजसेवी हम्माद अहमद शानू सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

थाना चौरी अन्तर्गत ग्राम कोल्हण से ट्रॉली सहित ट्रैक्टर चोरी करने वाले गिरोह का एक सदस्य (अपचारी) चोर गिरफ्तार

कब्जें से चोरी की 01 अदद टैक्टर पावर ट्रैक 334 रंग नीला ट्राली सहित बरामद थाना चौरी पर आवेदक प्रार्थी सुरेश चन्द्र मौर्य पुत्र स्व रामनरेश मौर्य ग्राम कोल्हण थाना चौरी जनपद भदोही का टैक्टर पावर ट्रैक 334 रंग निला ट्राली सहित हनुमान मंदिर कोल्हण के पास सड़क के किनारे से दिनांक 22.11.2025 को समय लगभग 12.30 AM बजें किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा चोरी कर लिया गया है। प्राप्त तहरीर पर अज्ञात व्यक्ति के विरुद्ध थाना चौरी पर मु0अ0सं0-184/2025 धारा 303 (2) क्क्हस् का अभियोग पंजीकृत करते हुए विधिक कार्यवाही प्रचलित की गई।

एसपी अभिमन्यु मांगलिक ने थाना कोइरौना का किया औचक निरीक्षण

● जनसुनवाई, अनुशासन और सुरक्षा व्यवस्था को और बेहतर बनाने के निर्देश

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

भदोही। जनपद में कानून-व्यवस्था को और सुदृढ़ करने तथा आमजन को बेहतर पुलिस सेवा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से पुलिस अधीक्षक अभिमन्यु मांगलिक ने चौकी सीतामढ़ी अंतर्गत थाना कोइरौना का विस्तृत निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने थाना परिसर की व्यवस्थाओं का जायजा लेते हुए ड्यूटी पर तैनात अधिकारियों एवं कर्मचारियों से संवाद किया। एसपी ने पुलिसकर्मियों को निर्देशित किया कि थाने पर आने वाले प्रत्येक नागरिक के साथ शालीन, संवेदनशील और सहयोगात्मक व्यवहार किया जाए, ताकि जनता का विश्वास पुलिस पर और मजबूत हो। उन्होंने कहा कि अनुशासन, समयबद्ध कार्यप्रणाली और पारदर्शिता पुलिस व्यवस्था की प्राथमिक जिम्मेदारी है। निरीक्षण के दौरान थाना परिसर की साफ-सफाई, कार्यालय व्यवस्था, अभिलेखों के रख-रखाव तथा सीसीटीवी कैमरों की क्रियाशीलता पर विशेष ध्यान दिया गया। एसपी ने सुरक्षा के दृष्टिगत सभी कैमरों को सक्रिय अवस्था में रखने और नियमित निगरानी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। पुलिस अधीक्षक ने लंबित प्रकरणों, जनसुनवाई की स्थिति और दैनिक कार्यप्रणाली की भी समीक्षा की तथा आवश्यक सुधारों के लिए संबंधित अधिकारियों को दिशा-निर्देश जारी किए। उन्होंने स्पष्ट किया कि ड्यूटी में लापरवाही या अनुशासनहीनता किसी भी स्थिति में बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

ख्यमंत्री की प्रगति यात्रा को लेकर बरौली में प्रशासनिक तैयारियों की व्यापक समीक्षा, जिला पदाधिकारी एवं माननीय विधायक बरौली ने किया स्थलों का निरीक्षण

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

गोपालगंज (बिहार)- जिला पदाधिकारी पवन कुमार सिन्हा एवं बरौली विधानसभा क्षेत्र के माननीय विधायक मनजीत सिंह द्वारा संयुक्त रूप से माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की प्रस्तावित प्रगति यात्रा को ध्यान में रखते हुए बरौली प्रखंड क्षेत्र में विभिन्न महत्वपूर्ण स्थलों का विस्तृत निरीक्षण एवं समीक्षा की गई। इस निरीक्षण का उद्देश्य मुख्यमंत्री की यात्रा के दौरान सभी व्यवस्थाओं को सुव्यवस्थित, सुरक्षित एवं प्रभावी बनाना था। निरीक्षण कार्यक्रम के तहत सर्वप्रथम बरौली स्थित हेलीपैड का जायजा लिया गया। जिला पदाधिकारी एवं विधायक ने हेलीपैड की स्थिति, साफ-सफाई, पहुंच मार्ग, सुरक्षा व्यवस्था एवं तकनीकी मानकों की बारीकी से समीक्षा की। संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया गया कि हेलीपैड से संबंधित सभी आवश्यक कार्य समय से पूर्ण कर लिए जाएं, ताकि मुख्यमंत्री की आगमन एवं प्रस्थान की व्यवस्था में किसी प्रकार की असुविधा न हो। साथ ही सुरक्षा मानकों का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित करने पर विशेष बल दिया गया।

इसके उपरांत बरौली प्रखंड कार्यालय का निरीक्षण किया गया। यहां प्रशासनिक तैयारियों, बैठक कक्ष, कार्यालयीन व्यवस्थाओं एवं आम जनता से जुड़े कार्यों की समीक्षा की गई। जिला पदाधिकारी ने कहा कि प्रखंड कार्यालय प्रशासन की रीढ़ होता है, इसलिए यहां सभी व्यवस्थाएं दुरुस्त रहनी चाहिए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि मुख्यमंत्री की प्रगति यात्रा के दौरान प्रखंड कार्यालय से संबंधित किसी भी प्रकार की शिकायत सामने न आए।

निरीक्षण के क्रम में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, बरौली में संचालित जीविका दीदियों की रसोई का भी अवलोकन किया गया। अधिकारियों ने रसोई की साफ-सफाई, भोजन की गुणवत्ता, स्वच्छता मानकों तथा संचालन व्यवस्था की समीक्षा की। जिला पदाधिकारी ने कहा कि जीविका दीदियों द्वारा संचालित रसोई महिला सशक्तिकरण का सशक्त उदाहरण है और इससे आम लोगों को सस्ती एवं पौष्टिक भोजन सुविधा मिल रही है। उन्होंने संबंधित पदाधिकारियों को निर्देश दिया कि मुख्यमंत्री की यात्रा के दौरान रसोई की व्यवस्थाएं पूरी तरह सुदृढ़ रहें और स्वच्छता का विशेष ध्यान रखा जाए। इसके बाद अधिकारियों की टीम ने बतरदे बांध का निरीक्षण किया। बांध की स्थिति, सुरक्षा, मरम्मत कार्य, आसपास की साफ-सफाई एवं संभावित जोखिमों की समीक्षा की गई। जिला पदाधिकारी ने जल संसाधन एवं संबंधित विभागों के अधिकारियों को निर्देश दिया कि बांध की मजबूती एवं सुरक्षा को लेकर किसी भी प्रकार की लापरवाही न हो। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री की प्रगति यात्रा के दौरान विकास कार्यों के साथ-साथ जनसुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है। इस निरीक्षण एवं समीक्षा के दौरान उप विकास आयुक्त कुमार विवेक निशांत, अनुमंडल पदाधिकारी गोपालगंज अनिल कुमार, विशेष कार्य पदाधिकारी संदीप कुमार, प्रखंड विकास पदाधिकारी बरौली, थाना प्रभारी, जीविका के डीपीएम सहित विभिन्न विभागों के वरीय एवं क्षेत्रीय पदाधिकारी उपस्थित रहे। सभी अधिकारियों को आपसी समन्वय के साथ कार्य करने तथा समयबद्ध तरीके से सभी तैयारियां पूर्ण करने के स्पष्ट निर्देश दिए गए।

जिला पदाधिकारी पवन कुमार सिन्हा ने कहा कि माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की प्रगति यात्रा जिले के विकास कार्यों की समीक्षा एवं जनता से सीधा संवाद का महत्वपूर्ण अवसर है। इसलिए प्रशासन की यह जिम्मेदारी है कि यात्रा के दौरान सभी व्यवस्थाएं पूरी तरह सुदृढ़, पारदर्शी एवं जनहितैषी हों। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। वहीं बरौली विधानसभा क्षेत्र के विधायक मनजीत सिंह ने निरीक्षण के दौरान कहा कि मुख्यमंत्री की प्रगति यात्रा से क्षेत्र के विकास को नई दिशा मिलेगी। उन्होंने अधिकारियों से आग्रह किया कि विकास योजनाओं, जनकल्याणकारी कार्यक्रमों एवं बुनियादी सुविधाओं को लेकर जमीनी स्तर पर वास्तविक प्रगति सुनिश्चित की जाए, ताकि आम जनता को इसका सीधा लाभ मिल सके। निरीक्षण के दौरान विधि-व्यवस्था, यातायात प्रबंधन, सुरक्षा व्यवस्था, साफ-सफाई, पेयजल, विद्युत एवं स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर भी विस्तार से चर्चा की गई। संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया गया कि मुख्यमंत्री की यात्रा के दौरान किसी भी प्रकार की अव्यवस्था उत्पन्न न हो और आम जनता को किसी प्रकार की असुविधा न झेलनी पड़े। जिला प्रशासन द्वारा मुख्यमंत्री की प्रगति यात्रा को सफल, सुरक्षित एवं सुव्यवस्थित बनाने के लिए लगातार निरीक्षण, समीक्षा एवं मॉनिटरिंग की जा रही है।

यूपी के झांसी की पहली महिला ऑटो ड्राइवर अनीता चौधरी की हत्या या दुर्घटना?, लहूलुहान लाश मिली

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ब्यूरो प्रयागराज। बुंदेलखंड की धरती पर 'साहस की मिसाल' मानी जाने वाली झांसी की पहली महिला ऑटो ड्राइवर अनीता चौधरी की रविवार रात दर्दनाक मौत हो गई। स्टेशन रोड स्थित सुकुवां-ढुकुवां कॉलोनी के पास उनका खून से लथपथ शव मिला। जहां पुलिस ने शुरुआती जांच में इसे सड़क दुर्घटना मान रही है, वहीं परिजनों ने लूटपाट के बाद हत्या का गंभीर आरोप लगाया है। परिजनों के अनुसार पूरे शरीर मे केवल सिर पर गंभीर चोट है। यदि ऑटो पलटने से हादसा होता, तो शरीर के अन्य हिस्सों में भी खरोंचें या चोटें होतीं। वहीं झांसी पुलिस के अनुसार, प्रथम दृष्टया यह मामला सड़क हादसे का लग रहा है। हालांकि, परिजनों के भारी हंगामे और आरोपों के बाद पुलिस हर पहलू की जांच कर रही है। स्थानीय पुलिस प्रशासन के मुताबिक, 'शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। परिजनों के आरोपों को ध्यान में रखते हुए जांच जारी है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के सही कारणों का खुलासा हो सकेगा. 'अनीता के परिवार ने मांग की है कि

क्षेत्र के सीसीटीवी कैमरों को खंगाला जाए ताकि सच्चाई सामने आ सके, एक ऐसी महिला जिसने अपनी मेहनत से समाज की बेड़ियों को तोड़ा, उसकी ऐसी संदिग्ध मौत ने पूरे झांसी को झकझोर कर रख दिया है।

वेनेजुएला मुद्दे पर भदोही में प्रदर्शन, ट्रम्प का पुतला दहन

भदोही। वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो की गिरफतारी के विरोध में बुधवार को भदोही में वाम दलों के कार्यकर्ताओं ने जोरदार प्रदर्शन किया। भाकपा माले, सीपीआई और सीपीआईएम फॉरवर्ड ब्लॉक के कार्यकर्ता संयुक्त वाम मोर्चा के बैनर तले सड़कों पर उतरे और इंद्रामिल चौराहे पर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प का पुतला फूंका। कड़कड़ाती ठंड के बावजूद दर्जनों कार्यकर्ता ब्लॉक परिसर के पास एकत्र हुए और नारेबाजी करते हुए जुलूस की शक्ल में चौराहे तक पहुंचे। प्रदर्शन के दौरान अमेरिका की कथित हस्तक्षेपवादी नीति की आलोचना करते हुए वेनेजुएला के राष्ट्रपति को तत्काल रिहा करने की मांग की गई। धरना-प्रदर्शन व पुतला दहन के दौरान इंद्रदेव पाल, ज्वाला प्रसाद, बनारसी सोनकर, शिव बहादुर, सुशील कुमार श्रीवास्तव, भान सिंह मौर्य, रामजीत यादव, राजेंद्र कन्नौजिया, ज्ञान प्रकाश, अमृत लाल मौर्य, हीरा लाल यादव, निर्मला, कमलेश पाल, रमेश पाल, अख्तर अली, पप्पू अहमद सहित बड़ी संख्या में वाम दलों के कार्यकर्ता व पदाधिकारी मौजूद रहे।

महिला के घर तोड़फोड़ व चोरी का आरोप, थाने में तहरीर देकर न्याय की गुहार

गोपीगंज। थाना क्षेत्र के ग्राम विहरोजपुर (उपरवार) निवासी एक महिला ने पड़ोसियों पर घर में जबरन घुसकर तोड़फोड़ करने और सिंचाई की मशीन से सामान चोरी करने का गंभीर आरोप लगाया है। पीड़िता ने प्रभारी निरीक्षक को तहरीर देकर न्याय की गुहार लगाई है। पीड़िता आरती तिवारी पत्नी विष्णु चरण तिवारी ने बताया कि 6 जनवरी 2026 की रात्रि लगभग 12 बजे पड़ोसी लाठी-डंडे लेकर उनके घर पहुंचे और किवाड़ खुलवाने लगे। जब उन्होंने दरवाजा नहीं खोला तो आरोपियों ने फरसे से किवाड़ तोड़ दिया। महिला का आरोप है कि इसके बाद आरोपी घर से लगभग 500 मीटर दूर खेत में लगी सिंचाई की मशीन के कमरे का ताला तोड़कर इन्वर्टर, बैट्री सहित अन्य सामान उठा ले गए। घटना की सूचना 112 पुलिस को दी गई, जिस पर आरोपी पुलिस से भी खुलेआम मुकदमा लड़ने की धमकी देते रहे। पीड़िता ने बताया कि वह घर में तीन वृद्ध व बीमार परिजनों की देखभाल करती है, जबकि उनके पति बाहर नौकरी करते हैं। भय के कारण उन्होंने अपने 13 वर्षीय इकलौते पुत्र को घर से बाहर भेज दिया है। महिला ने पुलिस से आरोपियों के विरुद्ध सख्त कानूनी कार्रवाई की मांग की है।

गंगा घाट पर आपसी विवाद में खूनी संघर्ष, आधा दर्जन से अधिक घायल

● शव दाह के दौरान कुत्ते के विवाद में हुई जमकर मारपीट

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

गोपीगंज। कोतवाली क्षेत्र के बिहरोजपुर स्थित गंगा घाट पर शव दाह के लिए पहुंचे ग्रामीणों के बीच कुत्ते के विवाद को लेकर अचानक मारपीट हो गई। गंगा किनारे हुई इस हिंसक झड़प में दोनों पक्षों से आधा दर्जन से अधिक लोग घायल हो गए। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और एंबुलेंस की मदद से सभी घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र गोपीगंज भेजकर उपचार कराया गया। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर स्थिति को नियंत्रित करते हुए शांति व्यवस्था बहाल कराई। घटना के संबंध में बताया जाता है कि कुछ लोग पालतू कुत्ते को गंगा किनारे टहला रहे थे। इसी दौरान आवारा कुत्तों से पालतू कुत्ते की लड़ाई हो गई। लड़ाई को देख मौजूद ग्रामीणों ने पालतू कुत्ते को मार दिया। इस बात का आशीष दुबे ने विरोध किया, जिससे कहासुनी शुरू हो गई और मामला देखते ही देखते हाथापाई और फिर मारपीट में बदल गया। मारपीट में एक पक्ष से आशीष दुबे पुत्र रमापति दुबे घायल हो गए। वहीं दूसरे पक्ष से दिनेश कुमार (30), लाल मनी (63), खेमराज (26), दिनेश (30) व धर्मराज (40) निवासी ग्राम गांधी घायल हुए हैं। बताया गया कि सभी लोग गांव निवासी अगनू की माता मुनरा देवी (वृद्धा) के निधन के बाद शव दाह के लिए गंगा घाट गए थे। घटना के बाद दोनों पक्षों ने कोतवाली गोपीगंज में एक-दूसरे के खिलाफ तहरीर दी है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

संक्षिप्त खबरें

राम का नाम सुमिरन से ही उद्धार होता है- भूपेंद्र महाराज

नैनी प्रयागराज। महर्षि महेश योगी आश्रम परिसर नैनी क्षेत्र के अरैल में महर्षि आश्रम के अध्यक्ष वेद विद्या मार्तंड ब्रह्मचारी गिरीजी के निर्देशन में 15 फरवरी का कार्यक्रम चलता रहेगा,राम कथा के राजा दशरथ के तीन वचन चित्रकूट जाना राजा दशरथ जी का स्वर्गवास का कथा वाचक भूपेंद्र जी महाराज ने वर्णन किया । आश्रम प्रभारी सुनील श्रीवास्तव ने कथा वाचक भूपेंद्र जी का माल्यार्पण कर भगवान की आरती उतार कर गुरु पूजन कर कार्यक्रम को प्रारंभ किया। इस अवसर पर प्रभारी आश्रम प्रभारी सुनील श्रीवास्तव, प्रकाश बसंत दास, धर्मेंद्र श्रीवास्तव, समाधि स्थल प्रभारी,ऋषि त्रिवेदी, विमल मिश्रा, सोनू पांडे, जय प्रकाश तिवारी ,राजा भैया, द्वारिका तिवारी, प्रशांत दास ,पंकज शर्मा, अनिल शर्मा, लाल जी पांडे, पवन पाठक, मीडिया प्रभारी संजय श्रीवास्तव,आदि रहे।

जोधपुर में इंदौर कांड दोहराने का खतरा, जहरीला पानी बना आफत, लोग बोले- पीते ही होती है उल्टी-दस्त

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ब्यूरो प्रयागराज। देश के सबसे स्वच्छ शहर इंदौर में गंदे पानी से हुई मौतों ने सबको हिलाकर रख दिया है. इसी बीच राजस्थान के दूसरे सबसे बड़े शहर जोधपुर में भी पानी को लेकर गंभीर संकट उत्पन्न हो गया है. बासनी फेज सेकेंड में स्थित लगभग 500 घरों की बस्ती में पिछले कई दिनों से प्रदूषित और केमिकलयुक्त पानी की सप्लाई हो रही है. स्थानीय लोग परेशान हैं, क्योंकि पानी पीने योग्य नहीं है और इसके लगातार सेवन से कई लोग पेट से जुड़ी बीमारियों और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं का शिकार हो रहे हैं। लोगों ने कई बार जलदाय विभाग और जनप्रतिनिधियों को शिकायत की, लेकिन समस्या का स्थायी समाधान अब तक नहीं हुआ है. इस संकट ने पूरे इलाके में भय और आक्रोश का माहौल पैदा कर दिया है, क्योंकि बुजुर्ग और छोटे बच्चे सबसे ज्यादा प्रभावित हो रहे हैं. संगीता शर्मा ने बताया कि मोहल्ले के लोग एक महीने से परेशान हैं और जलदाय विभाग के अधिकारियों से लगातार शिकायत कर रहे हैं, लेकिन समाधान नहीं हुआ है। जोधपुर बासनी फेज सेकेंड के स्थानीय निवासी अशोक शर्मा ने आरोप लगाया कि पेयजल पाइपलाइन में फैक्ट्रियों का केमिकल पानी आ रहा है।

जनप्रतिनिधियों को भी शिकायत की, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई. वहीं सोनिया शर्मा ने बताया कि गंदे और केमिकलयुक्त पानी के कारण बस्ती के लोगों की परेशानी लगातार बढ़ रही है. हालात इतने गंभीर हो चुके हैं कि बुजुर्ग और छोटे बच्चों की तबीयत बिगड़ने लगी है. कई लोग दस्त, उल्टी और पेट से जुड़ी गंभीर बीमारियों का शिकार हो रहे हैं और इस पानी को पीने से घुटन जैसा महसूस होना भी आम हो गया है. पीएचईडी जेईएन मोहित जैन ने बताया कि मोहल्ले से करीब 20 दिन पहले गंदा पानी आने की शिकायत मिली थी।

उस पर जांच की गई तो एक नाले में पाइप की क्रॉसिंग टूटी हुई पाई गई. उसे ठीक कर दिया गया और पेयजल सप्लाई सही हो गई. लेकिन कुछ समय बाद फिर शिकायत आई कि भंवरजी का ढाबा पर क्रॉसिंग में टेक्सटाइल का पानी आ रहा है. वहां जांच करके टेक्सटाइल कनेक्शन काट दिया गया और लीकेज को हटा दिया गया।

गणेश चौथ पर महिलाओं ने पुत्र की दीर्घायु के लिए रखा व्रत

नैनी,प्रयागराज। सनातन धर्म में पूजा आरती के साथ ही पूरी मनाई जाती है। माघ महीने के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी यानी सकट चौथ भगवान गणेश को समर्पित है। इसे संकष्टी चतुर्थी भी कहा जाता है। इस साल यह व्रत मंगलवार को रखा रखा गया। व्रती महिलाओं ने पुत्र की दीर्घायु कामना के लिए विधि-विधान से पूजा की और आरती कर पुत्र को तिलक लगाया। इसके साथ भगवान चंद्र देव को लालिमा को देखकर परिक्रमा करते हुए अर्घ्य दिया।ऐसी मान्यता है कि इस व्रत को करने से शुभ फलों की प्राप्ति होती है। साथ ही भगवान श्री गणेश की कृपा सदैव बनी रहती है। महिलाओं ने इस व्रत को करने के लिए तरह तरह के पकवान बनाकर भोग अर्पित किये। तिल में लड्डू के साथ विभिन्न प्रकार के फल चढ़ाकर पूजन और आरती की। इस व्रत को करने के लिए महिलाओं ने निर्जला व्रत रखा।

युवक ने विकलांग लड़की से रेप की कोशिश की

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नैनी, प्रयागराज। औद्योगिक क्षेत्र में 14 साल की लड़की से रेप की कोशिश की गई। यह लड़की सुन-बोल नहीं सकती है। बच्ची को ढूंढते हुए परिजनों के पहुंचने पर आरोपी भाग निकला। कुछ घंटे बाद गुस्साए लोगों को मालूम चला तो आरोपी घर में छिपा हुआ है।भीड़ आरोपी को घसीटते हुए 1.5 किमी दूर थाने तक ले गई। मार-मारकर उसे बेसुध कर दिया। कपड़े फाड़ दिए। सिर्फ अंडरवियर में सड़क पर घसीटने लगे। युवक हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाने लगा, लेकिन भीड़ ने उसकी एक न सुनी।उसे मारते हुए औद्योगिक क्षेत्र थाने तक ले गई। घसीटने से आरोपी के हाथ-पैर छिल गए हैं। हालांकि , पुलिस आरोपी से पूछताछ कर रही है। लड़की का मेडिकल कराया जा रहा है।जिसके बाद लड़की का बयान दर्ज कराए जाएगा।जानकारी के मुताबिक मनीष जायसवाल (25) औद्योगिक क्षेत्र के एक मोहल्ले का रहने वाला है। उसके पिता रेलवे के रिटायर्ड हैं। वह मैकेनिकल विभाग में कर्मचारी थे। मनीष ने पड़ोस में रहने वाली नाबालिग लड़की को इशारे से पास बुलाया। फिर बगल में गेस्ट हाउस के पीछे ले गया। वहां उसके साथ रेप की कोशिश की।जब लड़की घर पर नहीं दिखी तो परिजनों ने उसकी तलाश शुरू की। घरवाले गेस्ट हाउस के पास पहुंच गए, जिसके बाद युवक वहां से भाग निकला । परिवार वाले देर रात तक उसकी तलाश करते रहे, लेकिन मनीष नहीं मिला।सुबह मोहल्ले के लोगों को पता चला कि युवक घर में छिपा बैठा है। इसके बाद भीड़ उसके घर पहुंची, उसे खींचकर बाहर निकाला, पीटा और घसीटते हुए थाने ले गई।परिजनों ने बताया कि वे सब्जी बेचकर परिवार चलाते हैं। लड़की सुन और बोल नहीं सकती है, वह कमर के नीचे से दिव्यांग है। उनके घर और आरोपी के घर के बीच की दूरी करीब 200 मीटर है।

डिप्टी सीएम का नैनी मेवालाल बगिया चौराहे पर जोरदार स्वागत किया गया

नैनी,प्रयागराज। भारतीय जनता पार्टी नैनी मंडल के मीडिया प्रभारी आकाश जायसवाल के नेतृत्व में बुधवार को उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य का जोरदार स्वागत व अभिनन्दन नैनी के मेवा लाल बगिया चौराहे पर किया गया। विधानसभा चुनाव 2027 में प्रचंड जीत दोहराने को तैयार उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य द्वारा नैनी में बन रहे इनर रिंग रोड के कार्य स्थल निरीक्षण का कार्यक्रम रखा गया। इस बाबत नैनी में आगमन के साथ उनका जोरदार स्वागत किया गया। स्वागत करने वालों में आकाश जायसवाल,अतुल सिंह, राम तिवारी, सोनू पटेल आदि मेवा लाल बगिया चौराहे पर भव्य स्वागत किया।

सुरक्षा आपका अधिकार, संकल्प हमारा

मेला पुलिस ने किया जागरूक

ब्यूरो प्रयागराज। पुलिस अधीक्षक माघ मेला नीरज कुमार पाण्डेय के दिशा-निर्देशों पर मेला क्षेत्र में बढ़ती भीड़ एवं आगामी स्नान पर्व को दृष्टिगत रखते हुए मेला पुलिस द्वारा व्यापक सतर्कता अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में समस्त थाना प्रभारी एवं शाखा प्रभारियों द्वारा अपने-अपने क्षेत्रों में लगातार भ्रमण किया जा रहा है तथा ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मियों से संवाद कर उन्हें उनके दायित्वों के संबंध में आवश्यक रूप से ब्रीफ किया जा रहा है। मेला क्षेत्र के प्रमुख मार्गों, स्नान घाटों, चौराहों/तिराहों एवं संवेदनशील स्थलों पर सघन चेकिंग अभियान चलाते हुए सतर्क निगरानी रखी जा रही है, ताकि किसी भी प्रकार की अव्यवस्था अथवा अप्रिय स्थिति को समय रहते रोका जा सके। जल पुलिस द्वारा निरंतर घाटों का भ्रमण कर जल की गहराई का आकलन किया जा रहा है तथा डीप वॉटर बैरिकेडिंग के माध्यम से स्नान घाटों की मजबूती सुनिश्चित की जा रही है। संगम घाट सहित अन्य जल क्षेत्रों में नौ-संचालकों को नावों पर सवार प्रत्येक श्रद्धालु को *लाइफ सेविंग जैकेट पहनाने एवं निर्धारित दर से अधिक किराया न वसूलने के लिए लगातार निर्देशित किया जा रहा है। थाना कल्पवासी, झूंसी, खाकचौक, प्राचीन गंगा, प्रयागवाल, उत्तरी झूंसी एवं नागवासुकी के थाना प्रभारियों द्वारा पुलिस अधीक्षक माघ मेला के निर्देशों के क्रम में आपसी समन्वय स्थापित करते हुए यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि मेला क्षेत्र में निवासरत कल्पवासियों एवं श्रद्धालुओं को किसी भी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े।

मारपीट की सीओ से शिकायत करने आई महिला गश खाकर गिरी

कोंच (जालौन): सर्किल के थाना कैलिया क्षेत्र की ग्राम भडारी निवासी रिंकी देवी उम्र 32 वर्ष बुधवार को अपने पति जितेन्द्र सिंह जाटव पुत्र महेंद्र सिंह के साथ बाइक पर सवार होकर ग्राम भडारी से कोंच सीओ आफिस मारपीट की शिकायत करने आयी थी। जैसे ही वह तहसील पहुंची तभी रिंकी अचानक गश खाकर बाइक से गिर पडी और बेसुध हो गयी। देखते ही देखते वहां लोगों की भीड एकत्रित हो गयी। जब इसकी जानकारी एसडीएम ज्योति सिंह को लगी तो वह भी मौके पर पहुंच गई और उन्होंने महिला से बात की। होश में आई महिला ने बताया कि गांव के ही रामशंकर पुत्र मथुरा प्रसाद के यहां चल रहे कैश फॉर समूह से वह जुडी हुई है। समूह की 6 जनवरी को बैठक थी जिसमें रूपये जमा होने थे। पीड़ित महिला ने बताया कि रामशंकर की पुत्री लकी ने उसके साथ बेबजह मारपीट कर दी। महिला ने बताया कि मारपीट का प्रार्थनापत्र लेकर वह थाना कैलिया भी गई थी लेकिन उसकी सुनवाई नहीं हुई। सीओ ने मामले में कैलिया पुलिस को कार्यवाही के निर्देश दिए हैं।

आखिरकार क्यों नहीं दिखाई देती मां सरस्वती? — संगम की रेत में छिपी आस्था की अमर धारा

● **जहां आंखें थक जाती हैं, वहीं से विश्वास बहने लगता है – अदृश्य मां की दिव्य उपस्थिति**

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ब्यूरो प्रयागराज। गंगा की निर्मल धारा, यमुना की शांत गंभीरता और उनके बीच मौन साधे बैठी एक अदृश्य शक्ति यही है त्रिवेणी संगम। यहां हर लहर कुछ कहती है, हर कण में आस्था की गूंज है। पर एक प्रश्न सदियों से मन में उठता रहा है आखिर मां सरस्वती दिखाई क्यों नहीं देतीं? हिंदू पुराणों और धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, मां सरस्वती कोई साधारण नदी नहीं, बल्कि ज्ञान, विवेक और चेतना की जीवंत धारा हैं। कहा जाता है कि वह पृथ्वी के गर्भ में समाहित होकर संगम तक पहुंचती हैं न दिखती हैं, न सुनाई देती हैं, पर महसूस हर हृदय करता है। यही कारण है कि उन्हें 'गुप्त' या 'अदृश्य' नदी कहा गया है। एक पौराणिक कथा के अनुसार, मां सरस्वती को विलुप्त होने का श्राप मिला था। पर यह विलुप्ति अंत नहीं थी, यह एक तपस्विनी का व्रत था अहंकार से दूर, शोर से परे, मौन में रहने का संकल्प। वह दृश्य से ओझल हुई, पर अस्तित्व से नहीं। जैसे ज्ञान जो दिखता नहीं, पर जीवन को दिशा देता है। संगम की रेत पर बैठकर जब श्रद्धालु आंखें मूंद लेते हैं, तब गंगा-यमुना की धाराओं के बीच एक तीसरी अनुभूति जन्म लेती है। यह अनुभूति बताती है कि मां सरस्वती यहां हैं हर मंत्रोच्चार में, हर स्नान के संकल्प में,हर साधक की साधना में। वह जल नहीं, चेतना हैं; वह प्रवाह नहीं, प्रेरणा हैं। माघ मेले और कुंभ के पावन अवसरों पर जब करोड़ों श्रद्धालु संगम में डुबकी लगाते हैं, तब कोई मां सरस्वती को खोजता नहीं क्योंकि वह मिल चुकी होती हैं। विश्वास में, भक्ति में, और उस शांति में जो स्नान के बाद मन में उतरती है। यही मां सरस्वती की महिमा है जो दिखती नहीं, पर मिटती भी नहीं।जो बोलती नहीं, पर सब कुछ कह जाती हैं। प्रयागराज का संगम केवल नदियों का मिलन नहीं, यह दृश्य और अदृश्य के बीच का सेतु है जहां आस्था आंखों से नहीं, आत्मा से देखी जाती है।

प्रो.भास्कर शुक्ल अखिल भारतीय विश्वविद्यालय संघ ने पर्यवेक्षक नमित

नैनी, प्रयागराज। हेमवती नंदन बहुगुणा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय के शारीरिक शिक्षा के विभाग अध्यक्ष प्रोफेसर भास्कर शुक्ल को अखिल भारतीय विश्वविद्यालय संघ के द्वारा वेस्ट जोन पुरुष फुटबॉल प्रतियोगिता के लिए नामित किया गया है ।यह प्रतियोगिता दिनांक 5 जनवरी से 11 जनवरी 2026 तक पारुल विश्वविद्यालय बड़ोदरा में आयोजित की जाएगी डॉ. शुक्ल कई बार अखिल भारतीय विश्वविद्यालय संघ के पर्यवेक्षक नियुक्त किया जा चुके हैं।आप प्रोफेसर राजेंद्र सिंह रज्जू भैया विश्वविद्यालय के क्रीड़ा सचिव के पद पर कई वर्षो तक कार्य किया एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक के रूप में कार्यरत हैं। डॉ भास्कर शुक्ल फुटबॉल खिलाड़ी राष्ट्रीय स्तर एवं अखिल भारतीय विश्वविद्यालय टीम के पदक विजेता टीम के सदस्य भी रहें है।डॉ भास्कर शुक्ल के पर्यवेक्षक नामित होने पर उच्च शिक्षा निदेशक डॉ बी. एल. शर्मा ,संयुक्त शिक्षा निदेशक डॉ. शशि कपूर ,महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ ओम प्रकाश एवं महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापकों ने शुभकामनाएं दी।

सम्पूर्ण समाधान दिवस में अफसरों की सख्ती, लापरवाह लेखपालों पर गिरी गाज

● **कहीं प्रतिकूलता प्रविष्टि, कहीं वेतन रोका गया, शिकायतों के निस्तारण में कोताही पर कड़ा एक्शन**

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

जनपद की विभिन्न तहसीलों में आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस के दौरान अधिकारियों ने कार्यों में लापरवाही व उदासीनता बरतने वाले लेखपालों के खिलाफ सख्त रुख अपनाया। साफ शब्दों में चेतावनी दी गई कि शिकायतों के निस्तारण में ढिलाई किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं की जाएगी। तहसील सदर में आयोजित समाधान दिवस में कुल एक सौ चौदह प्रकरण प्रस्तुत हुए, जिनमें से दस शिकायतों का मौके पर ही निस्तारण कराया गया।करेलाबाग निवासी श्री विनोद कुमार निषाद के वृद्धावस्था पेंशन से संबंधित प्रार्थना पत्र पर तत्काल रिपोर्ट लगवाकर निस्तारण सुनिश्चित कराया गया, जिससे फरियादी को राहत मिली। तहसील करछना में समाधान दिवस के दौरान कुल एक सौ दो प्रकरण सामने आए, जिनमें से तीन मामलों का तत्काल निस्तारण कराया गया। शेष प्रकरणों पर समयबद्ध कार्रवाई के निर्देश दिए गए। तहसील बारा में चकमार्ग खाते की भूमि से अवैध कब्जे की शिकायत पर प्रशासन ने सख्ती दिखाई। राजस्व निरीक्षक की जांच के बाद शिकायतकर्ता व संभ्रांत ग्रामीणों की मौजूदगी में मौके पर ही कब्जा हटवाया गया, जिससे ग्रामीणों में प्रशासनिक कार्रवाई को लेकर संतोष देखा गया। तहसील फूलपुर में समाधान दिवस और आईजीआरएस के प्रकरणों में लगातार लापरवाही सामने आने पर उपजिलाधिकारी फूलपुर ने दो लेखपालों पर कड़ा एक्शन लिया। बार-बार शिकायतें आने के बावजूद गुणवत्तापूर्ण निस्तारण न करने और आख्या न लगाने पर संबंधित लेखपालों को प्रतिकूल प्रविष्टि प्रदान की गई। तहसील कोरांव में बिना सूचना अनुपस्थित रहने,उच्चाधिकारियों के निर्देशों की अनदेखी करने और अपने हल्के में निवास न करने पर लेखपाल के खिलाफ कठोर कदम उठाया गया। अग्रिम आदेश तक वेतन रोक दिया गया है और तीन दिवस के भीतर लिखित स्पष्टीकरण तलब किया गया है। सम्पूर्ण समाधान दिवस के दौरान हुई इन कार्रवाइयों से साफ है कि अब लापरवाही पर सीधी कार्रवाई होगी और जनता की शिकायतों को हल्के में लेने वालों पर प्रशासन का शिकंजा और कसता जाएगा।

जिला बदर आदेश तोड़ने वाला कुख्यात बदमाश धराया, कौंधियारा पुलिस की बड़ी कार्रवाई

● **गैंगस्टर एक्ट में वांछित अपराधी राकेश चौधरी गिरफ्तार, 30 से अधिक मुकदमों का है लंबा आपराधिक इतिहास**

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कौंधियारा,प्रयागराज। कौंधियारा थाना पुलिस ने बड़ी सफलता हासिल करते हुए जिला बदर किए गए आदेश का उल्लंघन करने वाले कुख्यात अपराधी राकेश चौधरी को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी लंबे समय से पुलिस की निगरानी में था और गैंगस्टर एक्ट के मामले में वांछित चल रहा था। पुलिस के अनुसार राकेश चौधरी, निवासी ग्राम भमोखर, थाना कौंधियारा, को न्यायालय द्वारा छह माह के लिए जिले से बाहर रहने का आदेश दिया गया था, लेकिन वह आदेश की अनदेखी करते हुए क्षेत्र में सक्रिय पाया गया। सूचना के आधार पर पुलिस टीम ने सड़वा नहर पुलिया के पास से उसे धर दबोचा। गिरफ्तार अभियुक्त का नाम राकेश चौधरी है, जिसकी उम्र करीब 33 वर्ष बताई जा रही है। आरोपी के खिलाफ चोरी, लूट, रंगदारी, हत्या के प्रयास, अवैध हथियार, विस्फोटक पदार्थ, एनडीपीएस, धोखाधड़ी और गैंगस्टर जैसे गंभीर मामलों सहित तीन दशक से भी अधिक समय का आपराधिक रिकॉर्ड दर्ज है। अलग-अलग थानों में उसके खिलाफ 30 से ज्यादा मुकदमे पंजीकृत हैं। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि आरोपी की गिरफ्तारी से क्षेत्र

में आपराधिक गतिविधियों पर लगाम लगेगी और आम जनता में सुरक्षा का भरोसा मजबूत होगा। अभियुक्त के विरुद्ध आगे की विधिक कार्रवाई की जा रही है। इस पूरी कार्रवाई को थाना कौंधियारा पुलिस टीम ने अंजाम दिया, जिसमें थानाध्यक्ष कुलदीप शर्मा के नेतृत्व में पुलिसकर्मियों की अहम भूमिका रही।

यूपी पुलिस कॉन्स्टेबल भर्ती में अब 3 साल की छूट

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश में पुलिस भर्ती की तैयारी कर रहे लाखों युवाओं के लिए सरकार ने बड़ी राहत का ऐलान किया है. लंबे समय से भर्ती का इंतजार कर रहे अभ्यर्थियों को अब उम्र को लेकर चिंता करने की जरूरत नहीं होगी. मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर यूपी पुलिस और जेल विभाग की सीधी भर्ती में आयु सीमा में तीन साल की विशेष छूट दी गई है. यह फैसला कॉन्स्टेबल और उससे जुड़े समकक्ष पदों की सीधी भर्ती 2025 के लिए लागू होगा। सरकार का कहना है कि यह निर्णय पूरी तरह युवाओं के हित में लिया गया है. पिछले कुछ वर्षों में भर्ती प्रक्रियाओं में देरी के कारण कई योग्य उम्मीदवार उम्र सीमा पार कर चुके थे. ऐसे युवाओं को दोबारा मौका देने के लिए ही आयु सीमा में यह छूट दी गई है, ताकि ज्यादा से ज्यादा योग्य और मेहनती अभ्यर्थी भर्ती प्रक्रिया में शामिल हो सकें। इस फैसले के तहत कुल 32 हजार 679 पदों पर भर्ती की जाएगी. इन पदों में आरक्षी नागरिक पुलिस, पीएसी, सशस्त्र पुलिस, विशेष सुरक्षा बल, महिला बटालियन, घुड़सवार पुलिस और जेल वार्डर जैसे अहम पद शामिल हैं. शासनादेश जारी कर दिया गया है और जल्द ही आवेदन प्रक्रिया शुरू होने की उम्मीद है. भर्ती की घोषणा के बाद युवाओं में फिर से उत्साह देखने को मिल रहा है। नई व्यवस्था के अनुसार सामान्य वर्ग के पुरुष उम्मीदवारों के लिए अधिकतम आयु सीमा को 22 वर्ष से बढ़ाकर 25 वर्ष कर दिया गया है. वहीं सामान्य वर्ग की महिलाओं के लिए अधिकतम आयु सीमा 25 वर्ष से बढ़ाकर 28 वर्ष कर दी गई है. इससे उन महिला अभ्यर्थियों को भी राहत मिलेगी, जो कुछ सालों से भर्ती का इंतजार कर रही थीं। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग के अभ्यर्थियों को भी इस फैसले का बड़ा लाभ मिलेगा. इन वर्गों के पुरुष उम्मीदवारों के लिए अधिकतम आयु सीमा 27 वर्ष से बढ़ाकर 30 वर्ष कर दी गई है, जबकि महिलाओं के लिए यह सीमा 30 वर्ष से बढ़ाकर 33 वर्ष कर दी गई है. यानी अब पहले से ज्यादा उम्र के युवा भी यूपी पुलिस भर्ती में आवेदन कर सकेंगे। सरकार की ओर से यह भी साफ किया गया है कि यह आयु सीमा में छूट एक बार के लिए विशेष रूप से दी जा रही है. इसका लाभ सभी वर्गों के अभ्यर्थियों को मिलेगा, ताकि किसी के साथ भेदभाव न हो. शासन का मानना है कि इससे भर्ती प्रक्रिया ज्यादा पारदर्शी और व्यापक होगी।

माघ मेला पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में एटीएस द्वारा मेला क्षेत्र में आतंकवाद एवं अन्य आपात स्थितियों से निपटने हेतु मॉक ड्रिल

ब्यूरो प्रयागराज। माघ मेला-2026 को सुरक्षित, सुव्यवस्थित एवं निर्विघ्न रूप से संपन्न कराने के उद्देश्य से पुलिस अधीक्षक माघ मेलाद्ध नीरज कुमार पाण्डेय के निर्देशन में माघ मेला क्षेत्र के संगम स्नान घाट पर आतंकवाद निरोधक दस्ता (ज्ञ्स) द्वारा मॉक ड्रिल का आयोजन किया गया। इस मॉक ड्रिल में एटीएस एवं मेला पुलिस की संयुक्त टीमों द्वारा सहभागिता की गई। अभ्यास का उद्देश्य मेला क्षेत्र में किसी भी संभावित आतंकी खतरे, संदिग्ध गतिविधि अथवा आपात स्थिति में त्वरित, समन्वित एवं प्रभावी कार्यवाही की तैयारियों को जमीनी स्तर पर परखना था। मॉक ड्रिल के दौरान बम की सूचना प्राप्त होने की स्थिति, संदिग्ध व्यक्तियों की पहचान एवं गिरफ्तारी, भीड़ में अफरा-तफरी की स्थिति तथा त्वरित रेस्क्यू ऑपरेशन जैसे विभिन्न परिदृश्यों का अभ्यास किया गया, ताकि वास्तविक परिस्थितियों में त्वरित एवं सुरक्षित प्रतिक्रिया सुनिश्चित की जा सके। इस अभ्यास के माध्यम से यह स्पष्ट संदेश दिया गया कि माघ मेला-2026 के दौरान श्रद्धालुओं की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है तथा किसी भी आपात स्थिति से निपटने हेतु पुलिस एवं विशेष इकाइयाँ पूर्ण सतर्कता के साथ तैयार हैं।

इफको फूलपुर में ऑफ-साइट मॉक ड्रिल का सफल आयोजन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

प्रयागराज। इंडियन फारमर्स फ़र्टिलाइज़र कोआपरेटिव लिमिटेड (इफको), फूलपुर इकाई में जिला प्रशासन के सहयोग से लेवल-3 ऑफ-साइट आपातकालीन मॉक ड्रिल का आयोजन किया गया। इस अभ्यास का उद्देश्य संयंत्र एवं संयंत्र के बाहर संभावित औद्योगिक आपदा की स्थिति में तैयारी, त्वरित प्रतिक्रिया, समन्वय तथा जन-सुरक्षा व्यवस्थाओं की प्रभावशीलता का परीक्षण करना था। मॉक ड्रिल के दौरान अमोनिया भंडारण टैंक से काल्पनिक रूप से दो-चरणीय अमोनिया रिसाव की स्थिति दर्शाई गई। प्रारंभिक चरण में घटना संयंत्र सीमा के भीतर नियंत्रित रही, जिसमें महाप्रबंधक (इकाई प्रमुख) इफको फूलपुर पी. के. सिंह ने मुख्य घटना नियंत्रक की भूमिका निभाई। परिदृश्य के अनुसार स्थिति को ऑफ-साइट आपातकाल में परिवर्तित किया गया, जिसके उपरांत जिलाधिकारी, प्रयागराज के प्रतिनिधि के तौर पर नायब तहसीलदार आर के शुक्ला ने मुख्य घटना नियंत्रक की भूमिका निभाई। इस मॉक ड्रिल में मुख्य अग्निशमन अधिकारी, प्रयागराज - चन्द्र मोहन शर्मा तथा सहायक निदेशक, कारखाना - नवदीप श्रीवास्तव ने सरकारी अधिकारियों के रूप में सहभागिता की। मुख्य अग्निशमन अधिकारी ने मानव सुरक्षा के साथ-साथ पशुओं की सुरक्षा, उनके लिए चारे एवं पानी की व्यवस्था तथा स्थानीय निकायों के साथ समन्वय पर विशेष जोर दिया। उन्होंने यह भी कहा कि परिवार के सभी सदस्यों को ऐसे आपातकालीन परिदृश्यों का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए तथा निकासी के समय आवश्यक दैनिक दवाइयाँ अपने साथ रखनी चाहिए। सहायक निदेशक, कारखाना ने महिलाओं एवं बच्चों को भी आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूक करने तथा ऐसे अभ्यासों में उन्हें शामिल करने पर जोर दिया। मॉक ड्रिल के दौरान इंडियन आयल कारपोरेशन लिमिटेड, टाटा पावर, हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कारपोरेशन लिमिटेड एवं गेल से आए प्रेक्षक भी उपस्थित रहे, जिन्होंने अभ्यास का अवलोकन किया। मॉक ड्रिल के पश्चात समीक्षा बैठक आयोजित की गई, जिसमें भविष्य के सुधारात्मक कदमों पर चर्चा की गई। इस दौरान महाप्रबंधक क्रमशः संजय भंडारी, पी.के.पटेल, रत्नेश कुमार, संयुक्त महाप्रबंधक क्रमशः अरूण कुमार, पी.के. वर्मा, डॉ सत्य प्रकाश,आर.पी.यादव, पी.के.त्रिपाठी,संदीप गोयल,विभागाध्यक्ष मानव संसाधन शम्भू शेखर, मुख्य प्रबंधक अग्नि एंव सुरक्षा संजीव कुमार, अखिलेश निगम, मोहम्मद इरशाद एनटीपीसी मेजा,वरिष्ठ प्रबंधक गेल विनोद कुमार, प्रबंधक गेल लोकेश कुमार सिंह ,एस. एस. आलोक पीपीजीसीएल बारा,आलोक कुमार सिंह, किशन कुमार, वेदप्रकाश वर्मा व अन्य मौजूद रहे।

मेला पुलिस का सराहनीय कार्य परिजनों ने जताया आभार

● **माघ मेला क्षेत्र में स्नान-दर्शन करने आये.आधा दर्जन गायब फोन बरामद**

परिजनों ने जताया आभार

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ब्यूरो पयागराज- कशिश यादव पुत्री रवि शंकर पता डोकरिया मध्य प्रदेश, का संगम स्नान के दौरान मोबाइल फोन कहीं गिर गया, कशिश द्वारा तत्काल संगम नोज पर अधिकारियों के साथ ड्यूटी पर मौजूद आरक्षी धर्मेंद्र तिवारी वाचक कार्यालय माघ मेला से बताया गया कि मेरा फोन कहीं गिर गया है, आरक्षी धर्मेंद्र तिवारी द्वारा तत्काल 1 घंटे के अंदर फोन को खोज कर, संगम नोज पर कशिश को फोन सुपुर्द किया गया।

2- गौतम दत्त पुत्र मोतीलाल शर्मा निवासी थाना सिकंदरा, पश्चिमपुरा आगरा, का माघ मेला के दशाशुमेर घाट पर स्नान के दौरान बैग और मोबाइल कहीं खो गया 7 ड्यूटी पर मौजूद आरक्षी रोहित सिंह को गौतम दत्त द्वारा तुरंत अवगत कराया गया, आरक्षी रोहित द्वारा संबंधित का मोबाइल और बैक खोज कर थाना कोतवाली पर सुपुर्द किया गया।

3- साकेत शिव शंकर पुत्र साखरे शिव शंकर निवासी सोलापुर महाराष्ट्र, का स्नान के दौरान पर्स और फोन कही गिर खो गया, काफ़ी खोजबिन करने के बाद न मिलने पर साकेत द्वारा थाना झूंसी पर आ कर जानकारी दी गई, प्रभारी थाना झूंसी द्वारा तत्काल अपने हमराहियों के साथ स्नान घाट पर जाकर काफी खोजबीन करने के बाद पैसा और मोबाइल मिल गया, थाना प्रभारी ने थाना झूँसी पर संबंधित को पर्स, 15000 रुपया व फोन सुपुर्द किया गया।

4- एक छोटा बच्चा नाम लहू पुत्र गोविंद निषाद पता चाडी थाना औद्योगिक नगर, प्रयागराज, स्नान के दौरान अपने माता-पिता से बिछड़ गया, काफी खोजबीन करने के बाद थाना प्रयागवाल की टीम ने छोटे बच्चे लहू को खोज कर पिता गोविन्द निषाद को थाना प्रयागवाल पर सुपुर्द किया गया।

5- रोहिणी पत्नी रमेश पता जोगेश्वरी मुंबई माघ मेला में बड़े हनुमान जी का दर्शन करने के दौरान बैग कहीं खो गया, थाना महावीर पर जाकर रोहिणी द्वारा बैग खो जाने की सूचना दी गई, तत्काल कांस्टेबल उपेंद्र तिवारी द्वारा बैग खोज कर रोहिणी को थाना महावीर पर सुपुर्द किया गया। मोबाइल-पर्स-पैसा-बैग पाकर संबंधित परिजनों के द्वारा पुलिस के मानवीय कार्य की सरहानीय प्रशंसा करते हुये आभार प्रकट किया गया। पुलिस अधीक्षक माघ मेला एवं नोडल अधिकारी माघ मेला द्वारा सभी को प्रशस्ति पत्र देते हुए शुभकामनायें दी गई।

यूपी में 12 करोड़ 55 लाख से ज्यादा मतदाता, एसआईआर की ड्राफ्ट लिस्ट जारी

यूरो प्रयागराज। राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने बताया कि प्रदेश में 12.55 करोड़ मतदाता है। पहले चरण के बाद 2.89 करोड़ यानी 18 फीसदी नाम कट गए। 6 जनवरी से दावे-आपत्तियां की जा सकती हैं। जिनके भी नाम पहली ड्राफ्ट सूची में नहीं हैं, वे 6 फरवरी तक फॉर्म 6 भरकर जमा कर सकते हैं। ताकि उनका नाम जोड़ा जा सके। 6 मार्च 2026 को अंतिम सूची जारी की जाएगी।

संक्षिप्त खबरें

पूर्व मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा का बरही चौक पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने किया भव्य स्वागत

बरही, हजारीबाग, झारखंड:- झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा का बुधवार को बरही चौक पर भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा गर्मजोशी के साथ स्वागत किया गया। उनके आगमन पर कार्यकर्ताओं ने फूल-मालाओं के साथ जोरदार स्वागत कर पार्टी के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। इस अवसर पर हजारीबाग सांसद मनीष जायसवाल, भाजपा जिलाध्यक्ष विवेकानंद सिंह, जीप उपाध्यक्ष किशुन यादव, भाजपा नेता भैया अभिमन्यु प्रसाद, भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता, भाजपा जिला उपाध्यक्ष सह विधायक प्रतिनिधि रमेश ठाकुर, भाजपा प्रदेश नेता रंजीत चंद्रवंशी, जिप प्रतिनिधि गुरुदेव गुप्ता, मंडल अध्यक्ष नागेश्वर रजक, भाजपा मंडल प्रतिनिधि अमित साव, भाजपा युवा नेता आकाश जायसवाल सहित बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे। कार्यकर्ताओं ने पूर्व मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा के नेतृत्व की सराहना करते हुए उनके अनुभव का पार्टी और राज्य के लिए प्रेरणास्रोत बताया। स्वागत कार्यक्रम के दौरान माहौल उत्साहपूर्ण रहा और भाजपा कार्यकर्ताओं में विशेष जोश देखने को मिला।

जंगल और जमीन बचाने को दूधीमाटी में ग्राम सभा का सशक्त संदेश, सैकड़ों ग्रामीणों का ऐतिहासिक जुटान

चंदवा, झारखंड:- चंदवा प्रखंड के लाधुप पंचायत अंतर्गत सुदूरवर्ती ग्राम दूधीमाटी में जंगल और आदिवासी अधिकारों की रक्षा को लेकर सैकड़ों ग्रामीणों का ऐतिहासिक जुटान हुआ। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य वन संरक्षण के साथ-साथ भूमिहीन ग्रामीणों को जीवन यापन के लिए भूमि अधिकार दिलाने की मांग को मजबूती से उठाना रहा। इस अवसर पर पूरे विधि-विधान के साथ ग्राम सभा भवन का उद्घाटन वन अधिकार समिति के केंद्रीय प्रभारी राजेश कुमार महतो ने फीता काटकर किया। कार्यक्रम के उपरांत ग्राम प्रधान भिखु मुंडा द्वारा विधिवत पूजा-अर्चना के साथ अधिसूचना बोर्ड गाड़ा गया, जिससे ग्राम सभा की अधिकारिक भूमिका और जिम्मेदारियों को रेखांकित किया गया। मौके पर बड़ी संख्या में आसपास के गांवों से ग्रामीण पहुंचे और जंगल बचाने का संकल्प लिया। केंद्रीय प्रभारी राजेश कुमार महतो ने अपने संबोधन में कहा कि आज के समय में वन अधिकार कानून मजाक बनकर रह गया है। भूमिहीन ग्रामीणों को जीवन यापन के लिए जमीन मिलनी चाहिए, लेकिन इसके उलट कॉर्पोरेट घराने वन कानूनों को दरकिनार कर वन भूमि पर कब्जा कर रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि वन विभाग भी जंगलों को बचाने में असफल साबित हो रहा है। पेसा कानून को ग्रामीणों के हित में प्रभावी ढंग से लागू नहीं किया जा रहा, जिसके कारण आदिवासी क्षेत्रों में जमीन लूट की घटनाएं बढ़ रही हैं। उन्होंने वन अधिकार कानून को सख्ती से लागू करने की मांग की। समाजसेवी एवं वार्ड सदस्य फूलचंद गंझू ने कहा कि कार्यक्रम का मूल उद्देश्य जंगलों की रक्षा करना और भूमिहीन परिवारों को सम्मानजनक जीवन के लिए जमीन दिलाना है। सरकार को चाहिए कि वह ग्राम सभाओं की भूमिका को मजबूत करे और आदिवासी हितों की अनदेखी बंद करे। कार्यक्रम में इंदिरा आशीष, विजय भगत, दिलीप उरांव, सुधीर मुंडा, रवि गंझू, रामवचन देव गंझू, रामधन गंझू, सुनील भगत, बीफई भगत सहित दर्जनों गांवों से आए सैकड़ों ग्रामीण शामिल हुए। ग्रामीणों ने एकजुट होकर जंगल और जमीन की रक्षा के लिए संघर्ष जारी रखने का संकल्प लिया।

विकास भवन में प्रशासनिक सख्ती: सीआरओ के औचक निरीक्षण में 21 कर्मचारी गायब, 9 देरी से पहुंचे

बलिया। जिलाधिकारी के निर्देश पर मंगलवार को विकास भवन में प्रशासनिक सख्ती देखने को मिली, जब मुख्य राजस्व अधिकारी (सीआरओ) त्रिभुवन ने विभिन्न विभागों का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान कार्य संस्कृति पर सवाल उठाते हुए 21 कर्मचारी बिना सूचना के अनुपस्थित पाए गए, जबकि 9 कर्मचारी तय समय से विलंब से कार्यालय पहुंचे। सीआरओ ने विकास भवन के एक-एक कार्यालय का निरीक्षण कर उपस्थिति पंजिका की जांच की। इस दौरान यह भी सामने आया कि 5 कर्मचारी आकस्मिक अवकाश पर थे। अचानक हुए निरीक्षण से विकास भवन परिसर में अफरा-तफरी का माहौल बन गया। मुख्य राजस्व अधिकारी त्रिभुवन ने स्पष्ट किया कि निरीक्षण में अनुपस्थित और विलंब से आने वाले कर्मचारियों की विस्तृत रिपोर्ट जिलाधिकारी को सौंपी जाएगी। जिलाधिकारी के निर्देश के बाद संबंधित कर्मचारियों के खिलाफ आवश्यक कार्रवाई की जाएगी। निरीक्षण को लेकर कर्मचारियों में हड़कंप मचा रहा और प्रशासनिक अनुशासन को लेकर सख्त संदेश दिया गया।

शहीद शेख भिखारी व टिकैत उमरांव सिंह की 169वीं शहादत दिवस पर चुटूपालू घाटी में होगा श्रद्धांजलि कार्यक्रम : मो जहांगीर अंसारी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हजारीबाग , झारखंड:- ऑल इंडिया मोमिन कॉन्फ्रेंस हजारीबाग के जिला अध्यक्ष मो. जहांगीर अंसारी ने एक प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बताया कि 8 जनवरी 2025 को शहीद टिकैत उमरांव सिंह एवं शहीद शेख भिखारी उर्फ बोखारी की 169वीं शहादत दिवस के अवसर पर हजारीबाग सहित पूरे राज्य से अकीदतमंद रामगढ़ जिले के चुटूपालू घाटी स्थित शहादत स्थल पहुंचकर खराजे अकीदत पेश करेंगे। मो. जहांगीर अंसारी ने झारखंडवासियों, विशेषकर हजारीबाग जिले के नागरिकों से अपील की कि वे बड़ी संख्या में शहादत स्थल पर पहुंचकर देश के लिए अपने प्राण न्योछावर करने वाले वीर सपूतों को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करें। उन्होंने कहा कि शहीदों की मजारों पर हर वर्ष लगने वाले मेले और वहां उमड़ने वाली भीड़ इस बात का प्रमाण हैं कि वतन पर मरने वालों की कुर्बानी कभी भुलाई नहीं जा सकती। इस अवसर पर जिला अध्यक्ष मो. जहांगीर अंसारी ने शहीद शेख भिखारी के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए बताया कि उनका जन्म 2 अक्टूबर 1819 ई. को झारखंड के रांची जिले के ओरमांझी थाना क्षेत्र अंतर्गत होप्टे गांव में एक बुनकर अंसारी परिवार में हुआ था। वे बचपन से ही अपने पारिवारिक पेशे के तहत मोटे कपड़े तैयार कर बाजार में बेचते थे और इसी से परिवार का भरण-पोषण करते थे। कुशाग्र बुद्धि और अदम्य साहस के धनी शेख भिखारी मात्र 20 वर्ष की आयु में छोटानागपुर के महाराज के यहां नौकरी करने लगे और अपनी प्रतिभा के बल पर शीघ्र ही राजा के दरबार में महत्वपूर्ण स्थान बना लिया। बाद में बड़कागढ़ जगन्नाथपुर के राजा ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव ने उन्हें अपने यहां दीवान नियुक्त किया और फौजी जिम्मेदारी सौंपी। 1856-57 के दौरान जब अंग्रेजों ने भारतीय रियासतों पर आक्रमण की योजना बनाई, तब ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव ने अपने वजीर पांडेय गणपत राय, दीवान शेख भिखारी और टिकैत उमरांव सिंह के साथ विचार-विमर्श कर अंग्रेजों के खिलाफ मोर्चा खोलने का निर्णय लिया। इस क्रम में जगदीशपुर के बाबू कुंवर सिंह से भी पत्राचार हुआ। शेख भिखारी ने बड़कागढ़ की फौज में रांची और चाईबासा के नौजवानों की भर्ती शुरू कर दी। 1857 में अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ विद्रोह की चिंगारी पूरे छोटानागपुर क्षेत्र में फैल गई। रामगढ़ रेजीमेंट में विद्रोह हुआ, अंग्रेज अफसर को मार दिया गया और कई सिपाही शेख भिखारी की फौज में शामिल हो गए। परिणामस्वरूप रांची, चाईबासा और संथाल परगना जैसे इलाकों से अंग्रेजों को भागना पड़ा। ब्रिटिश जनरल मैकडॉनल्ड ने अपने बयान में शेख भिखारी को सबसे ज्यादा खतरनाक और बदनाम बागी बताया था। इन क्रांतिकारियों की देशभक्ति से घबराकर अंग्रेज कमिश्नर सिम्पसन को भी झारखंड छोड़कर कोलकाता भागना पड़ा। 2 अगस्त 1857 को बागी फौजों ने रांची और डोरंडा पर कब्जा कर लिया, जिससे अंग्रेजी शासन की नींव हिल गई। मो. जहांगीर अंसारी ने बताया कि 6 जनवरी 1858 को अंग्रेजों ने धोखे से शेख भिखारी, टिकैत उमरांव सिंह और उनके भाई घासी सिंह को गिरफ्तार कर लिया। इसके बाद 7 जनवरी 1858 को चुटूपालू घाटी में एक फौजी अदालत लगाकर शेख भिखारी और टिकैत उमरांव सिंह को फांसी की सजा सुनाई गई। 8 जनवरी 1858 को दोनों वीर सपूतों को

बरगद के पेड़ से लटकाकर फांसी दे दी गई और वे देश के लिए शहीद हो गए। शहादत दिवस के अवसर पर ऑल इंडिया मोमिन कॉन्फ्रेंस हजारीबाग ने 8 जनवरी को हिंदू-मुस्लिम एकता दिवस के रूप में मनाने की अपील की है। संगठन ने झारखंड सरकार से मांग की है कि शहीदों के परिजनों को सरकारी सुविधाएं दी जाएं, शहादत दिवस पर उन्हें सम्मानित किया जाए तथा 8 जनवरी को राजकीय अवकाश घोषित किया जाए ताकि अधिक से अधिक श्रद्धालु शहादत स्थल पर पहुंच सकें। इसके साथ ही मोमिन कॉन्फ्रेंस ने शहीद शेख भिखारी के नाम पर छात्रवृत्ति योजना शुरू करने, हजारीबाग शेख भिखारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल में उनके नाम से एक लाइब्रेरी स्थापित करने तथा उनकी जीवनी को विभिन्न कक्षाओं के पाठ्यक्रमों में शामिल करने की मांग की है। संगठन ने भारत सरकार से शहीद शेख भिखारी को भारत रत्न देने की भी मांग दोहराई। मो. जहांगीर अंसारी ने बताया कि शहीद शेख भिखारी के नाम पर हजारीबाग मेडिकल कॉलेज अस्पताल स्थापित करने के लिए मोमिन कॉन्फ्रेंस परिवार झारखंड सरकार के प्रति आभार व्यक्त करता है और अस्पताल परिसर में शहीद की आदमकद प्रतिमा स्थापित करने की भी मांग करता है।

आपको देश से निकाला जा सकता है, अमेरिकी दूतावास ने भारतीय छात्रों को क्यों धमकाया?

भारत स्थित अमेरिकी दूतावास ने अंतरराष्ट्रीय छात्रों को कड़ी चेतावनी जारी करते हुए कहा है कि अमेरिकी कानूनों का उल्लंघन करने पर छात्र वीजा रद्द किया जा सकता है, देश से निकाला जा सकता है और भविष्य में अमेरिका की यात्रा के लिए दीर्घकालिक अयोग्यता हो सकती है। एक्स पर शेयर पोस्ट में दूतावास ने इस बात पर जोर दिया कि अमेरिका में प्रवेश करना कोई अधिकार नहीं है और सभी वीजा धारकों से अपेक्षा की जाती है कि वे स्थानीय कानूनों और नियमों का सख्ती से पालन करें। यह ऐसे समय में हो रहा है जब भारत अमेरिका में अंतरराष्ट्रीय छात्रों के सबसे बड़े स्रोतों में से एक बना हुआ है, जिसमें लाखों छात्र अमेरिकी विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में नामांकित हैं।

एकल अभियान का सत्संग मंडली प्रतियोगिता संपन्न

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

चौपारण, हजारीबाग, झारखंड:- चौपारण प्रखंड के एकल अभियान संस्कार शिक्षा उत्तर झारखंड संभाग अंचल हजारीबाग संच चौपारण के उपसंच हरिजन कर्मा द्वारा आयोजित ग्राम दैहर कमला माता मंदिर प्रांगण में सत्संग मंडली प्रतियोगिता कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ मुखिया प्रतिनिधि नागेंद्र कुमार, झापा की पुर्व मुखिया पूर्णिमा देवी, कैलाश पांडेय, मुकेश पांडेय, सुरेश दांगी, कुलदीप पांडेय, मनोज डीलर, राहुल रंजन, मंगलेश पांडे, सच प्रमुख नंदकेश्वरी देवी, पत्रकार मिथुन कुमार, चौपारण संच हरिजन करमा व उप संच प्रमुख रिंकू देवी संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। इस सत्संग मंडली प्रतियोगिता में कुल आठ मंडलियों ने भाग लिया। सभी सत्संग मंडली ने भजन का प्रदर्शन किया। उसमें से प्रथम श्रेणी बेंदुआरा के मंडली, द्वितीय श्रेणी चयकला और तृतीय श्रेणी वेढना की मंडली प्राप्त ने किया। इन तीनों विजेताओं को हनुमान चालीसा का पुस्तक प्रदान कर सम्मानित किया गया। साथ ही अन्य सभी मंडलियों को रामनामा पट्टा देकर सम्मानित किया गया। इसके बाद

उपस्थित श्रद्धालुओं के बीच खिचड़ी प्रसाद का भी वितरण किया गया। इस कार्यक्रम में अंचल से अभियान प्रमुख विनोद कुमार, अंचल प्राथमिक शिक्षा प्रमुख नरेश, अंचल संस्कार शिक्षा प्रमुख अजय यादव, अंचल ग्राम स्वराज अभियान प्रमुख मुकुंद साव, संच शिक्षा प्रमुख नंदकेसरी देवी, संच प्रमुख. संच चौपारण व्यास प्रेम कुमार,भाजपा नेता भरत सिंह इत्यादि शामिल थे। इस कार्यक्रम में राम रौनक कुमार, लक्ष्मण कार्तिक कुमार, सीता आयुषी कुमारी, सरस्वती साक्षी कुमारी, हनुमान शमी सागर कुमार की झांकी भी निकाली गई। कार्यक्रम को सफल बनाने में आयोजन समिति सदस्य सुरेश, प्रेम, आचार्या रिंकू देवी, मुनि देवी, दिव्या कुमारी, रेखा देवी, इंदु देवी, काजल कुमारी, पार्वती देवी, सुनीता देवी, बविता देवी, रीता देवी, प्रमोद रंजन आदि की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

बरही में सुरक्षित एवं सशक्त महिला सशक्त झारखंड पर अनुमंडल स्तरीय प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन

● बाल विवाह, डायन प्रथा जैसे सामाजिक कुरीतियों को लेकर किया गया जागरूक

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बरही, हजारीबाग, झारखंड:- महिलाओं को सुरक्षित, सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से जिला समाज कल्याण कार्यालय, हजारीबाग के तत्वावधान में बुधवार को बरही नगर भवन में सुरक्षित एवं सशक्त महिला सशक्त झारखंड विषय पर अनुमंडल स्तरीय एक दिवसीय प्रशिक्षण-सह-कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला सामाजिक कुरीति विदारण योजना, बाल विवाह मुक्त झारखंड, मिशन शक्ति एवं अन्य राज्य स्तरीय योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन को लेकर आयोजित की गई। कार्यशाला का संचालन महिला पर्यवेक्षिका माधवी कुमारी ने किया। कार्यक्रम में अनुमंडल क्षेत्र की आंगनबाड़ी सेविकाएं, पंचायत सचिव, महिला कर्मी एवं अन्य संबंधित पदाधिकारी शामिल हुए। कार्यशाला में मुख्य रूप से जिला परिषद अध्यक्ष उमेश मेहता, उपाध्यक्ष किशुन यादव, बरही एसडीओ जोहन टुडू, डीएसपी अजीत कुमार बिमल, प्रमुख मनोज रजक, विधायक प्रतिनिधि रमेश ठाकुर, बरही बीडीओ जयपाल महतो, जीप सदस्य प्रतिनिधि गणेश यादव, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी शिप्रा सिन्हा, पदमा बीडीओ निधि रजवार, चौपारण बीडीओ संजय यादव सहित कई जनप्रतिनिधि एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे। इसके पश्चात मुख्य अतिथियों का स्वागत, दीप प्रज्वलन एवं बाल विवाह पर आधारित जागरूकता फिल्म का प्रदर्शन किया गया। इस अवसर पर पूजा राम, मनीषा गुप्ता, किरण कुमारी एवं अन्दू कुमारी सहित अन्य अतिथियों की उपस्थिति रही। स्वागत भाषण जिला समाज कल्याण पदाधिकारी द्वारा दिया गया, जिसमें उन्होंने कहा कि बाल विवाह, डायन प्रथा एवं अन्य सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के बिना महिला सशक्तिकरण का लक्ष्य अधूरा है। जिला परिषद अध्यक्ष उमेश मेहता एवं

उपाध्यक्ष किशुन यादव ने कहा कि सरकारी योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाना जनप्रतिनिधियों की जिम्मेदारी है। महिला सशक्तिकरण से ही सशक्त झारखंड का निर्माण संभव है। बरही एसडीओ जोहन टुडू ने कहा कि महिला सशक्तिकरण समाज के समग्र विकास की बुनियाद है। बाल विवाह और डायन प्रथा जैसी कुरीतियों के उन्मूलन के लिए प्रशासन पूरी तरह प्रतिबद्ध है। बरही डीएसपी अजीत कुमार बिमल ने कहा कि महिलाओं की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है और कानून उनके साथ खड़ा है। किसी भी प्रकार के अपराध या कुरीति के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। बरही प्रमुख मनोज रजक ने कहा कि पंचायत स्तर पर जागरूकता फैलाकर बाल विवाह और सामाजिक कुरीतियों को रोका जा सकता है। इसके लिए सभी को मिलकर सतत प्रयास करना होगा। विधायक प्रतिनिधि रमेश ठाकुर ने कहा कि सरकार महिलाओं और बालिकाओं के कल्याण के लिए अनेक योजनाएं चला रही है। इन योजनाओं का सही क्रियान्वयन समाज में सकारात्मक बदलाव लाएगा। बीडीओ जयपाल महतो एवं जिप प्रतिनिधि गणेश यादव ने संयुक्त रूप से कहा कि प्रशासन और पंचायतों के समन्वय से योजनाएं प्रभावी रूप से लागू होंगी। गांव-गांव तक जागरूकता पहुंचाकर महिला सशक्तिकरण को मजबूती दी जाएगी।कार्यशाला के दौरान राज्य स्तरीय टीम द्वारा मुख्यमंत्री कन्यादान योजना सहित विभिन्न राज्य स्तरीय योजनाओं पर आधारित फिल्में दिखाई गई। साथ ही डायन प्रथा एवं सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन पर विशेष सत्र आयोजित किया गया, जिसमें प्रतिभागियों को कानून, अधिकारों एवं सरकारी सहायता योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी गई। बाल विवाह मुक्त झारखंड सत्र के अंतर्गत उपस्थित सभी प्रतिभागियों को बाल विवाह एवं डायन प्रथा को समाप्त करने हेतु शपथ दिलाई गई। इसके बाद मिशन शक्ति योजना पर सत्र एवं वीडियो प्रस्तुति के माध्यम से महिलाओं की सुरक्षा, स्वावलंबन एवं सशक्तिकरण से जुड़ी योजनाओं की जानकारी साझा की गई। दोपहर के सत्र में प्रतिभागियों के साथ संवाद एवं भविष्य की कार्ययोजना पर चर्चा की गई, जिसमें जमीनी स्तर पर योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन, जागरूकता अभियान चलाने एवं सामाजिक बुराइयों के खिलाफ सामूहिक प्रयासों पर बल दिया गया। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। मौके पर भाजपा मंडल अध्यक्ष नागेश्वर रजक, महिला पर्यवेक्षिकाएं पूजा राय, अनुराधा पासवान, रुकसाना प्रवीण, विना देवी, अन्विता कुमारी, रेशमी कुमारी, सुनीता कुमारी, रंजीता कुमारी, निभा कुमारी, संयुक्ता कुमारी, इंदु कुमारी, मंजू कुमारी सहित बड़ी संख्या में महिला कर्मी, जेएसएलपीएस बीपीएम केदार प्रजापति, पायल कुमारी एवं अनुमंडल की सभी आंगनबाड़ी सेविकाएं उपस्थित थीं। कार्यशाला के माध्यम से महिलाओं को उनके अधिकारों, सुरक्षा उपायों एवं सरकारी योजनाओं की जानकारी देकर समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का संकल्प लिया गया।

स्थापना दिवस पर हुआ हवन पूजन

लखीमपुर खीरी। पतंजलि के 32 वें स्थापना दिवस पर मोहल्ला श्याम नगर में योग आयुर्वेद स्वदेशी सनातन धर्म सनातन शिक्षा सनातन चिकित्सा सनातन अनुसंधान सनातन कृषि गौ माता एवं भारत माता की सेवा करते हुए परम वैभवशाली विकसित भारत के निर्माण हुए समस्त ऋषि ऋषिकाओं के वंशधरों से आवाहन किया गया और सभी के द्वारा यज्ञ में आहूति दी गई।यह कार्यक्रम जिला प्रभारी सोनिया दीक्षित की अध्यक्षता में संपन्न हुआ जिसमे महामंत्री सीमा,सोशल मीडिया प्रभारी रश्मी,योग शिक्षक प्रीति,रश्मि,नीलम और भावना उपस्थित रही।

स्वास्थ्य विभाग की टीम पहुंची बरसोत, टीकाकरण के बाद चार माह के बच्चे की मौत मामले की हुई जांच, परिजनों से ली पूरी जानकारी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बरही- बरही प्रखंड के बरसोत गांव में टीकाकरण के बाद चार माह के बच्चे की संदिग्ध परिस्थितियों में हुई मौत के मामले की जांच के लिए बुधवार को स्वास्थ्य विभाग की टीम गांव पहुंची। टीम मृतक बच्चे के घर जाकर परिजनों से घटना से जुड़ी विस्तृत जानकारी ली। परिजनों ने जांच टीम को बताया कि बच्चे को टीका लगाए जाने के बाद शाम करीब 5 बजे उल्टी और दस्त शुरू हो गया। स्थिति बिगड़ने पर रात में उसे हजारीबाग के एक निजी अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। परिजनों ने टीम को बताया कि बच्चे की तबीयत पहले से खराब थी, इसके बावजूद टीकाकरण किया गया। परिजनों का आरोप है कि टीकाकरण के बाद बढ़ती समस्या की जानकारी एएनएम को देने के बावजूद कोई आवश्यक पहल नहीं की गई। जांच टीम ने बच्चे के माता-पिता से बीमारी के लक्षण, दवा चल रही थी या नहीं, टीकाकरण का समय, अचानक बिगड़ी स्थिति समेत अन्य पहलुओं पर सवाल

पूछकर तथ्यों को संकलित किया। टीम ने बताया कि मामले की विस्तृत रिपोर्ट तैयार कर आगे संबंधित विभाग को भेजी जाएगी। इस दौरान टीम में डब्लूएचओ सर्विलेंस मेडिकल ऑफिसर डॉ. दीपक, डीआरसीएचओ डॉ. सुभाष प्रसाद, अनुमंडलीय अस्पताल के उपाधीक्षक डॉ. प्रकाश ज्ञानी, अर्बन मेडिकल ऑफिसर डॉ. ज्योति कुमारी, मो. शाहनवाज (डिस्टिक कोल्ड चेन हैंडलर), डब्लूएचओ फील्ड मॉनिटर सूरज राम रवि, स्थानीय मुखिया मोतीलाल चौधरी सहित मृतक बच्चे के माता-पिता व बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे।

नगर निकाय चुनाव की मांग को लेकर मधुपुर में भाजपा का प्रदर्शन

● ईवीएम व दलीय आधार पर चुनाव कराने की उठी मांग, शंखनाद के साथ सरकार को घेरा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मधुपुर, देवघर, झारखंड:- झारखंड में नगर निकाय चुनाव अविलंब कराने की मांग को लेकर भारतीय जनता पार्टी ने मंगलवार को राज्य सरकार के खिलाफ मोर्चा खोल दिया। नगर परिषद कार्यालय के समक्ष भाजपा जिलाध्यक्ष सचिन रवानी के नेतृत्व में एक दिवसीय धरना-प्रदर्शन आयोजित किया गया। इस दौरान दलीय आधार पर चुनाव, ईवीएम से मतदान तथा चुनाव में हो रही देरी को लेकर सरकार पर तीखा हमला बोला गया। कार्यक्रम का संचालन नगर अध्यक्ष रवि रवानी ने किया। धरना-प्रदर्शन को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि एवं राज्य के पूर्व मंत्री रणधीर सिंह ने कहा कि झारखंड सरकार झूठ की बुनियाद पर टिकी है। 57 लाख महिलाओं को मंईया सम्मान योजना का लाभ देने का वादा कर वोट लिया गया, लेकिन वर्तमान में मात्र 25 लाख महिलाओं को ही इसका लाभ मिल रहा है, जो राज्य की माताओं-बहनों के साथ घोर अन्याय है। उन्होंने आरोप लगाया कि राज्य में विकास राशि की लूट, कमीशनखोरी, भ्रष्टाचार और अवैध वसूली चरम पर है। रणधीर सिंह ने कहा कि नगर निकाय चुनाव समय पर कराना सरकार की संवैधानिक जिम्मेदारी है, लेकिन जानबूझकर इसे टाला जा रहा है। ईवीएम से मतदान और काउंटिंग पारदर्शी होती है, फिर भी सरकार चुनाव से भाग रही है। जनता के जनादेश से डर के कारण चुनाव की तिथि घोषित नहीं की जा रही है, जो लोकतांत्रिक व्यवस्था को कमजोर करने की साजिश है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि जल्द चुनाव नहीं कराए गए तो सरकार के नुमाइंदों के आवास का घेराव किया जाएगा। भाजपा जिलाध्यक्ष सचिन रवानी ने कहा कि राज्य में विकास राशि की लूट और भाई-भतीजावाद हावी है। हर विभाग में अवैध वसूली के लिए लोग तैनात हैं और जनता की भावनाओं के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। पूर्व नगर परिषद अध्यक्ष संजय यादव ने कहा कि नगर निकायों में जनप्रतिनिधि नहीं होने से विकास योजनाएं ठप पड़ी हैं और नगर परिषद में नियम-कानून को ताक पर रखकर काम किया जा रहा है। धरना के

दौरान राज्य सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की गई। कार्यक्रम के समापन के बाद भाजपा के प्रतिनिधिमंडल ने नगर परिषद कार्यालय में नगर प्रशासक को मांगों से संबंधित ज्ञापन सौंपते हुए शीघ्र नगर निकाय चुनाव कराने की मांग की। इस अवसर पर जिला महामंत्री अधीर चंद्र भैया, उपाध्यक्ष पप्पू यादव, रवि तिवारी, ओम प्रकाश सिंह, ऋषि सिंह, किसान मोर्चा के जिलाध्यक्ष विश्वनाथ रवानी, सुमित झा, बलवीर राय, सचिन राय, महिला नेत्री सुनीता जायसवाल, मालती सिन्हा, पंकज सिंह भदोरिया, एनूल होदा, संतोष शरण, दिलीप यादव, गोपाल मोदी, सत्यानारायण रवानी, संतोष भगत, विकास राय, अशोक यादव, संतोष गुप्ता सहित सैकड़ों भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित थे।

बरही अनुमंडलीय अस्पताल में आज लगेगा प्रखंड स्तरीय स्वास्थ्य मेला, तैयारी को लेकर बीएलटीएफ की बैठक सम्पन्न

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बरही, हजारीबाग, झारखंड:- बरही अनुमंडलीय अस्पताल परिसर में आज सुबह 9 बजे से अपराह्न 3 बजे तक प्रखंड स्तरीय स्वास्थ्य मेला आयोजित किया जाएगा। स्वास्थ्य मेला की तैयारियों को लेकर बीडीओ जयपाल महतो की अध्यक्षता में ब्लॉक लेवल टास्क फोर्स की बैठक आयोजित की गई, जिसमें मेला को सफल बनाने को लेकर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। इस संबंध में जानकारी देते हुए अनुमंडलीय अस्पताल के उपाधीक्षक डॉ. प्रकाश ज्ञानी ने बताया कि इस प्रखंड स्वास्थ्य मेला का उद्घाटन बरही विधायक मनोज यादव द्वारा किया जाएगा। उन्होंने बताया कि स्वास्थ्य मेला में विभिन्न विभागों के स्टॉल लगाए जाएंगे, जिनके माध्यम से आमजनों को निःशुल्क स्वास्थ्य जांच एवं परामर्श की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। स्वास्थ्य मेला में सामान्य चिकित्सा सेवा के साथ-साथ मातृ स्वास्थ्य, शिशु एवं बाल स्वास्थ्य, टीकाकरण, परिवार नियोजन परामर्श, आईईसी-परिवार कल्याण, मोतियाबिंद जांच, आंख- कान- गला (ईएनटी) जांच, दंत चिकित्सा, त्वचा रोग जांच,

पोषण परामर्श जैसी सेवाएं दी जाएंगी। इसके अतिरिक्त आरटीआई/ एसटीआई/ एड्स नियंत्रण, कुष्ठ रोग, टीबी, मलेरिया जांच, अंधापन की रोकथाम हेतु नेत्र जांच, तंबाकू व धूम्रपान से होने वाले दुष्प्रभावों पर जागरूकता, कैंसर नियंत्रण जागरूकता, व्यक्तिगत एवं पर्यावरणीय स्वच्छता तथा पुनर्वास सेवाएं भी उपलब्ध रहेंगी। डॉ. ज्ञानी ने बताया कि स्वास्थ्य मेला में भारतीय चिकित्सा पद्धति के अंतर्गत आयुर्वेद, यूनानी एवं होम्योपैथी से संबंधित जांच और परामर्श की सुविधा भी दी जाएगी। मेला को सफल बनाने एवं अधिक से अधिक लोगों तक जानकारी पहुंचाने के लिए विभिन्न पंचायतों में प्रचार वाहन के माध्यम से व्यापक प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। उन्होंने पंचायत प्रतिनिधियों समेत आम जनता से अपील की है कि वे इस प्रखंड स्तरीय स्वास्थ्य मेला में पहुंचकर उपलब्ध स्वास्थ्य सेवाओं का अधिक से अधिक लाभ उठाएं और समय पर अपने स्वास्थ्य की जांच कराएं। बैठक में जीप उपाध्यक्ष किशुन यादव, प्रमुख मनोज रजक, विधायक प्रतिनिधि रमेश ठाकुर, डीएस डॉ. प्रकाश ज्ञानी, एचएम सुधांशु शेखर, एमटीएस मो इरशाद, बैम गौतम कुमार समेत अन्य उपस्थित रहे।

चौपारण क्षेत्र में शोक सभाओं में पहुंचे सांसद मनीष जायसवाल, दिवंगत आत्माओं को दी श्रद्धांजलि

● ब्रह्मभोज एवं श्रद्धांजलि सभाओं में शामिल होकर शोकाकुल परिवारों को दिया संबल

चौपारण पूर्वी मंडल उपाध्यक्ष सुनील सिंह से मिलकर जाना उनका कुशलक्षेम

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

चौपारण, हजारीबाग, झारखंड:- चय परगना ब्रह्मर्षि समाज के पूर्व सभापति स्वर्गीय खुशी प्रसाद सिंह की धर्मपत्नी एवं वर्तमान अध्यक्ष सुधीर सिंह की पूज्य माताजी स्वर्गीय सुमित्रा देवी के 105 वर्ष की दीर्घायु में निधन से पूरे चय परगना क्षेत्र में शोक की लहर व्याप्त है। वे अपने सादगीपूर्ण जीवन, गहरी धार्मिक आस्था और मजबूत सामाजिक मूल्यों के लिए जानी जाती थीं। उनका जीवन परिवार व समाज के लिए प्रेरणास्रोत रहा। आज उनके ब्रह्मभोज सह श्रद्धांजलि सभा के अवसर पर हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के माननीय सांसद मनीष जायसवाल चौपारण के चतरा मोड़ स्थित उनके आवास पहुंचे और दिवंगत आत्मा को श्रद्धासुमन अर्पित कर नमन किया। सांसद ने ईश्वर से दिवंगत आत्मा की चिर शांति एवं मोक्ष की प्रार्थना करते हुए शोकाकुल परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की कामना की। इसी क्रम में सांसद मनीष जायसवाल भाजपा चौपारण पश्चिमी मंडल के महामंत्री आशीष सिंह के पूज्य पिता स्वर्गीय आदित्य सिंह के एकादशा के अवसर पर चौपारण प्रखंड के सोहरा गांव स्थित उनके आवास पहुंचे। उन्होंने ब्रह्मभोज सह श्रद्धांजलि सभा में शामिल होकर दिवंगत आत्मा की शांति एवं परिजनों को अदम्य साहस प्रदान करने की प्रार्थना की। इसके अलावा चौपारण प्रखंड के ग्राम पंचायत दैहर निवासी स्वर्गीय टुकन प्रजापति के एकादश सह श्रद्धांजलि सभा में भी सांसद शामिल हुए और शोकसंतप्त परिवार को ढांढस बंधाया। इस दौरान सांसद ने भाजपा मंडल उपाध्यक्ष सुनील सिंह (भगवानपुर निवासी) के आवास पहुंचकर उनका कुशलक्षेम भी जाना, जो हाल ही में सड़क दुर्घटना में घायल हो गए थे। इस अवसर पर वरिष्ठ चौपारण पश्चिमी मंडल अध्यक्ष मुकेश सिन्हा, चौपारण पूर्वी मंडल अध्यक्ष राजेंद्र चंद्रवंशी, भाजपा नेता मुकुंद साव, अर्जुन साव, राम स्वरूप पासवान, मुकेश साव, मंडल महामंत्री अरविंद कुमार सिंह, कृष्णा कुमार साव, विराज रविदास, देवेंद्र सिंह, करुणा सिंह, प्रमोद सिंह, जनार्दन सिंह, गजाधर प्रसाद, सीताराम साहू, मिथुन कुमार, गंदौरी दांगी, देव कुमार दांगी, अजय पासवान, सुरेश दांगी, सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

सब्जी ठेला चालक से दुकानदार ने की मारपीट

सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल, एफआईआर दर्ज

ललितपुर। सब्जी लेकर घर जाते समय गाड़ी में ठोकर लग जाने पर हाथ ठेला चालक से दुकानदार ने अपने पुत्र के साथ मारपीट कर दी, जिससे वह घायल हो गया। इस घटना का वीडियो किसी ने बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया। वीडियो वायरल होते ही पुलिस हरकत में आ गयी और मारपीट करने वाले पिता-पुत्र के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी। मोहल्ला रावतयाना पुराना सागर रोड निवासी खलील पुत्र कल्लू ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि 6 जनवरी को वह अपराह्न 12 बजे ठेले पर सब्जी लेकर अटा मंदिर के पास से तालाबपुरा जा रहा था, तभी गुजराती नमकीन वालों के पास बीज-रोड पर मोटर साइकिल लगाये राजेन्द्र व उसका पुत्र सिद्धार्थ की बाइक में ठेला की ठोकर लग गयी। इसी बात को लेकर राजेन्द्र, उसके भाई व पुत्र सिद्धार्थ ने उसके साथ गालियां देते हुये मारपीट कर दी। राहगीरों ने बीच-बचाव करने का प्रयास किया, लेकिन उक्त लोग मारपीट करते रहे। इस हमले में उसके सिर व शरीर में चोटें आयीं हैं। पीड़ित ने बताया कि दिव्या नाम से कपड़ों की दुकान खोले राजेन्द्र ने उसे जान से मारने की धमकी दी। पुलिस ने पीड़ित की तहरीर पर राजेन्द्र व उसके पुत्र सिद्धार्थ के खिलाफ बीएनएस की धारा 352, 115 (2), 351 (3) के तहत एफआईआर दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी।

आज से 26 जनवरी तक मिलेगा खाद्यान्न

ललितपुर। जिला पूर्ति अधिकारी उमेशचन्द्र मिश्र ने बताया कि आयुक्त खाद्य तथा रसद विभाग लखनऊ के पत्र 08 जनवरी 2026 द्वारा अवगत कराया कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013 के अन्तर्गत माह जनवरी 2026 के सापेक्ष आवंटित खाद्यान्न का जिले के अन्त्योदय एवं पात्रगृहस्थी कार्डधारकों को 08 से 28 जनवरी 2026 तक आवश्यक वस्तुओं का वितरण किया जाना है। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के अन्तर्गत अन्त्योदय कार्डधारको 14 कि.ग्रा. गेंहू, 21 कि.ग्रा.चावल प्रति कार्ड एवं पात्रगृहस्थी कार्डधारकों को 2 कि.ग्रा. गेंहू, 3 कि.ग्रा.फोर्टिफाईट चावल (कुल 05 कि.ग्रा. खाद्यान्न) प्रति यूनिट निःशुल्क वितरण किया जायेगा। अतएव जिले के सभी अन्त्योदय एवं पात्र गृहस्थी राशन कार्डधारकों को सूचित किया जाता है कि 08 से 28 जनवरी 2026 तक उचित दर दुकानों पर उपस्थित होकर ई-पॉस के द्वारा आधार प्रमाणीकरण के माध्यम से माह जनवरी 2026 हेतु आवंटित गेंहू-चावल निशुल्क प्राप्त करना सुनिश्चित करें। आधार प्रमाणीकरण के माध्यम से आवश्यक वस्तुयें प्राप्त न कर सकने वाले उपभोक्ताओं को मोबाइल ओ.टी.पी. वेरिफिकेशन के माध्यम से वितरण की अंतिम तिथि 28 जनवरी 2026 को निशुल्क वितरण सम्पन्न किया जायेगा।

शिवसेना (शिंदे गुट) जिलाध्यक्ष व प्रदेश सदस्य का हुआ सम्मान

सभागार में बार एसोसिएशन अध्यक्ष व पूर्व अध्यक्ष ने किया सम्मानित

ललितपुर। जिला बार एसोसिएशन के तत्वाधान में बार सभागार में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में अध्यक्ष हरिराम राजपूत एड. एवं पूर्व अध्यक्ष काशीराम कुशवाहा एड. ने संयुक्त रूप से शिवसेना (शिंदेगुट) जिलाध्यक्ष राकेश नामदेव एवं प्रदेश सदस्य पं.अखलेश चौबे का सम्मान फूल मालाएं पहनाकर किया। मौके पर मिष्ठान खिलाते हुये शॉल-श्रीफल भी भेंट किया गया। मंच से समस्त शिवसेना (शिंदेगुट) कार्यकारणी सदस्यों का सम्मान किया। इस दौरान दिग्विजय सिंह बुन्देला, कपिल नामदेव, रिंकू कुशवाहा, सुनील रैकवार, रामस्वरूप नामदेव, अर्जुन बरार, सुन्दरम ताम्रकार, सुरेन्द्र रैकवार, सोनू, चंदेल, भगवानदास चंदेल, सोनू कुशवाहा, राजीव कुशवाहा, अश्वनी शर्मा, जसवन्त नामदेव, सत्यम ताम्रकार, सुरेन्द्र रैकवार, ओमप्रकाश नामदेव, अनिकेत कुशवाहा, राजा नामदेव, शिवकुमार चंदेल एवं सैकड़ों की तादात में शिवसेना (शिंदेगुट) का सम्मान समारोह किया गया। अंत में गनेशराम रजक ने सभी का आभार व्यक्त किया गया।

राइफल से गोली मार देने की धमकी

ललितपुर। महरौनी के ग्राम बम्हौरी बहादुर सिंह निवासी दिनेश कुमार राय पुत्र बालकृष्ण ने पुलिस को तहरीर देकर बताया कि 5 जनवरी की रात करीब 10.30 बजे गांव के भगवानदास पुत्र अंगद ने उसे गालियां देते हुये राइफल से गोली मारकर हत्या कर देने की धमकी देने का आरोप लगाया है। पीड़ित ने जानमाल का खतरा बताया है। पुलिस ने पीड़ित की तहरीर पर भगवानदास के खिलाफ बीएनएस की धारा 115 (2), 352, 351 (3) के तहत एफआईआर दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी।

एलयूसीसी में लाखों रुपये निवेश कराकर रकम हड़पने का आरोप

●न्यायालय के आदेश पर तालबेहट पुलिस ने दर्ज किया मामला

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ललितपुर। कोतवाली तालबेहट अंतर्गत मोहल्ला चौबयाना में रहने वाले शक्ति पुत्र श्रीराम ने सीजेएम न्यायालय में दावा पेश किया है। न्यायालय को शक्ति ने अवगत कराया कि उसके घर पूराकलां थाना व हाल मोहल्ला चौबयाना निवासी दीपक पुत्र प्रकाश अहिरवार वर्ष 2019 में अपने आठ-दस साथियों के साथ एकराय होकर आये और एलयूसीसी कम्पनी का एजेन्ट बताते हुये कम्पनी द्वारा कम समय में रुपयो दोगुना करने की बात कही। इतना ही नहीं समय से भुगतान कराने के लिए स्टाम्प पर तहरीर लिखकर दी थी, जिससे वह उनकी बातों में आ गया और स्वयं के नाम से आई.डी. नं. 8558563 में 2 लाख रुपये, आई.डी. 8571254 में 1.50 लाख रुपये, आई.डी. नं. 8312511 में 90 हजार रुपये, आई.डी. 8312517 में 40 हजार रुपये, आर.डी. मेम्बर आई.डी. 8535310 मु. 3 हजार रुपये, 8311828 मु.2 हजार रुपये, अपनी मां कुसुम के नाम 1.43 लाख रुपये, सास कुसुम पत्नी किशोरी के नाम मेम्बर आई.डी. 8312507 मु.30 हजार रुपये, आई.डी. 1436509 मु.50 हजार रुपये व पत्नी महिमा के नाम एफ.डी. आई.डी. 8312515 मु. 1.43 लाख रुपये खोली गयी थी। आई.डी. की परिपक्वता वर्ष 2024 से अब तक समय समय पर पूर्ण होती जा रही है। परन्तु अभी तक किसी भी आर.डी. अथवा एफ.डी. का भुगतान नहीं किया गया है। उसके द्वारा सम्पर्क करने पर बताया गया कि कुछ समय बाद भुगतान हो जायेगी, यह कहते हुये टाल-मटोल कर व आश्वासन देते रहे। समाचार पत्रों में कम्पनी के भागने की जानकारी हुयी तो उक्त दीपक अहिरवार से सम्पर्क किया गया, तो दीपक ने रकम वापसी की बात कही। 4 सितम्बर 2025 को 8 बजे जब वह एजेन्ट दीपक के घर चौबयाना गया और भुगतान की बात कही तो दीपक ने कहा कि उसने कूटरचना कर संगठित गिरोह बनाकर उसकी रकम हड़प ली है और झूठे मुकद्दमें में फंसाने की धमकी दी। घटना को महेन्द्र पुत्र राजकुमार वंशकार व अन्य लोगों ने देखा और समझाया। मामले की शिकायत 4 सितम्बर को एसपी के समक्ष की, लेकिन कार्यवाही नहीं हुयी। तब उसे न्यायालय की शरण लेनी पड़ी। न्यायालय के आदेश पर कोतवाली तालबेहट पुलिस ने दीपक अहिरवार व आठ-दस अज्ञात के खिलाफ बीएनएस की धारा 111, 318, 61 (2), 352, 351 (3), 336 (3), 340 (2) के तहत मामला दर्ज कर लिया है।

ड्राइवर पर शराब के नशे में टैक्सी पलटाने का आरोप

घायल महिला के पति ने दर्ज करायी एफआईआर

ललितपुर। निकटवर्ती ग्राम कुमरौल निवासी पुनू पुत्र रामप्रसाद ने पुलिस को शिकायती पत्र दिया है। बताया कि वह मेहनत-मजदूरी करके अपना व परिवार का भरण पोषण करता है। बताया कि 24 दिसम्बर को उसकी पत्नी मेवा अपने गांव कुमरौल से ललितपुर आ रही थी। वह कुमरौल तिराहा से तीन पहिया टैक्सी संख्या यू.पी.94 टी 4700 में सवार हुई थी। आरोप है कि टैक्सी चालक शराब के नशे में होने के कारण बेतरबीव तरीके से टैक्सी चला रहा था। जब उसकी पत्नी से ठीक से टैक्सी चलाने की बात चालक से कही तो उसने टैक्सी सड़क से नीचे उतार दी, जिससे टैक्सी पलट गयी और चालक मौके से भाग गया। इस दुर्घटना में उसकी पत्नी को चोटें आयीं। राहगीरों ने एंबुलेंस के जरिए घायल पत्नी को सीएचसी बिरधा पहुंचाया, जहां से उसे जिला अस्पताल पहुंचाया गया। पीड़ित ने बताया कि वह इधर-उधर से रुपये उधार लेकर पत्नी का उपचार करा रहा है। पुलिस ने पीड़ित की तहरीर पर टैक्सी चालक के खिलाफ बीएनएस की धारा 281, 125 (बी) के तहत मामला दर्ज कर लिया है।

चबूतरा पर जुआ खिला रहे दबंगों को मना करने पर मारपीट

●दूसरे पक्ष ने भी लगाये मारपीट के आरोप, दोनों पक्षों का मामला दर्ज

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ललितपुर। सिटी चौकी अंतर्गत मोहल्ला विष्णुपुरा में मसान बाबा के पास रहने वाली माया पत्नी सचिन ने पुलिस को शिकायती पत्र दिया है। बताया कि बीती 2 जनवरी को सुबह 9 बजे वह घर पर थी। तभी घर के बाहर उसके चबूतरा पर शैलेन्द्र व सुनील पुत्रगण चंचल कई लोगों को बैठाकर जुआ खिलवा रहे थे, जब उसने चबूतरे पर जुआ खेलने से मना किया तो दोनों ने उसे गालियां दीं और मारपीट कर दी। दोनों के साथ चंचल पुत्र अच्छेलाल, संतोष पुत्र मुकेश भी लाठी लेकर आ गये और उसे गालियां दीं। आरोप है कि चंचल ने उसका पानी निकासी का पाइप तोड़ दिया और शोरगुल सुनकर आये उसके पति से भी मारपीट कर दी और घर में घुसकर तोड़फ़ोड़ कर दी, जिससे उसके करीब 2 हजार रुपये का नुकसान हो गया। आरोप है कि उक्त लोग जान से मारने की धमकी देते हुये भाग गये। पुलिस ने पीड़िता की तहरीर पर उक्त लोगों के खिलाफ बीएनएस की धारा 352, 115 (2), 333, 324 (2), 351 (3) के तहत एफआईआर दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी। वहीं दूसरे पक्ष की ओर से लाड़कुंवर पत्नी मुकेश ने पुलिस को तहरीर देकर बताया कि उसका पति मजदूरी करता है, जिससे वह अकेले निवासरत है। इसी का लाभ उठाकर पडोस के सचिन पुत्र जीवन, वती पत्नी जीवन व माया पत्नी सचिन आये दिन उसे गालियां देते हैं और पहले मारपीट कर चुके है। 6 जनवरी को उक्त लोगों ने एक राय होकर मारपीट कर जान से मारने की धमकी दी। आरोप है कि उसका पुत्र संतोष काम से घर आ रहा था, तब उसे जान से मारने की धमकी दी गयी। पुलिस ने लाड कुंवर की तहरीर पर उक्त लोगों के खिलाफ बीएनएस की धारा 352, 115 (2) व 351 (3) के तहत एफआईआर दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी।

विक्रय ट्रक की किश्तें जमा नहीं कर रहा खरीददार

●ट्रक मालिक ने न्यायालय के जरिए दर्ज कराया मामला

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ललितपुर। शहर के मोहल्ला घुसयाना निवासी मनोज विश्वकर्मा पुत्र लक्ष्मीनारायण ने सीजेएम न्यायालय में दावा पेश किया है। बताया कि उसने गुड्स कैरियर ट्रक नं. यू.पी.94 ए.टी. 9721 को फाइनेंस पर क्रय किया है। 4 नवम्बर को उसने नदीपुरा निवासी विनोद कुमार पुत्र रामसेवक को 6.51 लाख रुपये में विक्रय कर दिया। ट्रक की कुल 47 किश्तें अदा की जानी थी, जिसमें 10 किश्त जमा की जिम्मेवारी उसकी थी और उसने 7 किश्तें जमा की, जिसमें प्रत्येक किश्त 1 लाख 21 हजार 465 रुपये की थी और तीन किश्तों की अदायगी उसकी संपूर्ण 10 किश्तें जमा हो गयी। शेष 37 किस्तों की अदायगी 4 दिसंबर 2024 से शुरू होंनी थी, जो कि 44 लाख 94 हजार 205 रुपये को विनोद कुमार द्वारा फाइनेंस कंपनी में फोन-पे के माध्यम से करना हो, जिसकी रसीद व प्रमाण पत्र उसे उपलब्ध करायेंगे। विक्रय अभिलेख नोटरी अधिवक्ता के माध्यम से प्रमाणित कराया गया। बताया कि विनोद कुमार ट्रक का उपयोग कर रहे हैं, लेकिन किश्तें जमा नहीं कर रहे हैं, जिस कारण उसने विनोद से शर्त अनुसार किश्तें जमा करने की बात कही। परन्तु विनोद हीला-हवाली करते रहे। विक्रय शर्त में यह भी उल्लेख किया गया कि विनोद द्वारा निरंतर 2 किश्तें जमा न करने पर बिक्री ट्रक को राज्यमार्ग पर चलने से निषिद्ध होगा, और अग्रिम धनराशि पीड़ित को विनोद कुमार से प्राप्त हुयी वह भी समाप्त हो जायेगी और ट्रक पुनः उसके पास आ जायेगा, जिसमें आपत्ति नही होगी। आरोप है कि विनोद कुमार द्वारा विक्रय शर्त का उल्लंघन किया गया। बताया कि 17 सितम्बर 2025 की शाम 5 बजे विनोद कुमार से उसने किश्तें जमा करने की बात कही तो विनोद ने उसे किश्त न जमा करने और न ही वाहन वापस देने की धमकी दी। पीड़ित ने बताया कि मामले की सूचना उसने 19 सितम्बर को एसपी से की, लेकिन कार्यवाही नहीं हुयी। अब न्यायालय के आदेश पर कोतवाली पुलिस ने विनोद कुमार के खिलाफ बीएनएस की धारा 316 (2) व 351 (2) के तहत मामला दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी।

ब्लॉक मुख्यालय पर लगा गंदगी का अंबार

●बजबजा रहीं नालियां, लगे कचरे के ढेर

जिम्मेवार नहीं दे रहे ध्यान, हो रहा दिखावा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मड़ावरा। जिम्मेदारों की अनदेखी के चलते ब्लॉक मुख्यालय पर जगह जगह गंदगी का अंबार लगा हुआ है। विभाग द्वारा मुख्य सड़क पर सफाई किए जाने का महज दिखावा किया जा रहा है जबकि गांव के अंदर गली मोहल्लों में हालात हकीकत बयान कर रहे हैं। शालाजी मंदिर के सामने नाली चोक होने से गंदगी और कीचड़ सड़क पर बह रही है वहीं पुराने पंचायत भवन के नजदीक बने पेशाब घर के पास कचरे का ढेर लगा है साथ ही पेशाबघर भी सफाई के अभाव में गंदगी से पटे पड़े हैं जिससे उठने वाली दुर्गंध से दुकानदारों को काफी परेशानी हो रही है।

पाइप लाइन हो रही लीक, पेयजल दूषित

मड़ावरा। नमामि गंगा परियोजना के तहत पेयजल आपूर्ति हेतु बिछाई गई पाइप लाइन कस्बे में कई जगह टूटी पड़ी है जिससे पानी लीक हो रहा है जो सड़क पर फैल रहा है। टूटी हुई पाइप लाइन से होकर नालियों का दूषित पानी पाइप लाइन में मिल कर पेयजल को दूषित कर रहा है।

मोहल्लों से नहीं उठाया जा रहा कचरा

मड़ावरा। कस्बे मोहल्लों गलियों से कचरा एकत्र कर आरसीसी सेंटर पर भेज ने के लिए कचरा कलेक्शन वाहन चलाया जाता है जो सिर्फ मुख्य सड़क से चुनिंदा जगह से कचरा उठाती है जबकि अन्दर गली मोहल्लों में कचरा सड़कों पर पड़ा रहता है।

जनप्रतिनिधि नहीं दे रहे ध्यान

कस्बे में कारस देव मंदिर के नजदीक रहने वाले मधुर जैन बताते हैं कि ग्राम पंचायत द्वारा सफाई कार्य की और ध्यान नहीं दिया जा रहा, जगह जगह कचरे के ढेर लगे हैं ग्रामीण काफी परेशान हो रहे हैं।

क्या बोले जिम्मेवार

जहां भी गंदगी है टीम लगाकर सफाई कराई जाएगी, साथ ही कस्बे की गलियों में भी सफाई अभियान चलाया जायेगा। महेंद्र कुमार एडीओ पंचायत

बांसी मण्डल का हिन्दू सम्मेलन सम्पन्न

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बांसी (ललितपुर)। हजारिया महादेव शनि मंदिर बांसी में पूज्य त्यागीजी महाराज की अध्यक्षता, बी.के.प्रीति बहन एवं धर्मेंद्र विभाग कार्यवाह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मुख्य आतिथ्य में बांसी मण्डल का हिन्दू सम्मेलन ब्राह्मण मंडली द्वारा स्वस्तिवाचन एवं हनुमान चालीसा के साथ संपन्न संपन्न हुआ। बी.के.बहिन प्रीति ने कुटुम्ब प्रबोधन के संबंध में समझाया कि परिवार को एक साथ मिलकर रहना चाहिए, एक दूसरे के दुख बांटना चाहिए परिवार की सभी सदस्य एक साथ मिलकर रहें तभी समाज को हम नई दिशा दे सकते है। भारतवर्ष की शांति सौहार्द व्यवस्था के लिए लिए राष्ट्र की उन्नति और विकास के लिए सनातन की रक्षा के लिए समस्त हिंदू एक साथ संगठित होकर रहे।

मुख्य वक्ता विभाग कार्यवाह द्वारा संघ शताब्दी यात्रा के 100 वर्षों में डा.हेडगेवारजी ने जिस समर्थ भारत की कल्पना कि वह तभी संभव है जब सम्पूर्ण जाति का प्रत्येक व्यक्ति अपने को हिन्दू कहेगा। संघ हिन्दू समाज को जगाने का कार्य अनवरत कर रहा है। पर्यावरण की रक्षा ही भारत माता की रक्षा है हम सब विभिन्न जातियों में नहीं बल्कि हिंदू बनकर रहे हैं इस प्रकार का संकल्प हमारा हिंदू समाज लें। हिन्दू सम्मेलन में राशि पस्तोर शिवतांडव पर मनमोहक नृत्य किया। इच्छा नायक, काजल, संस्कृति, मिस्टी साहू, पावनी, खुशी, दीपिका, राशि आदि बच्चों द्वारा गीत एवं नृत्य की प्रस्तुति की गई। जन समुदाय द्वारा भव्य भारत माता की आरती के साथ हिंदू सम्मेलन का समापन हुआ। इस दौरान विभाग प्रचार प्रमुख मनोज तिवारी टाटा, जिला कार्यवाह आशीष चौबे, जिला प्रचारक वीर, खंड प्रचारक शिवाजी, खंड कार्यवाह आदित्य दुबे, खंड शारीरिक प्रमुख ध्रुव आदित्य पांडे, प्रांत मिलन केन्द्र प्रमुख देवेंद्र गंगेले सहित अनेक समाजसेवी संगठन एवं सैकड़ों लोग उपस्थित है। संचालन जिला सह कार्यवाह नरेंद्र बुंदेला एवं आभार खंड बौद्धिक प्रमुख गोपाल सोनी ने किया।

सड़क सुरक्षा अभियान के सफल क्रियान्वयन हेतु संचालित गतिविधियों की समीक्षा हेतु डीएम ने ली बैठक

●डग्गामार वाहनों, स्टंडवाजों व अवैध रुप से हाईवे पर खड़े वाहनों पर कार्यवाही के निर्देश

राजस्व, परिहन, यातायात, लोक निर्माण विभाग व नगर पालिका की संयुक्त टीम होल्डिंग एरिया व कमरतोड़ू स्पीड ब्रेकरों का करेगी चिन्हांकन

अवैध होर्डिंग्स के विरुद्ध अभियान चलाने के ईओ को दिये निर्देश

मार्गों से झाड़ियों की कटाई और साईनेज लगवाने हेतु लोक निर्माण विभाग को दिये निर्देश

स्कूली वाहनों के चालकों का वैरिफिकेशन कराने हेतु विद्यालयों को निर्देशित करें डीआईओएस

सड़क दुघर्टनों में प्रभावित व्यक्तियों के लिए 'ट्रामा केयर' आकस्मिक चिकित्सा इकाईयां तैयार करायें सीएमओ

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ललितपुर। शासन द्वारा वीडियो कान्फ्रेन्सिंग के माध्यम से दिये गए निर्देशों के क्रम में जिलाधिकारी श्री सत्य प्रकाश ने

आज बुधवार को कलैक्ट्रेट सभागार में परिवहन, लोक निर्माण विभाग, यातायात, नगर विकास सहित सम्बंधित लाइन विभागों के साथ जनपद में सड़क सुरक्षा अभियान के सफल क्रियान्वयन व इसके लिए विभागों द्वारा की जा रही गतिविधियों की समीक्षा हेतु बैठक की।

जिलाधिकारी ने समीक्षा करते हुए निर्देश दिये कि राजस्व विभाग, परिवहन, यातायात, पीडब्ल्यूडी व नगर पालिका की संयुक्त टीम बनाकर विभिन्न मार्गो पर अनाधिकृत रुप से खड़े होने वाले वाहनों के लिए होल्डिंग एरिया, लेआउट एरिया व कमरतोड़ू स्पीड ब्रेकरों का चिन्हीकरण कर लें, ताकि वाहनों द्वारा अतिक्रमण की समस्या न हो। अधिशासी अधिकारी शहर में अवैध होर्डिंग्स को हटाये जाने के लिए वृहद स्तर पर अभियान चलायें और शहर के मुख्य मार्ग के चौड़ीकरण का कार्य त्वरिगत गति से करायें और पीए सिस्टम दुरुस्त करायें। अधिशासी अभियंता लोनिवि मार्गों के किनारे झाड़ियों की कटाई के लिए अभियान चलायें व साईनेज लगवायें, जिससे दुर्घटनाएं न हों।यातायात प्रभारी सड़क दुघर्टना में 'जीरो फेटिलिटी' हेतु कार्ययोजना तैयार करें, मुख्य चिकित्सा अधिकारी सड़क दुर्घटनाओं में प्रभावित व्यक्तियों के लिए 'ट्रामा केयर' आकस्मिक चिकित्सा इकाईयां तैयार करायें और बस चालकों के लिए हेल्थ चेकअप कैम्प आयोजित करायें।

उन्होंने परिवहन विभाग को निर्देश दिये कि सभी डग्गामार वाहनों को सीज करें, बसों की फिटनेस की निगरानी करें और सुनिश्चित करें कि 300 किमी से अधिक चलने वाली बसों में अनिवार्य रुप से दो ड्राईवर रहें। जिला विद्यालय निरीक्षक सभी प्राईवेट विद्यालयों को आदेश जारी करें कि स्कूली वाहनों के चालकों का अनिवार्य रुप से वैरिफिकेशन कराया जाए। यातायात प्रभारी स्टंटबाजों के विरुद्ध चालान व डीएल जब्तीकरण की कार्यवाही करें। इसके साथ ही ओवर लोड वाहनों व हाईवे पर अवैध रुप से खड़े वाहनों पर कार्यवाही करें।

बैठक में पुलिस अधीक्षक मो0 मुश्ताक, क्षेत्राधिकारी सदर अजय कुमार, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ इम्तियाज अहमद, जिला विद्यालय निरीक्षक ओमप्रकाश सिंह, जिला आबकारी अधिकारी विजय सिद्धान्त, जिला पूर्ति अधिकारी उमेश चन्द्र मिश्रा, अधिशासी अधिकारी नपा दिनेश कुमार विश्वकर्मा सहित लोक निर्माण विभाग, सूचना विभाग व यातायात प्रभारी उपस्थित रहे।

नवीन एक मुश्त समाधान योजना का लाभ उठायें तथा चक्रवर्ती ब्याज एवं दंड से मुक्ति पाएं

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ललितपुर। उ0प्र0 अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम द्वारा संचालित द्वारा योजना के अन्तर्गत विगत वर्षो में अनुसूचित जाति के परिवार तथा स्वच्छकार एवं उनके आश्रितों के विभिन्न प्रकार की आयोजित रोजगारपरक योजनाओं (स्वतः रोजगार योजना), राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी वित्त एवं विकास निगम/अनुविनि द्वारा संचालित- टेण्टहाउस/ टैक्टर-ट्राली/ टाटा-407एल0 सी0वी0/ टाटासूमो/ विक्रमटैम्पों/ जीपटैक्स/ मार्शल जीप/ बिल्डिंग मेटेरियल/प्रोवीजन स्टोर/ भवन निर्माण सामग्री/ सेनेटरी मार्ट स्कीम/ इलेक्ट्रिक रिपेयर शॉप/ महिला समृद्धि योजना/माइक्रो फाइनेंस स्कीम/ट्रान्सपोर्ट स्कीम/एम्बेसस्डर कार स्कीम/मारूती बैन/आटा-चक्की/ लघु व्यवसाय/लेदर फुटविजय शॉप आदि) योजनान्तर्गत में अनुदान, मार्जिनमनी ऋण, बैंक ऋण/राष्ट्रीय निगमों के ऋणों को सम्मिलित कर वित्त पोषित कराते हुए रोजगार स्थापित कराया गया है। निगम द्वारा संचालित योजनाओं के अन्तर्गत वितरित किये गये ऋणों की त्वरित एवं प्रभावी वसूली हेतु अनुगम द्वारा 'नवीन एकमुश्त समाधान योजना' (ओ0टी0एस0) का क्रियान्वयन प्रारम्भ किया जा रहा है। इस योजना में निगम द्वारा संचालित उपरोक्त योजनाओं के ऐसे लाभार्थी जिनके द्वारा धनराशि के अभाव में अवशेष धनराशि जमा नहीं की जा रही थी, ऐसे बकायेदारों को शासन द्वारा मूलधन की 36 किश्तें/60किश्ते (अनुविनी) का साधारण ब्याज वसूल कर खाता बंद कराया जा सकता है, जो बकायेदार उक्त योजना में लाभ लेना चाहते हैं, वह कार्यालय/विकास खण्डों के ग्राम/ सहायक विकास अधिकारी (स0क0) से सम्पर्क कर उक्त योजना का लाभ लेते हुए चक्रवर्ती ब्याज एवं दण्ड ब्याज से बचे। यह योजना शासन द्वारा केवल 31 मार्च, 2026 तक लागू रहेगी।

अतः ऐसे बकायेदार जिन्होंने निगम की उक्त योजनाओं के अन्तर्गत विगत वर्षो में ऋण प्राप्त किया है तथा जिनके द्वारा ऋण की अदायगी समय पर नहीं की जा रही है और उनके ऋण खातों में बकाया धनराशि एक लाख रुपये से कम या उससे अधिक अवशेष है। ऐसे समस्त ऋणगृहीता कार्यालयः जिला प्रबन्धक, उत्तर प्रदेश अनु0जाति वित्त एवं विकास निगम लिमि0 ललितपुर, कचहरी कैंपस, ललितपुर में सम्पर्क कर सुनहरी योजना के अंतर्गत लाभ प्राप्त करें।

स्टेशन क्षेत्र में चली नगर पालिका की जेसीबी

●दुकानदारों ने मांगी दो दिन की मोहलत, मिली

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ललितपुर। यातायात को सुगम बनाने, अतिक्रमण हटाने और शहर की मुख्य सड़क का महानगरों की तर्ज पर चौड़ीकरण कराने हेतु डीएम सत्य प्रकाश के निर्देशन में एसडीएम सदर मनीष कुमार, नायब तहसीलदार घनेन्द्र तिवारी, ईओ दिनेश कुमार विश्वकर्मा के नेतृत्व में जिला प्रशासन, राजस्व विभाग, नगर पालिका व पुलिस बल की संयुक्त टीम ने स्टेशन तिराहे पर

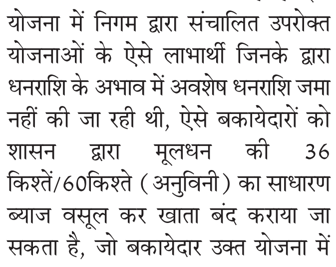

अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया गया। वहीं कुछ दुकानदारों द्वारा लिखित रूप में 02 दिन में स्वयं ही अतिक्रमण हटाये जाने की बात कही। एसडीएम ने उन्हें सख्त चेतावनी देते हुए 02 दिन के अंदर स्वयं ही अतिक्रमण हटाने के निर्देश दिये। कहा कि यदि दो दिन के अंदर अतिक्रमण नहीं हटाया जाता है तो जेसीबी से अतिक्रमण को हटाते हुए जुर्माना वसूली की कार्यवाही की जायेगी। ईओ ने सभी दुकानदारों से अपील की है कि जो भी दुकानदार पालिका की नाली व सड़क पर अवैध रूप से सामग्री रखकर अतिक्रमण किये हुए है, वह उन्हें ही हटा ले। कहा कि जिला प्रशासन के निर्देशानुसार रेलवे स्टेशन से लेकर नदी पुल तक मुख्य सड़क पटरी के दोनों ओर का अतिक्रमण हटाया जाना है, यह अभियान निरंतर जारी रहेगा। इस दौरान कर निर्धारण अधिकारी, कोतवाली प्रभारी निरीक्षक, सफाई एवं खाद्य निरीक्षक, सदर लेखपाल, नजूल लिपिक, हेड सुपर वाइजर, गैरिज प्रभारी के अलावा जिला प्रशासन, राजस्व विभाग, पुलिस बल एवं नगर पालिका अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

बबीना टीम द्वारा सौंरई को दी करारी शिकस्त

●सात विकेट से जीता श्रृंखला का लीग मुकाबला

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मड़ावरा। कस्बे में स्व0 श्रीमती सावित्रीदेवी घनश्यामदास रावत की पुण्यस्मृति में चल रहे टी-20 क्रिकेट टूर्नामेंट में बुधवार को पांचवां लीग मैच आरसीसी क्रिकेट क्लब सौंरई एवं शेरा क्रिकेट क्लब बबीना के बीच खेला गया। सौंरई टीम ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 15 ओवर में 96 रन बनाकर पूरी टीम आउट हो गई। सौंरई के बल्लेबाज अज्जू यादव, रविशंकर, फैजान और छोटू ही दहाई के अंकों में रन बना सके बाकी बल्लेबाज

सस्ते में आउट हो गए, बबीना टीम के गेंदबाज सोनू द्वारा चार ओवर में महज 12 रन खर्च कर चार महत्वपूर्ण विकेट लिए जिन्हें मेन ऑफ द मैच चुना गया। 97 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी बबीना टीम के सलामी बल्लेबाज शहवाज और तौफीक द्वारा शुरुआत से ही आक्रामक तेवर दिखाते हुए तेजी से रन जोड़े बाद में शहवाज ने 23 और पांच नंबर पर खेलने आए संदीप ने छह छक्कों और तीन चौकों की मदद से 48 रन बनाए और नवमें ओवर में ही टीम को जीत दिला दी। मैच के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी सोनू को डॉ शिवकरनसिंह एवं अमित जैन द्वारा उन्हें ट्रॉफी भेंट कर पुरस्कृत किया गया। आयोजन समिति के उपाध्यक्ष जितेंद्र गंधर्व ने बताया के बृहस्पतिवार को रखवारा एवं भीकमपुर टीम के बीच श्रृंखला का छठवां लीग मुकाबला खेला जायेगा। टूर्नामेंट के आयोजन में एम्पायर हाकम गंधर्व एवं इंद्रपाल सिंह एवं कॉमेंटेटर राज, इमरान खान, राहुल, आनंद गंधर्व, स्कोरर अरविंद गंधर्व, अंशुल गंधर्व समेत समिति के ऊदल गंधर्व, अनिल कुमार नीलू, अमित भंडारी, राजेश गंधर्व, रवि सहित सभी सदस्यों का सहयोग प्राप्त हो रहा है।

संक्षिप्त खबरें

बार-बार उत्पन्न होने वाली समस्याओं को प्राथमिकता से सुलझाएं - पुलिस उपायुक्त दक्षिण

कानपुर। आज दिनांक 07.01.2026 को पुलिस उपायुक्त दक्षिण दीपेन्द्र नाथ चौधरी द्वारा कार्यालय में जन-सुनवाई की गई। जन-सुनवाई के दौरान उपस्थित नागरिकों की शिकायतें सुनी गई तथा उनके समाधान हेतु संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। अपर पुलिस उपायुक्त दक्षिण भी उपस्थित रहे। पुलिस उपायुक्त दक्षिण दीपेन्द्र नाथ चौधरी ने जनसमस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर दर्ज कर संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि वे समयबद्ध व प्रभावी कार्यवाही सुनिश्चित करें। शिकायतों के त्वरित निस्तारण हेतु पुलिसकर्मियों को स्पष्ट निर्देश दिए गए कि विलंब किसी भी स्थिति में न हो और प्रत्येक शिकायतकर्ता को समाधान से अवगत कराया जाए। जन-सुनवाई में आए प्रत्येक आगंतुक से सम्मानजनक व्यवहार करने, उन्हें बैठने हेतु उचित व्यवस्था देने एवं उनकी समस्याएं धैर्यपूर्वक सुनने पर विशेष जोर दिया गया। स्थानीय स्तर पर बार-बार उत्पन्न होने वाली समस्याओं के स्थायी समाधान हेतु प्राथमिकता से कार्य करने के निर्देश भी दिए गए।

जनपद न्यायाधीश ने गरीबों को वितरित किया कंबल एवं ऊनी कपड़े

प्रतापगढ़। जनपद के बाबा बेलखरनाथ धाम के निकट ग्राम घोरका तालुकदारी में श्याम शंकर उपाध्याय पूर्व विधिक परामर्शदाता उ0 प्र0 रा'यपाल एवं लोकपाल एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय उ0 प्र0 की माता कलावती देवी उपाध्याय की प्रथम पुण्यतिथि मंगलवार को मनाई गई। इस अवसर पर कलावती देवी के चित्र पर जनपद न्यायाधीश राजीव कमल पाण्डेय, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट कुमुद उपाध्याय, पूर्व न्याय मूर्ति उ'च न्यायालय विपिन चंद्र दीक्षित, पत्रकार ब्रजेश त्रिपाठी, डीपी सिंह ,आदित्य मिश्रा ,लाल जी उपाध्याय, अधिवक्तागण एवं उपस्थित प्रबुद्ध जनों ने माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर क्षेत्र के तमाम निर्धन, असहायों को जनपद न्यायाधीश राजीव कमल पाण्डेय, सीजेएम कुमुद उपाध्याय, पूर्व न्यायमूर्ति विपिन चंद्र दीक्षित एवं श्याम शंकर उपाध्याय ने कंबल, ऊनी कपड़े और बर्तनों का वितरण किया। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए जनपद न्यायाधीश पाण्डेय ने कहा कि शीतलहरी और ठंडक से बचने हेतु निर्बल वर्ग और जरूरतमंदों को कम्बल और ऊनी वस्त्रो का वितरण किया जाना पुनीत कार्य है।जरूरतमंदों को जरूरत की सामग्री को देना है सही दान है।कार्यक्रम के अंत में जनपद न्यायाधीश ने आए हुए प्रबुद्ध जनों को रामचरितमानस की पुस्तक भेंट किया। पूर्व न्यायाधीश उपाध्याय ने सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त किया।

अटल आवासीय विद्यालय में प्रवेश हेतु परीक्षा प्रक्रिया प्रारम्भः राजेश

देवरिया। अटल आवासीय विद्यालय सहजनवा, गोरखपुर में कक्षा 6 एवं कक्षा 9 में प्रवेश हेतु परीक्षा प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। मुख्य विकास अधिकारी राजेश सिंह ने बताया कि श्रम विभाग में पंजीकृत निर्माण श्रमिकों के बच्चों तथा कोविड-19 से अनाथ ऐसे बच्चे, जो महिला एवं बाल कल्याण विभाग में पंजीकृत हैं या मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना के पात्र हैं, इस प्रवेश प्रक्रिया में आवेदन कर सकते हैं। चयनित विद्यार्थियों को पूर्णतः निःशुल्क, सीबीएसई पैटर्न पर आधारित गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्मार्ट क्लास, खेलकूद सुविधाएं एवं हाईटेक प्रयोगशालाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। पात्र श्रमिकों को अधिकतम दो बच्चों के नामांकन की अनुमति होगी। कक्षा 6 के लिए आयु 1 मई 2014 से 31 जुलाई 2016 तथा कक्षा 9 के लिए 1 मई 2011 से 31 जुलाई 2013 के मध्य होनी चाहिए। आवेदन पत्र 31 जनवरी 2026 तक जमा किए जा सकेंगे, जबकि प्रवेश परीक्षा 22 फरवरी 2026 को आयोजित होगी।

प्रदेश में एसआईआर के नाम पर लगभग तीन करोड़ मतदाताओं का नाम हटना लोकतंत्र के लिए घातक- प्रमोद तिवारी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लालगंज, प्रतापगढ़। राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता प्रमोद तिवारी ने उत्तर प्रदेश में एसआईआर के नाम पर लगभग तीन करोड़ मतदाताओं के नाम कटने को लेकर लोकतंत्र का गला घोटना करार दिया है। उन्होने कहा कि उत्तर प्रदेश में एसआईआर को लेकर पहले ही कांग्रेस ने यह आशंका व्यक्त की थी कि इस प्रक्रिया के जरिए भाजपा निर्वाचन आयोग से मिलीभगत कर मतदाताओं को मताधिकार से वंचित करने का षडयंत्र कर रही है। उन्होने कहा कि एसआईआर के नाम पर सत्तारूढ़ बीजेपी लोकतंत्र को लगातार कमजोर करने का कुचक्र रच रही है। सांसद प्रमोद तिवारी ने कहा है कि उत्तर प्रदेश में लगभग दो करोड़ नवासी लाख वोट कटे हैं। उन्होने कहा कि प्रदेश में लगभग अठारह से उन्नीस प्रतिशत वोट काटे हैं। सांसद प्रमोद तिवारी ने दावा किया है कि इनमें दो करोड़ सत्रह लाख वे मतदाता हैं जो अनुपस्थित पाये गये हैं या फिर लापता हैं। उन्होने कहा कि मतदाता सूची से नौकरीपेशा वाले तथा तमाम मजदूर वर्ग व पिछडे एवं दलित वर्ग के गरीब हैं।

उन्होने कहा कि इनमें अल्पसंख्यक फेरी लगाने वाले वे लोग भी शामिल हैं जो रोजीरोटी के सिलसिले में बाहर गये हैं और समय से आकर अपना फार्म नहीं भर सके। राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी ने कहा है कि एसआईआर से पहले उ0प्र0 में पन्द्रह करोड़ चौवालिस लाख तीस हजार मतदाता थे। उन्होने कहा कि इनमें से छियालिस लाख तेईस हजार मृतक हैं और पचीस लाख सैतालिस हजार के नाम एक से अधिक स्थानों पर सूची में पाये गये थे। उन्होने कहा कि एसआईआर के बाद अब बारह करोड़ पचपन लाख छप्पन हजार पचीस मतदाता बचे हैं। उन्होने कहा कि देश के तमाम प्रदेशों की आबादी भी तीन करोड़ नही है। उन्होने यह भी कहा है कि दुनिया के लगभग चालीस से पचास देश ऐसे है जिनकी आबादी भी तीन करोड़ नही है। उन्होने कहा कि ऐसी स्थिति को भांपते हुए कांग्रेस पार्टी ने सुझाव दिया था कि एसआईआर की प्रक्रिया को एक दो माह नहीं बल्कि साल दो साल चलाना चाहिए था। उन्होने कहा कि ऐसा होने पर जो लोग बाहर जाते हैं वह साल में एक या दो बार बाहर से वापस आते हैं तो उन्हें फार्म भरने का मौका मिल जाता। उन्होने कहा कि पात्र मतदाताओं को पर्याप्त समय न देकर उत्तर प्रदेश में पूरी तरह से लोकतंत्र पर आघात पहुंचाया गया है। सांसद प्रमोद तिवारी ने कहा है कि एसआईआर के लिए पर्याप्त समय नही मिलने को लेकर मानसिक दबाव की वजह से प्रदेश में कई बीएलओ की मौतें भी हुई हैं।सांसद प्रमोद तिवारी ने कहा कि मताधिकार का हक छीनने को लेकर भाजपा को इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी। उन्होने कहा कि मतदाताओं का श्राप भाजपा को लगेगा और उत्तर प्रदेश से ऐसे में भाजपा का पूरी तरह सफाया होना तय है। राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी ने कहा कि संविधान में यह खूबसूरत प्राविधान है कि एक राजा का भी एक वोट और गरीब का भी एक वोट बराबरी का दर्जा रखता है।सांसद प्रमोद तिवारी का बयान बुधवार को यहां मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल के हवाले से निर्गत हुआ है।

अटल आवासीय विद्यालय में प्रवेश के लिए करें आवेदन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ललितपुर। सहायक श्रम आयुक्त अनिल कुमार ने जानकारी देते हुये महानिदेशक अटल आवासीय विद्यालय के पत्र द्वारा अवगत कराया गया है कि अटल आवासीय विद्यालयों में शैक्षणिक सत्र 2026-27 में कक्षा 6 व कक्षा 9 में बच्चों का प्रवेश लिये जाने हेतु मानक संचालन प्रक्रिया पर अनुमोदन प्रदान किया गया है। अटल अवासीय विद्यालय, ग्राम धौर्रा में कक्षा 6 एवं कक्षा में प्रवेश परीक्षा के माध्यम से प्रवेश लिया जाना है व पात्र छात्र-छात्राओं से आवेदन पत्र आमंत्रित किये जाने है व चन्दन सिंह मोबाईल नम्बर 9838091940, शोभाराम साहू 8317041040 पर सम्पर्क कर सकते हैं। चयनित छात्र-छात्राओं को विद्यालय में निशुल्क शैक्षिक आवासीय विद्यालय, लड़कों एवं लड़कियों हेतु अलग-अलग छात्रावास, निःशुल्क शिक्षा, भोजन, पाठ्य पुस्तकें आवास एवं यूनीफार्म, खेल की सुविधायें सुविधाएं प्रदान की जायेगीं।

नेहरू नगर प्रीमियर लीग

पहले सीजन चौथे मैच में फ्रेण्ड क्रिकेट क्लब ने पुलिस इलेविन को तीन विकेट से हराया

ललितपुर। नेहरू नगर प्रीमियम लीग सीजन एक का आज चौथा मैच था, जो कि पुलिस इलेविन और फ्रेण्ड क्रिकेट क्लब के बीच खेला गया, जिसमें टॉस जीत कर पुलिस इलेविन ने बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया। जिसमे पुलिस इलेविन ने 16 ओवर में 6 विकिट गवा कर 129 रन बनाये। वही फ्रेण्ड क्रिकेट क्लब ने 14.1 ओवर 132 रन बना कर 7 विकिट खो कर जीत हासिल की, जिसमे फ्रेण्ड क्लब के नाज अहमद को मैन ऑफ द मैच चुना गया। आज के मैच में अतिथि डी.के.राजपूत रहे। साथ में संयोजक हेमंत जैन रोंडा रहे। आयोजन कमिटी में भगवत यादव, प्रदीप यादव, छोटे लाल, गोलू खान, पंकज कुशवाहा, विजय परमार, नरेश केवट, आयुष, सुमित, योगेश चक्की, सलमान खान, शारुख खान आदि मौजूद रहे।

सदस्या, राज्य महिला आयोग की अध्यक्षता में महिला जनसुनवाई सम्पन्न

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कानपुर। उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग की सदस्या पूनम द्विवेदी की अध्यक्षता में आज सर्किट हाउस सभागार, कानपुर नगर में महिला जनसुनवाई का आयोजन किया गया। जनसुनवाई का उद्देश्य महिलाओं से संबंधित प्रकरणों की सुनवाई कर उनका नियमानुसार, समयबद्ध एवं प्रभावी निस्तारण सुनिश्चित करना रहा। आयोजित महिला जनसुनवाई के दौरान कुल 05 प्रकरण प्राप्त हुए, जिनमें विभिन्न विभागों से संबंधित समस्याएँ सम्मिलित रहीं। प्राप्त प्रकरणों में से एक प्रकरण वृद्धा पेंशन से संबंधित था, जिसका मा. सदस्या द्वारा संबंधित अधिकारियों से समन्वय स्थापित कराते हुए मौके पर ही त्वरित निस्तारण कराया गया। शेष प्रकरणों को सदस्या द्वारा गम्भीरतापूर्वक सुना गया तथा संबंधित विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि प्रकरणों का नियमानुसार परीक्षण कर समयबद्ध कार्यवाही सुनिश्चित करते हुए प्रगति आख्या आयोग को उपलब्ध कराई जाए। मा. सदस्या द्वारा स्पष्ट किया गया कि महिलाओं से संबंधित प्रकरणों के

निस्तारण में किसी भी प्रकार की शिथिलता अथवा लापरवाही स्वीकार्य नहीं होगी। इस अवसर पर सदस्या पूनम द्विवेदी ने कहा कि महिलाओं के अधिकारों की रक्षा, सम्मान एवं सशक्तीकरण राज्य महिला आयोग की प्राथमिकताओं में सर्वोपरि है। उन्होंने कहा कि महिला जनसुनवाई के माध्यम से प्राप्त प्रकरणों का निष्पक्ष, पारदर्शी एवं त्वरित निस्तारण सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है। इस अवसर पर उपजिलाधिकारी (न्यायिक) बिल्हौर सत्यपाल प्रजापति, जिला प्रोबेशन अधिकारी विकास सिंह, जिला कार्यक्रम अधिकारी प्रीति सिन्हा, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अधिवक्तागण सहित विभिन्न विभागों के संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

जनपद में बाल विवाह मुक्त भारत अभियान कार्यक्रम का हुआ आयोजन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

प्रतापगढ़। विकास खण्ड सदर में जगवन्ती प्रिन्टिंग प्रेस, कुमार प्रिन्टिग प्रेस, विद्या प्रिन्टिग प्रेस, प्रतीक 'वैलर्स के दुकानों पर चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 प्रतापगढ़ की टीम द्वारा बाल विवाह मुक्त भारत अभियान कार्यक्रम का आयोजन किया गया, बाल विवाह मुक्त भारत अभियान के अन्तर्गत लगभग 150 लोगों को ऑनलाइन पोर्टल लिंक के माध्यम से शपथ दिलाया गया और सभी लोगों को बाल विवह प्रतिषेध अधिनियम 2006 के बारे में विस्तार पूर्व बताया गया। इसी प्रकार क्षेत्रीय ग्राम्य विकास संस्थान (अफीम कोठी) में हब फॉर इम्पावरमेन्ट की टीम द्वारा बाल विवाह मुक्त भारत अभियान कार्यक्रम का आयोजन किया गया, बाल

विवाह मुक्त भारत अभियान के अन्तर्गत लगभग 90 लोगों को ऑनलाइन पोर्टल लिंक के माध्यम से शपथ दिलाया गया और सभी लोगों को बाल विवह प्रतिषेध अधिनियम 2006 के बारे में विस्तार पूर्व बताया गया। 01जनवरी 2026 से लगातार जैसे बेल्हा देवी धाम, चन्द्रिकन धाम सण्डवा चन्द्रिका, शीतला धाम कटरा, बाल विकास परियोजना अधिकारी सदर आदि स्थलों पर बाल विवाह मुक्त भारत अभियान हब फॉर इम्पावरमेन्ट की टीम द्वारा चलाया गया।28 नवंबर से लगातार जैसे कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय मानधाता, ग्राम पंचायत गनईडीह, सैयद यासीनपुर नवाबगंज, घुईसरनाथ संगीपुर, जिला चिकित्सालय प्रतापगढ़, निर्मला पब्लिक स्कूल देवकली, गर्ल्स इन्टर कालेज प्रतापगढ़, रामपुरिया गार्डेन कटरा, कस्तूरबा गांधी विद्यालय विकास खण्ड पट्टी, स्कालर्स ऐकडमी भंगवा चुगीं, कौशल विकास केन्द्र चिलबिला प्रतापगढ़ आदि स्थलों पर बाल विवाह मुक्त भारत अभियान चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 प्रतापगढ़ की टीम द्वारा चलाया गया।

गोवंश तस्करी में 3 गिरफ्तार

देवरिया। जनपद की लार थाने की पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए चार गोवंश के साथ तीन पशु तस्करों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर ग्राम रावतपार रघेन के पास से एक पिकअप वाहन से गोवंश को क्रूरतापूर्वक ले जाते हुए तस्करों को पकड़ा। गिरफ्तार अभियुक्तों के विरुद्ध गोवध निवारण अधिनियम व पशु क्रूरता अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज कर वाहन को सीज कर दिया गया है। आगे की विधिक कार्रवाई जारी है।

संदिग्ध परिस्थितियों में युवक की मौत, शव कमरे में फंदे से लटका मिला

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सिद्धार्थनगर - जनपद के सदर कोतवाली क्षेत्र के पुलिस चौकी नौगढ़ अंतर्गत सरजू नगर में उस समय हड़कंप मच गया, जब एक 38 वर्षीय युवक का शव उसके ही कमरे में संदिग्ध परिस्थितियों में पंखे से रस्सी के फंदे से लटका हुआ मिला। घटना के बाद मृतक के परिजनों में चीख-पुकार मच गई है। सरजू नगर निवासी हरिश्चंद्र जायसवाल 38, पुत्र माया चंद्र जायसवाल, का शव बुधवार सुबह उनके घर के कमरे में पंखे से रस्सी के फंदे से लटका हुआ मिला। सुबह जब काफी देर तक दरवाजा नहीं खुला, तो परिजनों ने भीतर का नजारा देखा, जिसे देख उनके पैरों तले जमीन खिसक गई।

सूचना मिलते ही पुलिस क्षेत्राधिकारी विश्वजीत सौरयान, कोतवाली प्रभारी दुर्गा प्रसाद और नौगढ़ पुलिस चौकी प्रभारी अशोक कुमार पुलिस बल के साथ मौके पर पहुँचे। मामला संदिग्ध होने के कारण फॉरेंसिक टीम को भी बुलाया गया, जिसने मौके से साक्ष्य जुटाए। मृतक हरिश्चंद्र के पत्नी और तीन बच्चों है जिसमें दो बेटी और एक बेटा । पिता की मौत के बाद बच्चों के भविष्य पर संकट के बादल मंडराने लगे हैं और पूरे परिवार का सहारा छिन गया है। इस मामले में प्रभारी निरीक्षक दुर्गा प्रसाद ने बताया कि पुलिस शव को कब्जे में लेकर पंचनामा भरा पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। और आगे की कार्रवाई की जा रही है।

कानपुर देहात में नवीनीकृत मिशन शक्ति केंद्र का उद्घाटन

कानपुर। आलोक सिंह, अपर पुलिस महानिदेशक, कानपुर जोन, कानपुर द्वारा जनपद कानपुर देहात भ्रमण दौरान कोतवाली अकबरपुर, भोगनीपुर, सिकन्दरा, शिवली व डेरापुर में नवीनीकृत मिशन शक्ति केन्द्र व कोतवाली अकबरपुर में शिशु गृह मिशन शक्ति 5.0 का उद्घाटन किया गया। मिशन शक्ति केन्द्र कोतवाली अकबरपुर के अभिलेखों का निरीक्षण कर महिलाओं/बच्चियों को मिल रही सहायता, सुरक्षा व आत्मनिर्भरता से जुड़ी योजनाओं की प्रगति देखी गयी तथा सेवाओं की गुणवत्ता और व्यवस्थाओं को और बेहतर बनाने के निर्देश दिए। उक्त कार्यक्रम में श्री हरीश चन्दर, पुलिस उपमहानिरीक्षक, कानपुर परिक्षेत्र, कानपुर, श्रीमती श्रद्धा नरेन्द्र पाण्डेय, पुलिस अधीक्षक, जनपद कानपुर देहात व अन्य पुलिसजन उपस्थित रहे।

महिला पुलिस से लूट करने वाला अभियुक्त गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कानपुर। थाना सीसामऊ और सर्विलांस की टीम ने महिला थाने की महिला कम्प्यूटर आपरेटर से पर्स और मोबाइल छीनने वाले अभियुक्त को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस उपायुक्त ने इसके लिए पुलिस टीम को 25000 का रिवार्ड दिया है। यह जानकारी देते हुए पुलिस उपायुक्त सेंट्रल श्रवण कुमार सिंह ने पत्रकारों को बताया कि शयान रजा उर्फ शयान मिर्जा नाम का अपराधी है ये बजरिया का रहने वाला है। 28 तारीख को इसने महिला थाना कानपुर की महिला कम्प्यूटर आपरेटर जब जा रही थी तो उसका मोबाइल, ब्लूटूथ और पर्स छीन लिया था। एक अभियुक्त को पहले ही गिरफ्तार कर लिया गया था और जेल भेज दिया था। उसके पास से एक स्कूटी बरामद हुई थी। पुलिस उपायुक्त ने बताया कि इसको पकड़ने के लिए हमारी सर्विलांस की टीम लगी हुई थी। बीच में इसने जिला भी छोड़ दिया था। लेकिन टीम बराबर लगी रही और ये पकड़ में आ गया। उन्होंने बताया कि इसके खिलाफ 2021 का एक मुकदमा दर्ज है। दिनांक 28.12.2025 को महिला थाना में कम्प्यूटर ऑपरेटर के पद पर तैनात महिला रात्रि ड्यूटी से अपने आवास चमनगंज थाना आ रही थी तभी पंचम पनीर के पास समय करीब सुबह 6.45 से 6.55 के बीच दो स्कूटी सवार अज्ञात युवक मे से एक युवक द्वारा उक्त महिला के हाथ से पर्स छीनकर दोनो युवक भाग गए थे। उक्त पर्स में करीब 10,000 रू0, व जरुरी दस्तावेज तथा ब्लूटूथ डिवाइस थी।

विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने भैंस का दूध निकाल कर पिया

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

घाटमपुर। कानपुर विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने कानपुर नगर के सरसौल ब्लाक अंतर्गत आने वाले सलेमपुर गांव और नारायण पुर का दौरा किया, उन्होंने मार्निंग वॉक के दौरान ग्रामीणों से मुलाकात की और उन्हें नव वर्ष की शुभकामनाएं दी,,इस दौरान उन्होंने एक किसान की भैंस का दूध भी निकाला और उसे पिया,जिसकी ग्रामीणों ने सराहना की,, सलेमपुर गांव में मार्निंग वॉक करते हुए ग्रामीणों ने अध्यक्ष महाना को वर्षो पुराने ईट लगें खड़ंजे दिखाए,और सीसी रोड़ में बदलने की मांग की,इस पर महाना तत्काल संबंधित अधिकारियों को फ़ोन कर सीसी रोड बनानें के निर्देश दिए,, उन्होंने राजकुमार शुक्ला से भी भेंट कर गांव की समस्यायों को जानने

का प्रयास किया, इसके बाद सतीश महाना ने विधायक निधि से मंगत खेड़ा में हो रहे 650 मीटर इटरलाकिग काम का भी निरीक्षण किया, अपने भ्रमण के अगले चरण में उन्होंने नारायण पुर गांव का दौरा किया, यहां उन्होंने ग्रामीणों से हर घर जल योजना के तहत पानी की उपलब्धता के बारे में पूछा,जिस पर सभी ने पानी आने की बात कहीं, गांव के आगे बढ़ने पर उन्होंने किसान रामसिंह यादव को भैंस का दूध निकालतें देखा,महाना ने रामसिंह यादव से पूछा कि क्या वे उन्हें अपनी भैंस का दूध निकालने देंगे, किसान ने खुशी खुशी बाल्टी थमा दी, जिसके बाद सतीश महाना ने स्वयं दूध निकाला, उन्होंने गिलाश मंगवाकर उसी ताज़े दूध का सेवन किया,जिसकी ग्रामीणों ने खूब प्रशंसा की, उन्होंने कुछ महिलाओं को सीके सूप बनाते देखा, और उन्हें प्रोत्साहित किया, ग्रामीणों की मांग पर महाना ने एक सप्ताह के भीतर खम्भों पर 30 स्ट्रीट लाइटें और तीन हाई मास्क लाइटें लगानें का निर्देश दिया, अंत में महाना कोडर गांव पहुंचे, उन्होंने हाल ही में हुई एक दुर्घटना में दिवंगत हुए महेश पाल और दिनेश पाल के परिजनों से मिल कर सांत्वना दी, मौके पर भाजपा के वरिष्ठ नेता सुरेंद्र अवस्थी, भाजपा जिला मंत्री विनय मिश्रा, मंडल अध्यक्ष लक्ष्मीकांत निषाद, भाजपा जिला उपाध्यक्ष रानू शुक्ला और अन्य ग्रामीण उपस्थित रहे।

महाराजपुर थाना के सरसौल पावर हाउस में सामान चोरी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

घाटमपुर- जनपद कानपुर नगर कमिश्नरेट अंतर्गत थाना महाराज पुर क्षेत्र के सरसौल पावर हाउस में चोरी की वारदात सामने आई है, बुधवार सुबह घटना का पता चलने के बाद हड़कंप मच गया, सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंची, और मामले की छानबीन शुरू कर दी, कात्यायनी टीम विद्युत वितरण उपखंड सरसौल में काम कर रही थी, मंगलवार देर रात सभी कर्मचारी खाना खा कर अपने कमरे में सोगए , बुधवार सुबह करीब पांच बजे जगानें पर उन्होंने देखा कि पिकअप में रखा सामान बिखरा पड़ा था, जांच करने पर ड्रिल मशीन,कटर, औजार,30 लीटर डीजल का पीपा और कंबल ग़ायब मिलें, कर्मचारियों ने आसपास सामान की तलाश की, तों केबल पावर हाउस के पीछे पता नहीं चला,दिलीप के अनुसार चोरी हुए सामान की कुल कीमत लगभग 50 हजार रुपए हैं उन्होंने तत्काल 112 पर पुलिस को घटना

की जानकारी दी, सरसौल चौकी प्रभारी तेजवीर सिंह ने बताया कि पावर हाउस के चारों ओर,10 फ़ीट ऊंची दीवार हैं, पुलिस सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है, उन्होंने इस मामले को संदिग्ध बताते हुए गहनता से छानबीन करने की बात कही, और जल्द ही मामले का खुलासा करने का आश्वासन दिया, एसडीओ सरसौल विनीत गुप्ता ने पुष्टि की कि कर्मचारी सरसौल पावर हाउस में काम कर रहे थे, उन्होंने बताया कि बीतीं रात चोरों ने पीछे की दीवार फांदकर चोरी की वारदात को अंजाम दिया, महाराज पुर थाना प्रभारी राजेश कुमार ने बताया कि चोरी की शिकायत मिली है,और मामले की जांच व आवश्यक कार्रवाई की जा रही है।

सिद्धार्थनगर में 8 लोग 6 माह के लिए जिला बदर

सिद्धार्थनगर - जिला मजिस्ट्रेट द्वारा उ0प्र0 गुण्डा नियंत्रण अधिनियम 1970 में उपबन्धित प्राविधानों के अन्तर्गत 06 माह के लिए जनपद सिद्धार्थनगर की सीमा से निष्कासित किया गया है। जिसमें जनपद के कुल 08 लोग जिसमें पंकज गुप्ता पुत्र झिनकू, बिस्कोहर, थाना त्रिलोकपुर, रामकृपाल पुत्र स्व0 जगरूनपन, जगदीशपुर खुर्द थाना सिद्धार्थनगर, अकबर अली पुत्र अकरम अली, रमवापवुर मिश्र, थाना बांसी, सोनू पुत्र डेबा, पुरनजोत थाना खेसरहा, छोटू उर्फ गोपाल पुत्र जोगा यादव, बरगदवा थाना इटवा, हमीदुल्लाह पुत्र कल्लू, जबजौआ, थाना डुमरियागंज, मनोज कुमार वर्मा पुत्र बेचनराम वर्मा, चकचई थाना भवानीगंज, तथा अर्जुन यादव उर्फ प्रमोद कुमार यादव पुत्र ओमप्रकाष यादव उर्फ तहसीलदार यादव, खानकोट सेमरी थाना इटवा को 06 माह के लिए जिला बदर किया गया है।

जिला मजिस्ट्रेट ने त्रिस्तरीय पंचायतों की निर्वाचक नामावली के वृहद पुनरीक्षण हेतु कार्यक्रम किया जारी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

प्रतापगढ़। जिला मजिस्ट्रेट/जिला निर्वाचन अधिकारी (पंचायत एवं नगरीय निकाय) शिव सहाय अवस्थी ने त्रिस्तरीय पंचायतों की निर्वाचक नामावली का वृहद पुनरीक्षण कराये जाने हेतु कार्यक्रम की समय सारिणी जारी कर दी है। उन्होने बताया है कि 07 जनवरी से 20 फरवरी 2026 तक दावे/आपत्तियों के निस्तारण के उपरान्त हस्तलिखित पाण्डुलिपियां तैया करना, सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी के कार्यालय में जमा करना एवं एवं सम्भावित डुप्लीकेट मतदाताओं के सत्यापन/निस्तारण की कार्यवाही की जायेगी। 20 फरवरी से 16 मार्च तक दावे और आपत्तियों के निस्तारण के उपरान्त पूरक सूचियो की कम्प्यूटरीकरण की तैयारी तथा उन्हें मूल सूची में यथा स्थान समाहित करने की कार्यवाही की जायेगी। दिनांक 17 मार्च से 27 मार्च तक पूरक सूचियो की कम्प्यूटरीकरण के उपरान्त मतदान केन्द्र/स्थलों का क्रमांकन, मतदाता क्रमांकन, मतदान स्थलां के वार्डो की मैपिंग, मतदाता क्रमांकन, एसवीएन आवंटन, मतदाता सूची की डाउनलोडिंग, फोटो प्रतियां कराने आदि की कार्यवाही होगी। 28 मार्च 2026 को निर्वाचक नामावलियों का जन सामान्य के लिये अन्तिम प्रकाशन किया जायेगा। उन्होने बताया है कि निर्वाचक नामावली के पुनरीक्षण कार्यक्रम के दौरान पड़ने वाले सार्वजनिक अवकाश दिवसों में सम्बन्धित कार्यालय खुले रहेगे तथा निर्धारित समय सारिणी के अनुसार निर्वाचक नामावली के पुनरीक्षण का कार्य पूर्ण कराया जायेगा।

ठंड में शिक्षा की संवेदनाः पीएम श्री बालिका इंटर कॉलेज महरौनी व हाईस्कूल कुम्हेड़ी की छात्राओं को स्वेटर-जूते वितरित

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

महरौनी। ठंड के मौसम में जरूरतमंद छात्राओं को राहत प्रदान करने की दिशा में एक सराहनीय पहल करते हुए पीएम श्री राजकीय बालिका इंटर कॉलेज महरौनी एवं राजकीय हाई स्कूल कुम्हेड़ी में अध्ययनरत असहाय छात्राओं को स्वेटर, जूते व मोजे वितरित किए गए।

पीएम श्री राजकीय बालिका इंटर कॉलेज महरौनी में 200 जरूरतमंद छात्राओं को व्यक्तिगत रूप से स्वेटर व जूते-मोजे प्रदान किए गए, वहीं राजकीय हाई स्कूल कुम्हेड़ी में अध्ययनरत 50 जरूरतमंद छात्राओं को भी यह सहायता उपलब्ध कराई गई। विद्यालयों में कई छात्राएं ऐसी थीं, जिनके पास ठंड के मौसम में विद्यालय आने के लिए आवश्यक गर्म

कपड़े व जूते उपलब्ध नहीं थे। इस मानवीय पहल को विद्यालय की प्रधानाचार्य श्रीमती शीलम गुप्ता ने स्वयं आगे बढ़कर पूरा किया। उन्होंने महरौनी एवं कुम्हेड़ी दोनों विद्यालयों में पहुंचकर असहाय एवं जरूरतमंद छात्राओं को व्यक्तिगत रूप से स्वेटर, मोजे एवं जूते वितरित किए। प्रधानाचार्य द्वारा की गई इस पहल से न केवल छात्राओं को ठंड से राहत मिली, बल्कि उनके मनोबल में भी वृद्धि हुई।अभिभावकों एवं विद्यालय परिवार ने इस कार्य की सराहना करते हुए इसे शिक्षा के साथ सामाजिक दायित्व का उत्कृष्ट उदाहरण बताया।

संक्षिप्त खबरें

पीड़िता के बयान के बाद दुष्कर्म का दूसरा आरोपी भी गिरफ्तार

हमीरपुरः- बीते 31 दिसंबर को सुमेरपुर कस्बा के रविंद्र कुमार भारतवंशी के खिलाफ 4 वर्ष तक दुष्कर्म करने का मुकदमा दर्ज कराने वाली महिला ने अदालत में बयान के दौरान कस्बे के एक और युवक पर भारतवंशी के इशारे पर दुष्कर्म करने का बयान दर्ज कराया है। अदालत में हुये बयान के बाद पुलिस ने दूसरी युवक को भी गिरफ्तार करके जेल भेजा है। कस्बे की एक महिला ने 31 दिसंबर को मुकदमा दर्ज कराते हुए आरोप लगाया था कि उसको खाना बनाने के लिए घर पर रखने वाले रविंद्र कुमार भारतवंशी ने डरा धमकाकर चार वर्ष तक दुष्कर्म किया और अश्लील वीडियो आदि बना लिए थे। साथ ही गुजारा भत्ता देने का लालच देकर लगातार संबंध बनाता रहा। बाद में अपने वायदे से मुकर गया है। पुलिस ने पीड़िता की तहरीर पर रविन्द्र कुमार भारतवंशी के खिलाफ दुष्कर्म का मुकदमा दर्ज करके गिरफ्तार करके जेल भेज दिया। पीड़िता ने अदालत में बयान के दौरान आरोप लगाया था कि उसके साथ रविन्द्र कुमार भारतवंशी के इशारे पर कस्बे के प्रत्यूश साहू ने भी दुष्कर्म किया था। अदालत में दर्ज कराए गए बयान के बाद पुलिस ने प्रत्यूष साहू को मुकदमे में आरोपी बनाकर गिरफ्तार करके जेल भेजा है। यह प्रकरण कस्बे में चर्चा का विषय बना हुआ है। थानाध्यक्ष अनूप सिंह ने बताया कि अदालत में पीड़िता ने प्रत्यूश साहू पर दुष्कर्म का आरोप लगाया था इसलिए उसे आरोपी बनाकर गिरफ्तार किया गया है।

एसडीएम ने किया नगरपालिका गौशाला का औचक निरीक्षण

हमीरपुरः- शीतलहर और कड़ाके की ठंड के बीच राठ नगरपालिका स्थित गौशाला का उपजिलाधिकारी अभिमन्यु कुमार ने औचक निरीक्षण कर व्यवस्थाओं की गहन समीक्षा की। निरीक्षण के दौरान क्षेत्राधिकारी, तहसीलदार एवं नायब तहसीलदार भी मौजूद रहे। अधिकारियों ने गौशाला में मौजूद सुविधाओं, साफ-सफाई और पशुओं के ठंड से बचाव के इंतजामों का बारीकी से जायजा लिया। निरीक्षण के समय गौवंशों को गुड़ व अजवाइन खिलाकर उनके स्वास्थ्य और पोषण की स्थिति देखी गई। एसडीएम ने पशुओं को ठंड से सुरक्षित रखने के लिए अलाव की व्यवस्था, पर्याप्त भूसे की उपलब्धता, स्वच्छ पेयजल और नियमित पशु चिकित्सा सुविधाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि गौवंशों के संरक्षण और देखभाल में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। इसके साथ ही प्रशासन द्वारा गौशाला में तैनात कर्मचारियों, सड़क किनारे बसे निराश्रित परिवारों एवं जरूरतमंद लोगों को ठंड से बचाव हेतु कंबल वितरित किए गए। एसडीएम ने कहा कि शीतलहर के इस दौर में प्रशासन की प्राथमिकता है कि कोई भी व्यक्ति या पशु ठंड के कारण असुविधा का शिकार न हो। उपजिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को नियमित निरीक्षण करने और व्यवस्थाओं की सतत निगरानी रखने के निर्देश दिए। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि किसी स्तर पर लापरवाही पाई गई तो जिम्मेदारों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जाएगी। प्रशासन की इस सक्रिय पहल से गौवंशों के संरक्षण के साथ-साथ जरूरतमंद लोगों को भी राहत मिली है।

तेज रफ्तार कार की टक्कर से महिला की मौत, 2 घायल

उरई(जालौन): कोतवाली क्षेत्र में मंगलवार देर रात हुए सड़क हादसे में एक महिला की मौत हो गई, जबकि दो अन्य लोग घायल हो गए। हादसा उरई-कालपी मार्ग पर राहिया गांव के पास हुआ जहां तेज रफ्तार कार ने सड़क किनारे खड़ी महिला को टक्कर मार दी। हादसे में गंभीर रूप से घायल महिला को तत्काल उरई के राजकीय मेडिकल कॉलेज ले जाया गया जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मृतका की पहचान राहिया गांव निवासी 45 वर्षीय रमा पत्नी योगेंद्र सिंह पाल के रूप में हुई है। परिजनों के अनुसार, रमा किसी कार्य से सड़क किनारे खड़ी थीं तभी उरई से कालपी की ओर जा रही एक अनियंत्रित कार ने उसे जोरदार टक्कर मार दी। मृतका के पति योगेंद्र सिंह पाल ने आरोप लगाया है कि कार चालक नशे की हालत में था। उन्होंने बताया कि उसी कार ने उनकी पत्नी के अलावा दो अन्य लोगों को भी टक्कर मारी, जिससे उक्त दोनों घायल हो गए। घायलों को उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। सूचना मिलते ही उरई कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची और दुर्घटनाग्रस्त वाहन को कब्जे में लेकर चालक को हिरासत में ले लिया है। फिलहाल पुलिस चालक से पूछताछ कर रही है, साथ ही उसके नशे में होने की पुष्टि के लिए चिकित्सीय जांच कराई जा रही है।

शासन की मंशा के विरुद्ध संचालित के मौदहा कस्बा में अवैध आटो स्टैंड, स्थानीय प्रशासन बना मूक दर्शक

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हमीरपुरः- मौदहा कस्बा में लगभग एक दर्जन से अधिक अवैध आटो स्टैंड संचालित हो रहे हैं। जहां सुबह से शाम तक दर्जनों आटो गाड़ियों की क़तार लगी रहती है और इससे लगने वाले जाम से कस्बा की ट्रैफिक व्यवस्था चौपट रहती है। इसके बावजूद अवैध वसूली का केंद्र बने ये अवैध आटो स्टैंड फल-फूल रहे हैं। ऐसे में आम जनमानस में एक ही चर्चा है कि आखिर कौन चला रहा है कस्बा के अवैध आटो स्टैंड?

बताते चलें कि मौदहा कस्बा में एक दर्जन से अधिक अवैध आटो स्टैंड संचालित हो रहे हैं। इनमे से अरतरा चौराहा,गुड़ाही बाजार, रहमानिया रोड, मली कुआं चौराहा एवं बड़ा चौराहा में संचालित अवैध आटो स्टैंड मुख्य हैं।इनके अलावा अन्य कई स्थानों पर भी अवैध रूप से आटो स्टैंड संचालित हो रहे हैं। जबकि सरकार द्वारा इन अवैध स्टैंड पर सख्त कार्रवाई करने के आदेश दिए गए हैं। इसके बावजूद कस्बा में संचालित हो रहे ये अवैध आटो स्टैंड निश्चित रूप से सरकारी आदेश को खुली चुनौती दे रहे हैं। लोगों की मानें तो ये आटो स्टैंड स्थानीय पुलिस और प्रशासन के द्वारा संचालित हो रहे हैं। जिनसे अच्छी खासी कमाई की जाती है और इस अवैध धन का बंदरबांट होता है। जिसमें छोटे कर्मचारियों से लेकर उच्च अधिकारियों की हिस्सेदारी निश्चित होती है। इसी लिए इन अवैध स्टैंडों पर किसी भी तरह की कार्रवाई नहीं हो रही है। जबकि इन अवैध स्टैंडों के कारण कस्बा के प्रमुख सड़कों पर दिन भर जाम लगने की गंभीर समस्या बनी रहती है। और इस जाम में फंसकर प्रतिदिन सैकड़ों स्कूली बच्चों, मरीजों,प्रशव पीड़िताओं और बीमार तथा दुर्घटना ग्रस्त लोगों को मुश्किल का सामना करना पड़ता है। इसके बाद भी स्थानीय पुलिस और प्रशासन यहां के अवैध आटो स्टैंड और बेतरतीब ई रिक्शा संचालकों पर पूरी तरह से मेहरबान बना हुआ है।

डकैती सहित युवती को अगवा करने पर कोर्ट के आदेश से रिपोर्ट दर्ज

कोंच(जालौन): कोर्ट के आदेश पर कोतवाली पुलिस ने 7 लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। आरोपियों ने घर में घुसकर डकैती की घटना को अंजाम दिया था और युवती को अगवा कर ले गए थे। पुलिस द्वारा रिपोर्ट नहीं लिखे जाने के बाद युवती के चाचा ने न्यायालय का दरवाजा खटखटाया था। आरोपी कुठौंद थाना क्षेत्र के रहने वाले हैं। कोतवाली क्षेत्र के ग्राम ब्यौना निवासी रघुनंदन पुत्र उजागर ने न्यायालय में वाद दायर कर आरोप लगाया कि 8 सितंबर की दोपहर करीब एक बजे शैलेंद्र सिंह, भैयालाल, पप्पू, गोलू, शत्रुघ्न निवासीगण हुसेपुरा थाना कुठौंद व प्रमोद कुमार निवासी दौलतपुर थाना कुठौंद उसके घर में घुस आए थे और उसके माता-पिता के साथ मारपीट कर घर में रखे सामान में तोड़फोड़ की थी। इसके साथ ही अलमारी में रखी 50 हजार की नकदी तथा उसकी मां का मंगलसूत्र व अंगूठी जबरन लूट लिए थे एवं उसकी भतीजी को जबरन अपने साथ ले गए थे। कोर्ट के आदेश पर कोंच कोतवाली पुलिस ने बीएनएस की धारा 115(2), 333, 332, 324(4), 310(2) में मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है।

डीएम ने गौशाला पहुंचकर पहनाए काऊ कोट

उरई(जालौन): जिलाधिकारी राजेश कुमार पाण्डेय ने विकासखंड डकोर के ग्राम नुनसाई स्थित गौशाला का निरीक्षण कर गौवंश संरक्षण के प्रति प्रशासन की संवेदनशील प्रतिबद्धता का परिचय दिया। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने ठंड से बचाव हेतु गौवंशों को काऊ कोट पहनाए तथा स्नेहपूर्वक गुड़ खिलाकर उनके स्वास्थ्य एवं पोषण की जानकारी ली। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने गौशाला में चारा, पेयजल, साफ-सफाई एवं ठंड से बचाव की व्यवस्थाओं का जायजा लिया और संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि गौवंशों की देखभाल में किसी प्रकार की लापरवाही न हो। उन्होंने कहा कि गौवंश संरक्षण शासन की प्राथमिकताओं में शामिल है और गौशालाओं में मानकों के अनुरूप सभी व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जाएं। जिलाधिकारी ने गौशाला प्रबंधन समिति को निर्देश दिए कि नियमित निरीक्षण कर गौवंशों के स्वास्थ्य की निगरानी की जाए तथा शीतलहर के दृष्टिगत आवश्यक सभी इंतजाम समय से पूरे किए जाएं, ताकि गौवंश सुरक्षित एवं स्वस्थ रहें। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी केके सिंह, परियोजना निदेशक अखिलेश तिवारी, ग्राम कार्यक्रम अधिकारी शरद अवस्थी, ग्राम प्रधान आदि मौजूद रहे।

पोषण योजनाओं के अनुश्रवण में न बरती जाए शिथिलता

● लाभार्थी से संवाद कर लक्ष्य पूर्ति के दिए निर्देश

उरई(जालौन): जिलाधिकारी राजेश कुमार पाण्डेय ने कलेक्ट्रेट सभागार में जिला पोषण समिति/कन्वर्जेन्स विभाग की समीक्षा बैठक कर बाल विकास एवं पोषण से जुड़ी योजनाओं की गहन समीक्षा की। उन्होंने कहा कि शासन की प्राथमिकता वाली योजनाओं में किसी भी स्तर पर शिथिलता बर्दाश्त नहीं की जाएगी और सभी पात्र लाभार्थियों को समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण लाभ सुनिश्चित किया जाए। आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों द्वारा पोषण ट्रैकर पर फीडिंग, प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना, एनआरसी में बच्चों का संदर्भन, आंगनबाड़ी केंद्र भवन निर्माण, मिशन कर्मयोगी तथा आंगनवाड़ी सहायिका भर्ती प्रक्रिया की विस्तृत समीक्षा इस दौरान की गई।

पोषण ट्रैकर पर लाभार्थियों के फेस कैप्चरिंग एवं ई-केवाईसी में खराब प्रगति पाए जाने पर सीडीपीओ माधौगढ़ एवं कुठौंद को नोटिस जारी करने के निर्देश दिए गए जबकि फेस कैप्चरिंग के माध्यम से पोषाहार वितरण में लापरवाही पर सीडीपीओ कुठौंद व कदौरा को चेतावनी दी गई। जिलाधिकारी ने सभी सीडीपीओ व सुपरवाइजरों को निर्देशित किया कि वे नियमित रूप से आंगनबाड़ी केंद्रों का निरीक्षण करें और यह सुनिश्चित करें कि समस्त पात्र लाभार्थियों को बिना किसी अनियमितता के पोषाहार प्राप्त हो। प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना में लक्ष्य के सापेक्ष प्रगति कम पाए जाने पर प्रत्येक सप्ताह मॉनिटरिंग करने तथा 31 मार्च 2026 तक शत-प्रतिशत आवेदन कराने के निर्देश दिए गए। एनआरसी में दिसंबर 2025 में मात्र 9 बच्चों के भर्ती होने पर असंतोष व्यक्त करते हुए जिलाधिकारी ने निर्देशित किया कि प्रत्येक परियोजना से कम से कम 2-2 बच्चों को एनआरसी में भर्ती कराया जाए। उत्कृष्ट कार्य करने वाले जिला व ब्लॉक कोऑर्डिनेटरों को 26 जनवरी को प्रशस्ति पत्र प्रदान करने के निर्देश दिए गए। इस अवसर पर मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. देवेंद्र भिटौरिया, जिला विकास अधिकारी निशांत पांडेय, जिला पंचायती राज अधिकारी राम अयोध्या प्रसाद, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी चंद्रप्रकाश, जिला कार्यक्रम अधिकारी शरद अवस्थी सहित समस्त बाल विकास परियोजना अधिकारी, मुख्य सेविकाएं, लिपिक एवं जिला/ब्लॉक कोऑर्डिनेटर उपस्थित रहे।

स्कॉर्पियो से लाई जा रही थी अवैध शराब, 40 पेटी के साथ 4 तस्कर दबोचे

● पुलिस की सतर्कता से तस्करों की साजिश नाकाम, बुंदेलखंड में सप्लाई से पहले गिरफ्तारी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

उरई(जालौन): पुलिस ने शराब तस्करी के एक बड़े अंतरराज्यीय गिरोह का पर्दाफाश करते हुए चार शातिर तस्करों को गिरफ्तार किया है। कार्रवाई के दौरान पुलिस ने तस्करी के लिए लाई गई भारी मात्रा में मध्यप्रदेश निर्मित देशी शराब बरामद की है, जिसकी अनुमानित कीमत करीब 1 लाख 60 हजार रुपये बताई जा रही है।

पुलिस अधीक्षक डॉ दुर्गेश कुमार ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर खुलासा करते हुए बताया कि गिरफ्तार किए गए आरोपी मध्यप्रदेश में अवैध शराब का निर्माण कर उसे जालौन सहित बुंदेलखंड के विभिन्न जिलों में सप्लाई करने की योजना बना रहे थे। इसी सिलसिले में उक्त लोग शराब की खेप लेकर जालौन पहुंचे थे लेकिन इससे पहले ही पुलिस ने उन्हें धर दबोचा। यह कार्रवाई जालौन कोतवाली क्षेत्र अंतर्गत बंगरा रोड पर चलाए जा रहे चेकिंग अभियान के दौरान की गई। चेकिंग के समय पुलिस को गुजरात नंबर की एक संदिग्ध स्कॉर्पियो गाड़ी आती दिखाई दी। वाहन को रोककर तलाशी ली गई तो उसमें से मध्यप्रदेश ब्रांड की 40 पेटी अवैध देशी शराब बरामद हुई। इन पेटियों में कुल 2000 क्वार्टर शराब पाई गई। पुलिस जांच में सामने आया कि पकड़े गए चारों तस्कर मध्यप्रदेश के भिंड और दतिया जिलों के निवासी हैं। ये आरोपी लंबे समय से अवैध शराब के कारोबार में लिप्त थे और सीमा से सटे जिलों का फायदा उठाकर उत्तर प्रदेश के जालौन व आसपास के इलाकों में शराब खपाने की फिराक में थे। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि आरोपियों के खिलाफ संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया गया है और सभी को न्यायालय में पेश कर जेल भेज दिया गया है। साथ ही तस्करी में प्रयुक्त स्कॉर्पियो वाहन को भी जब्त कर लिया गया है।

मामले की गहन जांच की जा रही है ताकि यह पता लगाया जा सके कि इस नेटवर्क में और कौन-कौन लोग शामिल हैं तथा शराब कहां-कहां सप्लाई की जानी थी। पुलिस का कहना है कि जिले में अवैध शराब के खिलाफ लगातार अभियान चलाया जा रहा है। शराब तस्करी न केवल कानून व्यवस्था के लिए चुनौती है, बल्कि इससे समाज में अपराध और दुर्घटनाओं की आशंका भी बढ़ती है। ऐसे में पुलिस द्वारा की गई यह कार्रवाई शराब माफियाओं के लिए कड़ा संदेश है। पुलिस ने आम जनता से भी अपील की है कि यदि कहीं अवैध शराब का निर्माण, भंडारण या बिक्री होती दिखाई दे तो इसकी सूचना तुरंत पुलिस को दें।

बुढार स्टेडियम में सजेगा क्रिकेट का महाकुंभ

● अखिल भारतीय विधायक गोल्ड कप क्रिकेट टूर्नामेंट 13 जनवरी से, देशभर की टीमें लेंगी भाग

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

(शहडोल)। खेल प्रेमियों के लिए बुढार नगर एक बार फिर क्रिकेट के रंग में रंगने जा रहा है। नगर के स्वर्गीय कुशाभाऊ ठाकरे मैदान में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला अखिल भारतीय विधायक गोल्ड कप क्रिकेट टूर्नामेंट इस वर्ष भी पूरे शान-ओ-शौकत के साथ आयोजित किया जा रहा है। प्रतियोगिता का भव्य शुभारंभ 13 जनवरी को होगा, जबकि टूर्नामेंट का फाइनल मुकाबला 21 जनवरी को खेला जाएगा। यह प्रतिष्ठित टूर्नामेंट न केवल क्षेत्रीय बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना चुका है। हर वर्ष की तरह इस बार भी देश के विभिन्न हिस्सों से आई मजबूत और अनुभवी टीमें मैदान में अपना दमखम दिखाएंगी। आयोजन को लेकर नगर सहित आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में भी जबरदस्त उत्साह देखा जा रहा है।

युवाओं को खेलों से जोड़ने की अनूठी पहल

इस अखिल भारतीय क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन नगर की प्रतिष्ठित खेल एवं सामाजिक संस्था फ्रेंड्स स्पोर्ट्स एंड कल्चरल सोसाइटी के तत्वाधान में किया जा रहा है। आयोजकों के अनुसार टूर्नामेंट का मुख्य उद्देश्य युवाओं को खेलों के प्रति जागरूक करना, उन्हें सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ाना और स्थानीय प्रतिभाओं को एक मजबूत मंच प्रदान करना है।

संस्था का मानना है कि खेल न केवल शारीरिक विकास का माध्यम है, बल्कि यह अनुशासन, नेतृत्व क्षमता, टीम भावना और आत्मविश्वास भी विकसित करता है। इस प्रतियोगिता के माध्यम से ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के प्रतिभाशाली खिलाड़ी अपने खेल कौशल का प्रदर्शन कर आगे के बड़े मंचों तक पहुंच सकते हैं।

भव्य होगा उद्घाटन समारोह

टूर्नामेंट का उद्घाटन समारोह बेहद भव्य और यादगार बनाने की तैयारियां की जा रही हैं। उद्घाटन अवसर पर नगर एवं जिले के कई जनप्रतिनिधि, प्रशासनिक अधिकारी, खेल संघों के पदाधिकारी और बड़ी संख्या में खेल प्रेमी नागरिक मौजूद रहेंगे। स्थानीय विधायक जय सिंह मरावी के मार्गदर्शन में आयोजित होने वाला यह टूर्नामेंट शहर ही नहीं बल्कि पूरे संभाग में अपनी लोकप्रियता के लिए जाना जाता है। उद्घाटन समारोह में खिलाड़ियों का परिचय, अतिथियों का स्वागत, खेल भावना को समर्पित संदेश और सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी देखने को मिल सकती हैं।

देशभर की टीमें लेंगी भाग

आयोजन समिति के सक्रिय सदस्य अवधेश पांडे (पिंटू) ने जानकारी देते हुए बताया कि इस बार टूर्नामेंट में स्थानीय टीमों के साथ-साथ देश के कई प्रमुख क्रिकेट केंद्रों की टीमें हिस्सा लेंगी। इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाली प्रमुख टीमें निम्नलिखित शहरों से होंगी। जिसमें दिल्ली, बिलासपुर, जबलपुर, प्रयागराज, रीवा, शहडोल, अंबिकापुर, पेंड्रा, उमरिया और बुढार की टीमें शामिल है। इन टीमों में कई ऐसे खिलाड़ी शामिल हैं जो राज्य और राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर चुके हैं। इससे टूर्नामेंट का स्तर और रोमांच दोनों ही और अधिक बढ़ने की उम्मीद है।

T20 प्रारूप में होंगे मुकाबले

टूर्नामेंट का प्रारूप T20 रखा गया है, जो वर्तमान समय में क्रिकेट प्रेमियों के बीच सबसे लोकप्रिय फॉर्मेट माना जाता है। प्रतियोगिता की खास बात यह होगी कि प्रत्येक दिन एक मैच खेला जाएगा,सभी मुकाबले नॉकआउट आधार पर होंगे,हारने वाली टीम टूर्नामेंट से बाहर हो जाएगी। यह प्रारूप खिलाड़ियों में प्रतिस्पर्धात्मक भावना को बढ़ावा देता है और दर्शकों के लिए भी रोमांच से भरपूर रहता है। आयोजकों का कहना है कि इस प्रणाली से सभी टीमों को बराबर अवसर मिलेगा और हर मैच फाइनल जैसा रोमांच पैदा करेगा।

मैदान और सुविधाओं की व्यापक व्यवस्था

स्थानीय स्व. कुशाभाऊ ठाकरे मैदान को पूरी तरह से सजाया-संवारा जा रहा है। मैदान की पिच और आउटफील्ड को उच्च गुणवत्ता के अनुरूप तैयार किया जा रहा है, ताकि खिलाड़ियों को बेहतर खेल का अनुभव मिल सके। इसके साथ ही दर्शकों और खिलाड़ियों की सुविधा के लिए बैठने की समुचित व्यवस्था, पेयजल की उपलब्धता, प्राथमिक चिकित्सा सुविधा, प्रकाश व्यवस्था

स्वच्छता और साफ-सफाई

जैसी आवश्यक सुविधाएं भी सुनिश्चित की जा रही हैं। सुरक्षा व्यवस्था को लेकर प्रशासन का भी पूरा सहयोग लिया जा रहा है, ताकि आयोजन शांतिपूर्ण और सफल रूप से संपन्न हो सके।

आकर्षक पुरस्कार और सम्मान

टूर्नामेंट में शानदार प्रदर्शन करने वाली टीमों और खिलाड़ियों के लिए आकर्षक पुरस्कारों की व्यवस्था की गई है। आयोजकों के अनुसार विजेता टीम को भव्य ट्रॉफी और नकद पुरस्कार उपविजेता टीम को ट्रॉफी एवं नकद इनाम सेमीफाइनल में पहुंचने वाली टीमों को भी विशेष सम्मान प्रदान किया जाएगा।

इसके अलावा व्यक्तिगत प्रदर्शन के आधार पर मैन ऑफ द मैच,बेस्ट बैट्समैन,बेस्ट बॉलर,बेस्ट ऑलराउंडर जैसी श्रेणियों में भी खिलाड़ियों को सम्मानित किया जाएगा, जिससे खिलाड़ियों का मनोबल और अधिक बढ़ेगा।

स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी मिलेगा लाभ

इस तरह के बड़े खेल आयोजनों से केवल खेल संस्कृति ही नहीं, बल्कि स्थानीय व्यापार और अर्थव्यवस्था को भी लाभ मिलता है। टूर्नामेंट के दौरान बुढार नगर में बाहरी टीमों और दर्शकों की आवाजाही बढ़ेगी, जिससे होटल, दुकानदार, परिवहन और छोटे व्यापारियों को भी आर्थिक फायदा होगा।

खेल प्रेमियों में भारी उत्साह

टूर्नामेंट को लेकर नगर और आसपास के क्षेत्रों में जबरदस्त उत्साह का माहौल है। क्रिकेट प्रेमी लंबे समय से इस प्रतियोगिता का इंतजार कर रहे थे। आयोजन समिति ने नगरवासियों और खेल प्रेमियों से अपील की है कि वे अधिक से अधिक संख्या में स्टेडियम पहुंचकर खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करें और खेल भावना को बढ़ावा दें।

खेल से जुड़ेगा बुढार, बनेगा पहचान का केंद्र

अखिल भारतीय विधायक गोल्ड कप क्रिकेट टूर्नामेंट ने बुढार को खेल के नक्शे पर एक नई पहचान दिलाई है। यह आयोजन न केवल खिलाड़ियों को मंच देता है, बल्कि युवाओं को नशे और नकारात्मक गतिविधियों से दूर रखकर खेलों की ओर प्रेरित करता है। आने वाले दिनों में जब पहली गेंद फेंकी जाएगी और चौकों-छक्कों की गूंज स्टेडियम में सुनाई देगी, तब बुढार वास्तव में क्रिकेट के महाकुंभ का साक्षी बनेगा।

सरस्वती शिशु मंदिर/शिशु वाटिका में संपन्न हुआ सप्तशक्ति संगम कार्यक्रम

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कोंच(जालौन): अच्छे और सशक्त समाज के निर्माण के लिए स्त्री और पुरुष की समान भूमिका आवश्यक है। जब तक महिलाओं को समान अवसर और सम्मान नहीं मिलेगा, तब तक समाज का समुचित विकास संभव नहीं हो सकता। यह बात सरस्वती शिशु मंदिर/शिशु वाटिका मंडी परिसर कोंच में आयोजित सप्तशक्ति संगम कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए गीता देवी स्वर्णकार ने कही।

विद्या भारती के निर्देश पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पूर्व नगर पालिका चेयरपर्सन विनीता सीरौठिया रहीं। मुख्य वक्ता के रूप में सरस्वती बालिका विद्या मंदिर इंटर कॉलेज जालौन की प्रधानाचार्या आनंदीबाई हर्षे, जिला संयोजिका सप्तशक्ति संगम सुनीता शर्मा तथा क्षेत्रीय बालिका शिक्षा प्रमुख पूर्वी उत्तर प्रदेश अर्चना अवस्थी ने अपने विचार रखे। विशिष्ट अतिथि के रूप में संतोषी सिंह, मधु गुप्ता, कृष्णा झा, मीना गुप्ता व किरण बुधौलिया बालिका विद्या मंदिर उरई मंचासीन रहीं। विद्यालय की प्रधानाचार्या आभा तिवारी ने अतिथियों का परिचय कराया। कार्यक्रम संयोजिका साधना व निवेदिता ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। वक्ताओं ने अपने उद्बोधन में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, रानी दुर्गावती और अहिल्याबाई होल्कर के जीवन से प्रेरणा लेते हुए महिलाओं को आत्मनिर्भर और सशक्त बनने का आह्वान किया। कार्यक्रम के दौरान घरेलू जिम्मेदारियों के साथ समाज और परिवार में उल्लेखनीय योगदान देने वाली महिलाओं रेखा गिरवासिया, रन्नो देवी, राजकुमारी सोनी, नंदिनी कुशवाहा और निधि सिंघल को विद्यालय की ओर से सम्मानित किया गया। सभी उपस्थित महिलाओं का पट्टिकाएं पहनाकर स्वागत किया गया। संचालन साधना ने किया। इस दौरान अंजना, चंदा, दीक्षा, आकांक्षा, सरिता, निवेदिता, रंजना, सरला, शिवानी, वंदना, तान्या व्यास, प्रभा गुप्ता सहित अभिभावक व महिलाएं मौजूद रहीं।

ऑपरेशन कन्विक्शन में पुलिस को बड़ी सफलता, आर्म्स एक्ट मामले में आरोपी को 2 साल की सजा

उरई(जालौन): पुलिस महानिदेशक के निर्देश पर चलाए जा रहे ऑपरेशन कन्विक्शन के तहत पुलिस को बड़ी सफलता मिली है। प्रभावी विवेचना, सशक्त साक्ष्य संकलन और सटीक पैरवी के चलते एक आपराधिक मामले में आरोपी को न्यायालय से सजा दिलाई गई है। पुलिस अधीक्षक डॉ दुर्गेश कुमार के निर्देशन तथा संबंधित थाना प्रभारी, डीजीसी (क्रिमिनल) और कोर्ट पैरोकार की प्रभावी पैरवी से न्यायालय ने आरोपी को दोषी ठहराया है। मामले में न्यायालय द्वारा आरोपी को दो वर्ष का सश्रम कारावास एवं 2,000 रुपये अर्थदंड से दंडित किया गया है। पुलिस के अनुसार आरोपी फारुख खां पुत्र मुस्तफा निवासी ग्राम कुकुरगांव कोतवाली उरई के कब्जे से दुनाली बंदूक के चार जिंदा कारतूस बरामद किए गए थे। इस संबंध में 3 मार्च 2013 को कोतवाली उरई में धारा 41 भादवि एवं 3/25 आर्म्स एक्ट के अंतर्गत मुकदमा पंजीकृत किया गया था। विवेचना के दौरान वैज्ञानिक तरीके से साक्ष्य संकलित किए गए तथा गवाहों के बयान दर्ज कर दिनांक 26 अप्रैल 2013 को आरोप पत्र माननीय न्यायालय में प्रेषित किया गया। इसके बाद अभियोजन पक्ष द्वारा निरंतर प्रभावी पैरवी की गई।

सड़क चौड़ीकरण को लेकर गरजा बुलडोजर

अंबेडकर चौराहे से मंशापूर्ण मंदिर तक चला अतिक्रमण हटाओ अभियान

उरई (जालौन): शहर में सड़क चौड़ीकरण कार्य को लेकर प्रशासन का सख्त रुख देखने को मिला। जिलाधिकारी के निर्देश पर सिटी मजिस्ट्रेट के नेतृत्व में नगर पालिका और पुलिस की संयुक्त टीम ने सड़क किनारे पसारे गए अवैध अतिक्रमण पर बुलडोजर की कार्यवाही की। अतिक्रमण हटाओ अभियान के तहत सड़क और फुटपाथ पर सामान रखकर कब्जा करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की गई है। प्रशासन ने बुलडोजर की मदद से सड़क किनारे रखे सामान, अस्थायी ढांचे और दुकानों को हटाकर ध्वस्त करने में देरी नहीं की। अधिकारियों ने स्पष्ट चेतावनी दी है कि सरकारी भूमि पर दोबारा अतिक्रमण करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। यह अभियान नगरपालिका क्षेत्र में अंबेडकर चौराहे से मंशापूर्ण मंदिर तक चलाया गया है। प्रशासन की इस कार्रवाई से अतिक्रमणकारियों में हड़कंप मच गया है जबकि स्थानीय लोगों ने सड़क चौड़ीकरण और यातायात सुगमता के लिए इसे आवश्यक कदम बताया है।

मौदहा के परसदवा डेरा पहुंचे राजस्व व पीडब्ल्यूडी के अधिकारी

बीते तीन दिनों से सड़क की मांग को लेकर सड़क और बैठे हैं ग्रामीण

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हमीरपुरः- मौदहा विकास खण्ड के गऊघाट छानी से जुड़े मजरा परसदवा डेरा में संपर्क मार्ग निर्माण के लिए शुरू हुआ अनशन दूसरे दिन बुधवार को भी जारी रहा है। तीसरे दिन अनशन स्थल पर पहुंचे राजस्व एवं लोकनिर्माण विभाग के अधिकारियों ने अपने तर्क दिए लेकिन डेरा के लोगों ने निर्माण कार्य शुरू होने तक अनशन जारी रखने की बात कही है। ज्ञात हो कि मौदहा विकास खण्ड के गांव छानी गउघाट के मजरा परसदवा डेरा के लोग सड़क निर्माण की मांग को लेकर सोमवार से अनशन पर बैठे हुए हैं। इनका कहना है कि आजादी से लेकर आज तक उनके डेरा में आने जाने के लिए सड़क निर्माण नहीं कराया गया है। जिससे कि यहां के लोगों को गंभीर मुसीबतों का सामना करना पड़ता है।बारिश के दिनों में बस्ती के चारों ओर दल-दल नज़र आता है। सड़क न होने से इस डेरा का संपर्क आसपास के गांवों तथा तहसील एवं जिला मुख्यालय से पूरी तरह टूट जाता है। डेरा में आने जाने के लिए बैलगाड़ी ही एक मात्र सहारा रहता है। इस गंभीर समस्या के चलते इन्होंने दर्जनों बार उच्च अधिकारियों एवं जनप्रतिनिधियों से सड़क की मांग की है लेकिन आज तक किसी ने भी ध्यान नहीं दिया है। सड़क न होने से सबसे गंभीर समस्या बीमार लोगों और प्रशव पीड़िताओं को उठानी पड़ती है। समय से अस्पताल न पहुंचने के कारण इन्हें दुखद हादसों का शिकार होना पड़ता है। जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों के सभी दावे हवा हवाई साबित हो रहे हैं। डेरा वासियों का कहना है कि उन्होंने सड़क निर्माण की मांग को लेकर एक सप्ताह पूर्व जिला अधिकारी को ज्ञापन सौंपा था लेकिन समस्या का समाधान नहीं हुआ है। ऐसे में अनशन व धरना प्रदर्शन करना ही एक मात्र रास्ता बचा है। सड़क का निर्माण कार्य शुरू होने तक यह आंदोलन जारी रहेगा। हालांकि बुधवार को आंदोलन स्थल पर पहुंचे नायब तहसीलदार सत्यप्रकाश वर्मा और लोकनिर्माण विभाग के असिस्टेंट इंजीनियर ए के सिंह ने सड़क निर्माण से संबंधित अपने तमाम तर्क देकर अनशन कारियों को समझाते बुझाने का प्रयास किया है लेकिन अनशन कारियों का कहना है कि सड़क की मांग को लेकर उनका आंदोलन तबतक चलेगा जबतक कि निर्माण कार्य शुरू नहीं हो जाता है बुधवार को अनशन में राजेंद्र निषाद, केशना निषाद, रामकुमार पाल, रामदास, दनकू, शिवगुलाम, छोटेलाल, अरविंद, भैयालाल पाल, उदित, नारायण, रामदुलारी, मुन्नी, मनकी, रेखा, संपत, किशोरी, गयादीन, नरेश, सुनील, श्यामू, धीरज, बसंत, रामोतार, चुन्नू यादव, जगरानी, समलिया सहित लगभग दो दर्जन लोग मौजूद रहे हैं।